शिक्षक की क़लम से–वर्ष 2013

भाग–3

सफ़र अणुव्रत–संकल्पों का

अणुव्रत कहानी/नाटक संकलन)

प्रकाशक : अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

अनुक्रम

कहानी

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक /लेखिका
1.	त्यागमूर्ति	डॉ. महावीर प्रसाद जैन
2.	ढाई आखर प्रेम का	डा. अरूण कुमार वर्मा
3.	मनसा वाचा कर्मणा	राजकुमारी शर्मा
4.	मुझे जीतना है	राखी विशाल शर्मा
5.	कारवां बनता गया	डॉ. भामा अग्रवाल
6.	दो बाल्टियाँ	योगेश शर्मा
7.	अहिंसा की जीत	ए.जी. बिलवाल
8.	बदलाव	आशा महानी
9.	माँ की पीड़ा	मीना वर्मा
10.	पीर पराई जानिये	अंजना शर्मा
11.	बचपन	मधु तिप्ता
12.	उपचार	सीमा शर्मा
13.	कायाकल्प	राजकुमारी सिकरवार
14.	स्कूल में सांप	रजनीकान्त शुक्ल
15.	नीति–अनीति	पायल मोहन लाल गुप्ता
16.	मैं हूं ना	विजय लक्ष्मी जांगिड

कविता

17.	कामना	इन्द्रा बहादुर
18.	कभी करेंगे नहीं नशा	सुनीता डागर
19.	वन की पुकार	मधु गुप्ता
20.	वध करने का प्रयास न करो	मनीष कुमार चतुर्वेदी
21.	नई उमंग	रंजीत कौर
22.	आओ सूरज बन जाएं	अलका पाल
23.	अधूरी जीत	नरेन्द्र सिंह,
24.	पेड़ बोलेंगे	डॉ. अरूण कुमार वर्मा
25.	विश्व शान्ति के सैनिक हम	शिवि रस्तोगी
26.	बस चलते जाना है	स्मिथा जयाराज
27.	हमें नहीं चाहिए हिंसा	हेमलता
28.	नई सोच अपनाएंगे	अनिता लोणी
29.	देखें प्रकृति की ओर	विजयनंद भारद्वाज
30.	सुन अहिल्या!	पुष्पा अरोरा
31.	वह आम का बीज	हेमा रावत
32.	नशा नाश की जड़ भैया...	सुभाष कुमार
33.	गा संयम के गीत	निवेदिता टंडन

34.	बेटी बोली कोख से	जसविन्दर कौर
35.	रोशनियों के बावजूद अंधेरा है	रानी सोनी
36.	एकता है शक्ति हमारी	जानकी झा
37.	वक्त नहीं	राजकुमारी
38.	अब सबको जगाना है	गौरव कुमार
39.	जीना सीखो	सरिता मिगलानी
40.	स्वर्ग धरा पर लाना है	डॉ. महावीर प्रसाद जैन
41.	मौत के मत सामान चुनो	सुरेन्द्र कुमार,
42.	गुरूमंत्र	डॉ. रमेश प्रसाद द्विवेदी
43.	संघर्ष व मुक्ति	मंजू गुप्ता,
44.	क्योंकर नहीं समझता	विजया बख्शी
45.	चाह यही ...	कमला
46.	दौर	अर्पणा वोहरा
47.	रोको उन्हें जो.....	मीना वर्मा
48.	अस्तित्व	प्रतिभा शर्मा
49.	अगर चाहते हो...	अपर्णा कश्यप
50.	दहेज एक श्राप	राधा रानी राव
51.	मानवता अपना लो	मन्जु गुप्ता
52.	अणुव्रत अपनाइये	डॉ. भामा अग्रवाल
53.	गुलाब बनकर महकेगा तू	सरोज कश्यप

नाटक

54.	'एक रुप सब माँही'	राजेश शर्मा
55.	मत बांटो इन्सान को	मन्जू बख्शी
56.	पथ अहिंसा का	रीता सिंह
57.	गोरैया	डॉ. भामा अग्रवाल
58.	सजग पहरेदार	मंजुला पाटीदार
59.	मार्गदर्शन	रामेश्वर सिंह राजपुरोहित 'सेवड़'
60.	आओ हाथ बढ़ाए	शाहेदा खान
61.	मौत का बुलावा	डॉ. महावीरप्रसाद जैन
62.	लाचार बुढ़ापा	सरोजिनी नेगी
63.	कसम	गौरव कुमार

त्यागमूर्ति

मेरी बहन जब 21 वर्ष की हुई, तब मामाजी ने बहन के विचारानुकूल श्रेष्ठ परिवार के लड़के से शादी करा दी। जब बहन विदा हुई, तो मुझे अपने पिता के स्थान पर उनका फर्ज 11 वर्ष में ही निभाना पड़ा। मेरी बहन मुझे उसके पास लेकर रोती हुई कहे जा रही थी, " भैया, मात्र दो दिन तुम्हें मेरा वियोग सहना होगा, दो दिन के बाद मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी।"

वह घड़ी, वह दिन विकराल यमराज बनकर आया जब मुझ पर व्रजपात हुआ। मेरे पोषक मेरे संरक्षक, मेरे जन्मदाता का सदा–सदा के लिए मेरे ऊपर से छत्रछाया हट गई। मम्मी–पापा दोनों विवाह में सम्मिलित होने के लिये गांव गये थे। वे स्कूटर से लौट रहे थे कि तीव्र गति से आ रही बस स्कूटर से टकरा गई और मम्मी–पापा का वहीं प्राणांत हो गया।

मुझे व मेरी बहन को ये समाचार मिले तो हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ आ पड़ा। हम किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गये। मैं उस समय सात वर्ष का और बहन सत्तरह वर्ष की थी। वह विशेष समझदार थी। मैं नादान था, फिर भी यह समाचार सुनकर इतना तो समझ गया था कि अब मेरी परवरिश करने वाला कोई न रहा। मेरी इच्छाओं की पूर्ति करने वाले, वात्सल्य मूर्ति अब नहीं रहे, अब मेरा और बहन का क्या होगा ? बहन के आंसू थमे न थम रहे थे। मैं भी बहन के साथ रो रहा था। लोग बहुत सांत्वना दे रहे थे, पर कुछ विश्वास ही न होता था। अब एक ही बात मन को कचोटे जा रही थी– कहां गये मम्मी–पापा ? क्यों गये ? हमने क्या अपराध किया ?

मेरी बहन को मेरी चिंता ज्यादा थी। वह रोती हुये कहे जा रही थी, "किस तरह मैं अपने छोटेभाई को संभालूगी ? क्या करूंगी ? मैं तो इतनी बड़ी हो गई हूँ, पर मेरा भाई छोटा है, क्या होगा?" मुझे अपनी गोद में लेकर कहती, "भैया चुप हो जा, मत रो, जब तक मैं हूँ, तब तक तुझे कोई दुख न होने दूँगी।" मम्मी–पापा हमें रोता बिलखता छोड़ गये। इस तरह न जाने कितने ही विचार मन में आकर हमें रूलाए जा रहे थे। लोग समझाए जा रहे थे।

जब दोनों की अर्थी एक साथ घर से निकली, तब हमारी चीखें तेज हो गईं। लोग मुझे अर्थी के आगे पकड़ कर चल रहे थे। उपस्थित सब के नेत्रों से अश्रुधारा फूट रही थी। सबके नेत्र नम थे। माहौल अत्यधिक गमगीन था। यह स्वाभाविक भी था क्योंकि वे दोनों सबके प्रिय थे।

मेरी बहन मुझ से दस वर्ष बड़ी थी। एक भाई मुझ से बड़ा था, पर वह अल्पवय में काल का ग्रास बन चुका था। मैं उस बड़े भ्राता के वियोग के पश्चात् उत्पन्न होने से मम्मी–पापा और बहन के लिए आंखों का तारा बन गया था। मेरी परवरिश में कोई कमी न थी, परन्तु मम्मी–पापा जानते थे कि अत्यधिक लाड़ से अक्सर बच्चे बिगड़ जाया करते हैं। माता–पिता प्यार में अंधे होकर अपनी संतान की हर माँग की पूर्ति करते रहते हैं। उसे जब चाहे तब पैसा मिल जाया करता है जिससे वे आगे चलकर अनेक बुरी आदतों से ग्रस्त हो जाते हैं, जिनको छोड़ना कठिन हो जाता है। वे माता–पिता की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं, इसलिए शायद मेरी हर इच्छा कि पूर्ति नहीं की जाती थी।

मम्मी–पापा के वियोग के बाद मेरे मामा जी ने हमें अपने साथ रहने को कहा, पर मेरी बहन ने उसे स्वीकार कर दिया और कहा, '' मामाजी, आपका विचार नेक है, पर हमारे भाग्य को यह मंजूर नहीं है। यदि होता तो मम्मी–पापा ही रहते, वे क्यों चले जाते ? हम आपसे यही चाहते हैं कि आप समय–समय पर आकर हमारी खोज–खबर अवश्य कर लेना ।''मामा जी ने बहुत मनाया, पर बहन के मना करने पर मामाजी ने कहा, ''जैसा तुम्हें पसंद।''

मेरी बहन गृहकार्य में दक्ष थी, पढ़ने में अत्याधिक बुद्धिमान थी। नर्सिंग कोर्स किया था, जिसका अंतिम परिणाम आना शेष था। जब वह परिणाम आया, तब बहन के लिए नियुक्ति पत्र भी आ गया, क्योंकि पिता राजकीय चिकित्सालय में सेवारत थे परंतु बहन ने उस पद का मेरे लिए त्याग कर दिया, क्योंकि एक तो भविष्य में मुझे पिता के बजाय नौकरी मिल जाए, दूसरा यह कि वह सर्विस करेगी तो मेरा क्या होगा ? मेरी पढ़ाई, मेरे भोजन का क्या होगा ? वह कब आयेगी ? और मैं कब आऊंगा ? अभी तो भैया छोटा ही है– ऐसा विचार कर उसने मेरे लिए कितना बड़ा त्याग किया था। ऐसी त्यागी, तपस्विनी बहन को मैं कैसे भूल सकता हूं, उसके त्याग को किससे उपमा दूँ ?

मेरे न ताऊजी थे, न चाचाजी बहन ने निर्णय कर लिया कि मुझे मेरे भाई के लिए जो भी करना पड़ेगा, करूंगी पर इसे कोई कष्ट न होने दूंगी। माता –पिता जैसा प्यार देकर मैं उस कमी की कुछ पूर्ति कर सकूं। यद्यपि माता–पिता की होड़ कौन कर सकता है।

अब मेरी बहन ने मेरे साथ तीन रूपों में व्यवहार करना प्रारंभ कर दिया था। जब मां का रोल होता तो 'बेटे' पिता का रोल होता तब 'धमू' तथा बहन का रोल होता तो 'भैया' कहकर पुकारती। फटकारती। समझाती–दुलारती रहती।

मामाजी ने मेरी बहन को शादी के लिए कहा– '' अनु (अनुभूति), अब तुम्हरी ब्याह कर दें और धमू (धमेन्द्र) हमारे पास रहेगा। मेरी बहन ने सब योजनाएँ अपने दिमाग में बना रखी थीं कि मुझे कब क्या करना है। उसे ज्ञान था कि मामाजी की ओर से यह प्रस्ताव अवश्य आयेगा और मुझे उन्हें उत्तर देना है। उसी के अनुरूप मेरी बहन ने कहा, '' मामाजी ! मैं जब तक 21 वर्ष की नहीं हो जाती, तब तक ब्याह नहीं करूंगी और जब करूंगी तो इस शर्त पर कि वे मेरे साथ यहां ही रहने को तैयार हों। मामाजी ने कहा, '' भाणजी! तेरी इच्छा अनुसार ही सब कार्य होगा, तू चिन्ता न कर।''

मेरे पिता की मृत्यु के पश्चात् राजकीय बीमा आयोग से लगभग 8 लाख रूपये की राशि प्राप्त हुई थी। मेरी बहन ने चार लाख रूपये मेरे नाम पन्द्रह वर्ष के लिए स्थाई खाते में मेरे व बहन के नाम जमा कराये जिसमें लगभग 30001 रूपये का ब्याज प्राप्त होता जिससे घर खर्च निकल जाता। साथ ही बहन ने घर पर दो घंटे प्रतिदिन अपनी नर्सिंग सेवा देना तय कर लिया। उससे जो आय होती, वह राशि मेरी अच्छी तरह परवरिश तथा बचत में लगाती। हम दोनों भाई–बहन 'सादा जीवन उच्च विचार' की धारा पर चल रहे थे।

मेरी बहन जब 21 वर्ष की हुई, तब मामाजी ने बहन के विचारानुकूल श्रेष्ठ परिवार के लड़के से शादी करा दी। जब बहन विदा हुई, तो मुझे अपने पिता के स्थान पर उनका फर्ज 11 वर्ष में ही निभाना पड़ा। मेरी बहन मुझे उसके पास लेकर रोती हुई कहे जा रही थी, '' भैया, मात्र दो दिन तुम्हें मेरा वियोग सहना होगा, दो दिन के बाद मैं तुम्हारे पास आ जाऊँगी।''

मुझे दो दिन के लिए मामा जी के घर जाना पड़ा। मेरे मामा जी बहुत नेक इंसान थे। उनका आशीर्वाद, उनका संरक्षण हम पर पूरा था। मेरी मां ही उनकी एकमात्र बहन थी। इन दोनों भाई–बहनों का स्नेह ही अदभुत् था। मैं दो दिन बाद अपने घर आ गया। बहन जीजाजी भी आ गये। अब वे दोनों यहीं रहने लगे। मेरे जीजाजी मुझसे विशेष स्नेह रखते थे। वे सी.ए. थे, पर उसका अभिमान न था। अपने कर्तव्य के प्रति सजग थे।

मेरी बहन–जीजाजी ने मेरा पूरा ध्यान रखा। मुझे अच्छी शिक्षा दिलाई। मैं भी प्रति वर्ष अव्वल आता। जब में 18 का हो गया, बी.ए. द्वितीय वर्ष में अध्ययन कर रहा था, तब मैंने सोचा कि अब मुझे कुछ कार्य करना चाहिए, बहन पर भार बनकर न रहूं। अतः मैंने अपने पिताश्री के स्थान पर नौकरी पाने के लिए बहन–जीजा जी व और मामाजी से कहा। उन्होंने प्रयास कर मुझे नौकरी पर लगा दिया। मैं नौकरी के साथ पढ़ता भी रहा, इसी बीच मेरे दो भाणजे हो चुके थे। वे दोनों सुशील थे। मुझे मामाजी–मामाजी कहते अघाते न थे।

मैं 21 वर्ष का हो गया। बहन ने मेरी शादी का प्रस्ताव रख दिया। मैंने उसे स्वीकर कर लिया। मेरी शादी हो गई। मैंने मेरी धर्मपत्नी को शादी के पूर्व ही मेरी बहन के कर्तव्य का ज्ञान करा दिया था। उसके उपकार को मृत्युपर्यन्त न भूलने की बात उसे कही थी। मैंने कहा था, ''ऐसी बहन हजारों में से एक होगी। तुम्हें कभी मेरी बहन का अपमान करना तो दूर, अपमान करने का भाव भी न आवे। तुम्हें उसका पूर्ण सम्मान करना होगा, वरना अभी सोच लो ?''

तब उसने कहा था, ''जिसने आप पर इतना उपकार किया, उसने मेरे ऊपर ही उपकार किया है। उपकारी का अपमान करना तो विश्वासघात जैसा पाप है। आप स्वप्न में भी न सोचें कि मैं उनका अपमान करूं। उनकी हर आज्ञा मेरे लिए शिरोधार्य होगी। जैसे वे आपके लिए बहन–मां है, वैसे ही मेरे लिए भी।'' तब मैंने कहा था, ''अब मैं तुम्हारा हाथ थामने को तैयार हूं। ''कहकर चल दिया था।

सचमुच उसने जैसा कहा, वैसा किया भी । वह मेरी बहन और जीजाजी का पूरा सम्मान करती थी तो मेरी बहन भी अपनी भाभी का पूरा सम्मान करती। उसने कभी यह नहीं जताया कि ' मै ननद हूं और मैंने तुम्हारे पति पर कितना उपकार किया है। 'वे दोनों सगी बहनों की तरह हिल–मिलकर रहती। शादी के दो वर्ष बाद मेरे भी एक लाल उत्पन्न हुआ। उसकी खुशियां मनाईं। सब लौकिक रीति–रिवाज बहन ने अपने हाथों से सम्पन्न कराये। तत्पश्चात एक दिन बहन बोली, ''भैया, अब मैं तुमसे विदा लेना चाहती हूं। मेरा संकल्प अब पूर्ण हो गया। आप हर तरह से योग्य बन गये। तुम्हारा परिवार तैयार हो गया। अब मैं अपने ससुराल जाना चाहती हूं। उसका बस कहना था कि मुझे व श्रीमती को ऐसा लगा जैसे कि आकाश ही टूट कर सामने गिर गया हो। हम स्तब्ध रह गये। मैंने कहा, ''बहन! आपके इस भाई से क्या अपराध हुआ, जो आप यह कर रही

हो ? बहिन ने कहा, ''मेरा भाई, क्या अपराध कर सकता है ? बस मैंने जो संकल्प लिया था वह पूरा हुआ। तुम्हें भी ख्याल में आ गया कि बेटी ससुराल में ही शोभा देती है। अतः भैया! अब मुझे वहां जाना उचित ही है। मुझे वहां सास–ससुर की भी सेवा करनी है।''

बस, अब क्या था, मुझे अपनी बहन को शुभ महूर्त में विदा करना ही था। मेरी बहन के उपकारों को मैं कैसे भूल सकता था ? मेरी बहन ने तो मेरे लिए सब कुछ त्यागा था। वह पिता की सम्पत्ति के आधे भाग की हकदार तो थी पर वह भी त्याग कर दी। उस त्यागमूर्ति , तपस्विनी, परोपकारिणी, दृढ़संकल्पी मंगलमयी, बुद्धिमती बहन के ऋण को किस तरह उतारूंगा। उसका ऋण तो मैं कई जन्मों तक भी न उतार पाऊँगा।

मैंने अपनी बहन के लिए गोपनीय रूप से उसके नाम चार लाख रुपये जमा कर दिये जिसमें मेरा पूर्व में नाम था, हटवा दिया और बहन का नाम कर, वह एफ.डी. गिफ्ट की तरह पैक कर दी और कहा, ''इसे आप घर जाकर एक माह बाद ही खोलेंगे, पहले नहीं।'' मैंने बहन के लिए, भाणजे के लिए, जीजाजी के लिए बहुत सारी सामग्री खरीद ली। बहन को ज्ञान न होने दिया और सब उसे विदा के समय भेंट कर दिया। ,

बहन विदा हो रही थी, मुझे लग रहा था, आज मैं अकेला हो गया। बहन ने माता–पिता के वियोग के बाद इतने वर्षों तक साथ रहकर क्या नहीं किया उसने मेरा ?उससे जुदा होना सचमुच मेरे लिए असह्य था, पर कुछ चारा न था, क्योंकि वह अपने वादे की पक्की थी। मुझे लगा नारी कितनी त्यागमयी होती है, फिर भी आजकल कन्या के भ्रूण नष्ट कर कुछ लोग घोर पाप कर रहे हैं।

मेरी बहन को मुझे विदा करना पड़ा सो किया। मन में एक ही भावना रही, '' मेरी बहिन – जीजाजी सदा सुखी रहें। मेरे भाणजे इनकी सदा सेवा करते रहे, हमारा स्नेह कायम रहे और सबको ऐसे बहन–जीजाजी मिलें।

डॉ. महावीर प्रसाद जैन
राजकीय फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

ढाई आखर प्रेम का

हिन्दी मैम कबीर के दोहे की व्याख्या कर रही थीं। ईश्वर एक है, उसी ने सब को बनाया है, हम सब उसी की संतान हैं, उसकी नजरों में कोई ऊंच–नीच नहीं है। सभी मनुष्यों के लिए हवा, पानी, प्रकाश समान रूपों में मिलता है। यहाँ ऊंच–नीच, छोटा–बड़ा मनुष्यों की बनाई व्यवस्था है। उसके लिए सभी समान है।''

कृष्ण कुमार को सरकार ने सामाजिक क्षेत्र में विकास के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार देने की घोषणा की है। यह पुरस्कार देने की घोषणा की है। अपने नाम की घोषणा सुनकर कृष्ण कुमार का मन बचपन की यादों में खो जाता है। उनके सामने उपस्थित हो आता है गोविन्दपुर का वह स्कूल जहाँ से उन्होंने दसवीं की पढ़ाई की थी। इसी स्कूल से उनके मन में मानवीय एकता का बीज पनपा था।

उन्हें स्मरण हो आता है कक्षा आठवीं का हिन्दी का वह कालांश जिसकी अमिट छाप आज तक उनके मानस पर दर्ज है। चतुर्थ पीरियड, हिन्दी अध्यापिका मंजू सिंह 'कबीर के दोहे' का पाठ पढ़ा रही थी। कक्षा आठवीं का छात्र किशन, जिसका परिवार प्राचीन आचार–विचार की रूढियों में पला है, उसके पिता जी राज उसको शिक्षा देते रहते हैं कि ''बेटा किशन! यह नहीं भूलना कि हम सब ऊँची जाति के लोग हैं, हमारे रहन–सहन और खानपान एवं संस्कार निम्न जातियों से भिन्न है। कभी तुम उनके साथ नहीं खेलना, उनके घर जाकर खाना नहीं खाना। नहीं तो हमारी कुल मर्यादा नष्ट हो जायेगी।''

हिन्दी मैम कबीर के दोहे की व्याख्या कर रही थीं, ''ईश्वर एक है, उसी ने सब को बनाया है, हम सब उसी की संतान हैं, उसकी नजरों में कोई ऊंच–नीच नहीं है। सभी मनुष्यों के लिए हवा पानी प्रकाश समान रूपों में मिलता है। यहाँ ऊंच–नीच छोटा–बड़ा मनुष्यों की बनाई व्यवस्था है। उसके लिए सभी समान है।''

बालक किशन के मन पर इन बातों का बहुत ही गहरा असर हुआ। वह घर और स्कूल के वातावरण की तुलना करने लगा। जब मैं घर होता हूं तो मुझे अलग शिक्षा दी जाती है। मुझे सबके साथ खेलने और बातचीत की इजाजत नहीं होती है लेकिन जब मैं स्कूल में होता हूं तो वहां किसी के साथ कोई भेद–भाव नहीं होता है। स्कूल में गाँव के सभी लड़के एक साथ बैठते हैं। दोपहर को घर से लाए भोजन को एक साथ ही बैठकर खाते हैं परंतु जब घर पर होते हैं तो कक्षा के उन्ही बच्चों के साथ मुझे खेलने से मना किया जाता है। उनके घर के शादी–ब्याह या किसी कार्यक्रम में आने–जाने या खाने–पीने की अनुमति नहीं होती है। यह दोहरा व्यवहार क्यों ? यह बात सही नहीं है। कबीर की बात सही है जिसे मैम बता रही हैं। हम सब मनुष्य समान हैं। किशन इस विचार से उतावला होने लगा। उसके मन में बार–बार यह विचार घुमड़ने लगा कि समाज में व्याप्त जातीय कुरीतियों का अंत हमें करना चाहिए।

गोविन्दपुर गाँव जिला मुख्यालय से पचास किलोमीटर की दूरी पर है। शहरों में जातीय विभेद समाप्त हो चुके हैं परंतु गाँव में इसकी जड़ अभी जमी हुई है। शाम के चार बजे स्कूल की छुट्टी हुई। सारे बच्चे अपना बस्ता लादे घर की ओर निकल पड़े। जिसका घर नजदीक था वे पैदल और दूर के बच्चे साईकिल और छोटे बच्चों को स्कूल वाहन उनके घरों को छोड़ने के रवाना हो गए।

आज किशन मूड में था। उसके अंदर विचार उद्वेलित हो रहे थे कि गलत परंपराओं को नहीं मानेगा। जो सही है, सही दिखता है उसे ही मानना चाहिए। इन्हीं विचारों में मस्त वह घर पहुंचा। स्वलपाहार कर आज वह गाँव में खेलने निकल पड़ा। शहर से लौटे पं. विशम्भर दत्त ने पत्नी गौरी को आवाज दी, ''जरा पानी तो दो।'' गौरी जैसे ही पानी लेकर घर से बाहर निकली,विशम्भर दत्त ने पूछा, ''किशन कहाँ है ? स्कूल से तो आया है न?'' किशन की माँ ने उत्तर दिया, '' आया तो है। अभी स्वलपाहार किया, कमरे में पढ़ाई कर रहा होगा।''

विशम्भर दत्त शहर से आज किशन के लिए कपड़े लाए थे। उन्होंने बुलाया ''अरे किशन बेटा, बाहर तो आओ, देखो तुम्हारे लिए क्या लाया हूँ'' किशन बाहर नहीं निकला तो उसकी खोज शुरू हो गई। पता चला किय किशन बस्ती के उन बच्चों के साथ खेल रहा है जहां उसको खेलने से मना किया जाता है।

विशम्भर दत्त क्रोध से उबल पड़े। आज उनका संस्कार खतरे में पड़ गया। अब बिरादरी में इनका सम्मान कम हो जायेगा। किशन को बुलाकर उसकी खूब पिटाई की। विशम्भर दत्त बीच–बीच में चिल्ला रहे थे, ''बोल वहां जायेग, फिर से उनके साथ खेलेगा''किशन खूब रो रहा था लेकिन न हां बोल रहा थ न ही ना।

बच्चे को पीटते देख गौरी बोली, '' बस भी करो कसाई कि तरह बच्चे को पीटे जा रहे हो। जरा सा खेलने चला गया तो कौन सा भारी गुनाह कर दिया।'' छोटा है, आप जितना आचार–विचार थोड़े ही रख पायेगा।''

विशम्भर दत्त किशन को छोड़ पत्नी पर चिल्ला पड़े, ''तुम्ही ने बिगाड़ रखा है इसको, नहीं तो इसकी क्या मजाल जो इघर–उधर घूमे। ''हाँ–हाँ हमीं ने बिगाड़ रखा है।'' यह कहते गौरी किशन को लेकर अंदर चली गई।

किशन अंदर कमरे में बैठा सुबक रहा था। उसके मन में बार–बार यह विचार आ रहा था कि आखिर उनके साथ खेलने में क्या बुराई है। माना कि वे गरीब हैं, क्या गरीब होने से वे इंसान कहलाने के लायक नहीं हैं। पिताजी को कैसे समझाऊं कि वे भी हमारी तरह मनुष्य हैं। उसने मन में ठान लिया कि बड़ा होकर मैं समाज की इस बुराई को दूर करके ही रहूंगा।

समय बीतता गया। किशन अपने विचारों पर दृढ़ है। बी.ए. करके सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में वह एक गैर सरकारी संगठन में कार्य करने लगा। वहाँ रहकर वह पढ़ाई भी करता और सामाजिक उत्थान के लिए कार्य भी करता । किशन ने एम.ए. किया, पी.एच.डी. भी की और सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान भी बनाई। बाद में उसने 'उत्थान' नामक संस्था का संचालन किया जो सामाजिक उत्थान का काम करती थी।

गाँव–गाँव घूमकर लोगों को जागरूक करता रहा कि हम सभी मनुष्य एक ही हैं। जाति, गाँव, जिला, प्रदेश, देश एवं विदेश में बसने वाले सभी मनुष्य एक हैं। हमें सदैव मानवीय एकता की रक्षा के लिए आगे आना चाहिए और यह आपसी प्रेम और भाईचारे से संभव है। किशन का यह कार्य एक दिन रंग लाया। पंद्रह साल का कठिन परिश्रम राष्ट्रीय स्तर पर उसकी एक अलग पहचान बना गया। गांव का छोटा सा किशन कृष्ण कुमार बन गया और सरकार ने उसके कार्यों को देखते हुए राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए नामित किया है। बूढ़े विशम्भर दत्त यह सुनकर बहुत प्रसन्न एवं गौरवान्वित हुए और किशन पर किए गये बचपन के व्यवहारों के प्रति शर्मिंदा भी हुए।

डा. अरूण कुमार वर्मा
जवाहर सर्वोदय विद्यालय
सिरमौर, रीवा मध्य प्रदेश

मनसा वाचा कर्मणा

वर्षों तक वह कागज का टुकड़ा रामायण में ही पड़ा रहा। आज जब पिताश्री इस दुनिया में नहीं रहे, इस टुकड़े को हम और कहीं गहरे संजोकर रखना चाहते हैं। आखिर इसी टुकड़े ने विश्वास को एक ईमानदार व्यक्तित्व में बदला है। व्यवहार और व्यवसाय में सत्यनिष्ठ बनाया है। मन, वचन, कर्म से शुद्धता का अभिलाषी हुआ हूं।

संस्कारी माता–पिता की इकलौती संतान–विश्वास– मैं, लाड–प्यार के अतिरेक और शिष्टाचार की धुट्टी से पला–बढ़ा। पढ़ाई में बहुत होशियार तो नहीं था– हां–जो पढ़ता अच्छे से समझ में आ जाता था। याद करने की क्षमता भी ठीक–ठाक थी। पर कुछ भी रट नहीं सकता था। बात समझ में नहीं आई तो गाड़ी रुक जाती थी।

अंग्रेजी विषय पढ़ते समय यह परेशानी बढ़ने लगी थी। अन्य छात्र वाक्य रचना करने लगे थे तब हम शब्दों के जोड़–तोड़ में ही खप रहे थे। अचानक एक दिन अध्यापक जी की घोषणा ने हाथों के तोते ही उड़ा दिये, ''कल कक्षा परीक्षा है– निबन्ध लिखने की''

क्या करें ? मन परेशान, चेहरा बुझ गया। जीरो नम्बर आने की पूरी–पूरी संभावना थी। हम निष्प्राण हुए जा रहे थे– सोच सोच कर– मां–पिताजी क्या कहेंगे ? अभी तक सभी जगह 'शाबाश' और 'गुड' लिखा देखने की अभ्यस्त आंखें क्या प्रतिक्रिया देंगी ? कल्पना मात्र से ही दिल की धड़कन बेकाबू हो रही थी। ऐसे में चेतन ने हमें ढ़ाढस बंधाया, '' अरे यार–चिन्ता काहे को मेरे को, देख मैं डर रहा हूं क्या? नहीं न फिर तू क्यों परेशान है ? यह अंग्रेजी थोड़ी है ही मुश्किल ''। कहते–कहते वह हमारे और पास होकर बैठ गया और फुसफुसाते हुए कान में बोला, '' सुन, मैं तो घर से ही पर्चा तैयार करके लाऊंगा। कक्षा में यूं ही एक्टिंग करता रहूंगा लिखने की....घर वाला पर्चा अध्यापक को दे दूंगा.....समझे .... हा, हा, हा।''

मैं पत्ते की तरह कांपने लगा था, '' नहीं.. नहीं ... ये तो गलत है' ''चुप... क्या गलत है ? अब नहीं आता .... निबंध लिखना.....तो नहीं आता क्या करें ? अगले टैस्ट में याद कर लेंगे....अब याद करने के लिए समय भी तो नहीं है''। चेतन अपने तर्क दिये जा रहा था। हम उसके पास से उठ लिए। घर पहुंचते ही रटने बैठ गये। घोर मशक्कत के बाद भी दो–तीन पंक्तियां याद होतीं, वो भी टूटे–फूटे रूप में करें तो क्या करें.....? इसी उधेड़बुन में दिन निकल गया था। मन की बेचैनी चरम सीमा पर थी।

पिताजी के साथ बैठकर रामायण सुनना भी अच्छा नहीं लग रहा था। जैसे–जैसे संध्या बूढ़ी होती गई, हमारे मन में चेतन का सुझाव जीवान होने लगा और हम इंतजार करने लगे रात्रिकाल का जब मां–पिताजी सो जायेंगे–वे सो गये हैं.....? इत्मीनान होते ही हमने कागज–कलम उठाया, अंग्रेजी की पुस्तक से होर्स का निबन्ध हू–ब–हू उतार डाला– तुरन्त लालटेन बुझा दी और चादर में मुंह ऐसे छुपाया मानो किसी ने चोरी करते देख लिया हो।

अगले दिन–कक्षा में हमने भी लिखने की एक्टिंग की– पर्चा सर जी को वही थमाया–घर से लिखकर लाया हुआ। दो दिन बाद पर्चे चैक होकर वापिस आये। हमारे पर्चे पर लिखा था– 10/10, हम बल्लियों उछल

गये– पर तत्काल धराशायी भी हो गये। अंकों के नीचे लिखा था, प्रिय अभिभावक, आपका बच्चा नकल करना सीख रहा है। कृपया ध्यान दें। मेरे निष्प्राण होते शरीर में सर जी के शब्दों ने हलचल पैदा की, '' कल इस पर पिता जी के हस्ताक्षर करवाकर लाना''।

अब हमें कोटो तो खून नहीं, यह क्या हो गया विश्वास बेटा। स्कूल से घर का रास्ता खुद को कोसने में बीत गया। घर में घुसते ही मां से सामना हुआ। रसोईघर में रोटी बना रही थी, ''आ गया बेटा– हाथ धो– गरमागरम रोटी खा ले''। नजरे चुराते हुए हम भीतर कमरे में जा पहुंचे, बस्ता पटका। अपने किये पर घोर ग्लानि हो रही थी पर गलती के बोझ से मुक्त होना चाहते थे। तुरन्त पर्चा लेकर रसोईघर में मां के पास जा बैठे...बिना कुछ बोले पर्चा उनकी ओर कर दिया....दो पल यूं बीते मानो दो वर्ष।

तभी छननन्न करके मां का चिमटा हमारे पर्चे वाले हाथ पर पड़ा। हम दर्द से बिलबिला उठे, पहली बार मैंने मां की आंखों में इतनी तड़प देखी थी। क्रोध से बिफरती वही भीतर चली गई। मैं रोता–रोता बिस्तर पर जा पड़ा। नींद खुली तो हाथ की उंगलियों पर पिता के स्नेह–स्पर्श का अनुभव हुआ। भोला मन सोचने लगा, बस अभी कुछ ही क्षणों में पिता मां पर बरस पड़ेंगे, परनहीं वे तो अगले ही पल आंखों में निष्ठुर भाव लिये आंगन में जा बैठे और रामायण बांचने लगे। हम वहीं घुटनों में मुंह छुपाये सुबकते रहे।

रात्रि भोजन का समय भी यूं ही उदास–उदास रहा। मां ने पिताजी के सम्मुख थाली परोसी। हमारी प्लेट भी लगा दी गई थी पर हमें आवाज नहीं दी गई। हम खुद ही जाकर रसोई घर में बैठ गये। आज पिताजी ने पहला कौर हमारे मुंह में नहीं डाला–चुपचाप अपना खाना खाने लगे। हम भी बेमन से थोड़ा खाकर उठ लिये।

पिताजी के लेटते ही, हम भी बिस्तर पर पहुंच गये पर आज हमें उनकी बांहों का 'सिरहाना' भी नहीं मिला। वे दोनों हाथ बांधे आकाश निहार रहे थे, हमारी भी बोलती बन्द थी पर मन तड़प रहा था.... शायद अब शायद अब, पिता जी करवट लेकर हमारे बालों को सहलायेंगे और हमसे कुछ पूछेंगे पर नहीं वे कुछ ही देर में खर्राटे लेने लगे थे या यूं कहूं कि सोने का अभिनय कर रहे थे और हमारी आंखें अविरल आंसू बहा रही थीं। सुबकते–सुबकते हम सोचने लगे क्या नकल करना इतना बुरा होता है कि सबका प्यार तिरस्कार में बदल जाता है ? हजारों आंसुओं के उस सैलाब में हमारे मन ने हजार बार दोहराया था 'मैं कभी नकल नहीं करूंगा'।

प्रातः काल नींद टूटी आरती की गूंज से। पिताजी पूजा कर रहे हैं। मां नाश्ता बना रही है। हमने कागज का छोटा सा टुकड़ा लिया और लिखा– 'मां–पिताजी मैं कभी नकल नहीं करूंगा–मुझे क्षमा कर दो। उसे पिता जी के सम्मुख रखी आरती की थाली में रख झट स्नान करने चला गया–नहा कर भगवान जी को प्रणाम करने आया तो वहा कागज का टुकड़ा नहीं था। शायद....पिता जी ने उठा लिया था। तभी मां की आवाज आई.... विश्वास ! आओ बेटा! नाश्ता कर लो।

इस चहकती आवाज ने मन के सारे बोझ हल्के कर दिये थे। हम दौड़कर मां से लिपट गये। पिता जी ने भी हमें गोद में बैठा लिया। बालों में उंगलियां फिराते हुए बोले, ''बेटा बुराई विषबेल की तरह होती है। नकल

करना भी एक बुराई है।'' कहते–कहते अपनी थाली का पहला कौर जब उन्होंने हमारे मुंह में डाला तो हमारी आंखें फिर छलछला आईं पर ये आंसू खुशी के आंसू थे, ममता और अपनत्व का उपहार थे।

वर्षों तक वह कागज का टुकड़ा रामायण में ही पड़ा रहा। आज जब पिताश्री इस दुनिया में नहीं रहे इस टुकड़े को हम और कहीं गहरे संजोकर रखना चाहते हैं। आखिर इसी टुकड़े ने विश्वास को एक ईमानदार व्यक्तित्व में बदला है। व्यवहार और व्यवसाय में सत्यनिष्ठ बनाया है। मन, वचन, कर्म से शुद्धता का अभिलाषी हुआ हूं।

राजकुमारी शर्मा
रा.उ.मा. कन्या विद्यालय,
छत्तरपुर, दिल्ली

मुझे जीतना है

एक दिन कपिल ने दीपक को शराब पीते हुए देखा और कहा, "यह तुम्हें बरबाद कर देगी। लेकिन उल्टा दीपक कपिल को बोला, " अगर तूने किसी को कुछ बोला तो अच्छा नहीं होगा। तुम मेरे दोस्तों को नहीं जानते हो।" कपिल ने दोस्ती की खातिर कई बार समझाया पर दीपक लापरवाह रहा, उसे तो शराब व शराबी दोस्तों से लगाव हो गया।

बिस्तर पर लेटा हुआ एकटक बाहर का नजारा देखकर दीपक का मन उदास व दुःखी हो गया। उसे अपने पुराने दिन याद आने लगे। कपिल और दीपक गहरे दोस्त थे। दोनों की गहरी दोस्ती होने के कारण परिवारों की नजदीकियां भी थीं। दोनों परिवार संस्कारित, विचारवान, शिक्षित व बड़ों का सम्मान करने वाले थे। कपिल और दीपक साथ खेले, पढ़े।

कॉलेज में भी दोनों साथ ही रहे। दोस्तों की टोली भी बढ़ती गई। कपिल सीमित लोगों से ही दोस्ती रखता था। लेकिन दीपक बिना सोचे–समझे सभी से दोस्ती रखने लगा। इस उम्र में व्यक्ति अपने माता–पिता व बड़ों की समझाइश को पैर की बेड़ियां मानता है, उसका खून आजादी व मनमानी मागंता है। कितना समझाया था उसे हर बार। दीपक अपने दोस्तों के साथ एक सुंदर सी पहाड़ी पर गये। सुंदर, झरना व हरियाली, ठंड़ी–ठंड़ी हवा की बयार अद्‌भुत थी।

"दीपक, एक कश तो लगा।" सहसा दीपक को राजू ने कहा। "राजू तुम्हें पता है सिगरेट स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।" एक कश से क्या होता है।" राजू बोला।

तभी सुनील भी बोला– यार! एक कश लगाने से कुछ होता तो हमें भी बिस्तर पर होना चाहिए।

" अरे, छोड़ो दोस्तों ये अपने ग्रुप के लायक नहीं, छोटी सोच का है।" जीतू ने कहा।
राजू बोला सिगरेट पीने वाले मर्द होते हैं। तुम तो बुजदिल हो।" तभी गुस्से से दीपक बोला, "तुम क्या कहते हो, लाओ दो।"

वह पहला दिन था सिगरेट का। फिर कश पर कश और लत पड़ गई सिगरेट पीने की। अब पिकनिक तो बहाना था सिगरेट पीने का।

राजू ने एक दिन बर्थडे पार्टी दी उसी खूबसूरत पहाड़ी पर। खास दोस्त : "राजू– दीपक, आज तो तुझे पीनी ही पड़ेगी। दीपक– नहीं यार, मुझे इसमें बदबू आती है। राजू– दीपक इसे पीने में बड़ा मजा आता है। हां–हां एक घूंट दो"। सभी ने एक साथ कहा।

"जिंदगी का मजा आ जायेगा।" जबर्दस्ती सभी ने दीपक को शराब की एक छोटी सी ड्रिंक दी। उस ड्रिंक से अजीब सी फिलिंग महसूस हुई। दूसरे दिन फिर उसे वह स्वाद याद आया। अब तो चोरी–छुपे रोज छोटा–सा ड्रिंक लेता व सोचता घर पर मालूम नहीं पड़ेगा।

एक दिन कपिल ने दीपक को शराब पीते हुए देखा और कहा, ''यह तुम्हें बरबाद कर देगी। लेकिन उल्टा दीपक कपिल को बोला, '' अगर तूने किसी को कुछ बोला तो अच्छा नहीं होगा। तुम मेरे दोस्तों को नहीं जानते हो।'' कपिल ने दोस्ती की खातिर कई बार समझाया पर दीपक लापरवाह रहा, उसे तो शराब व शराबी दोस्तों से लगाव हो गया।

एक बार पिकनिक पहाड़ी के दूसरे छोर पर लगी। जहां पर एक ट्रेन निकलती है। बड़ा ही सुंदर लगता है जब हरियाली से छुक–छुक करती ट्रेन निकलती है। सभी दोस्त शराब की मदहोशी में थे। तभी राजू बोला, '' कोई मर्द जो ट्रेन के सामने दौड़ लगा सके। मैं उसे शराब की बोतल से नहला दूंगा।'' ''कोई चैलेंज दे और मैं चुप रहूं। ऐसा हो नहीं सकता था।

शराब ने दिमाग के सोचने–समझने की शक्ति खत्म कर दी थी। दोस्तों के उकसाने व शराब की मदहोशी ''मैं हूं', के सामने दौड़ लगा दी। ट्रेन अपनी रफ्तार व मैं अपनी रफ्तार से एक दूसरे की तरफ आगे बढ़ रहे थे। तनिक लड़खड़ा कर धड़ाम, फिर कुछ याद नहीं।

मैं अस्पताल में बिस्तर पर था। मेरा एक पैर ट्रेन से कट चुका था, दोस्तों में कपिल सामने खड़ा था।
मेरी आंखों में आंसू बह रहे थे, लेकिन कपिल मुझे हिम्मत दे रहा था।
''खट–खट''.....
आवाज से ध्यान भंग हुआ। ''कौन है ? दीपक ने कहा।
''मैं कपिल हूं। आवाज आई।
''कैसे हो?''– कपिल ने पूछा।
कपिल तुम्हारी बात मानी होती तो आज मैं यहां नहीं होता। मेरा जीवन, मेरा करियर सब खत्म हो गया।
''दीपक एक छोटी–सी बात से तुम झुक नहीं सकते, अपने अंदर का दीपक जलाओ। तुम बहुत बहादुर हो। उठो और पहचानो अपने आप को। दुनिया लड़ने वालों को सलाम करती है।'' तभी दीपक चिल्लाया, '' हां–हां, मैं अभी हारा नहीं हूं। शराब मुझे तोड़ नहीं सकती। अभी तो मुझे जीतना है। एक कसम खाता हूं। दोस्त, मैं कभी दुर्व्यसनों को हाथ नहीं लगाऊंगा व लोगों को बताऊंगा की दुर्व्यसनों से बहुत बुरा असर होता है। मैं जीता जागता उदाहरण हूं। मेरी वजह से अगर एक जिंदगी भी बचती है तो मेरा जीवन सफल हो जायेगा। एक गहरी शांति कमरे में छा जाती है। सूर्य की लालिमा से कमरा भरा हुआ है व दोनों दोस्त मुस्कुराते हैं।

राखी विशाल शर्मा
पिंक फ्लोवर स्कूल,
नंदानगर, इंदौर, मध्य प्रदेश

कारवां बनता गया

चूंकि हम नकल के हर दाव–पेंच बड़ी अच्छी तरह से जानते थे, इसलिए हमारी संस्था परीक्षा के दिनों में नकल रोकने के पुख्ता इंतजाम करती और नकलचियों को पकड़कर प्यार से इसके दुष्परिणाम समझाती। पढ़ाई से भागने वालों को रोचक एवं मनोरंजक तरीके से पढ़ाई में लगाव पैदा करती। अनेक परीक्षा आयोजक हमारी संस्था के सहयोग से उच्चकोटि की नकल रहित परीक्षाएं आयोजित कराने लगे।

शिक्षा के क्षेत्र में विशेष रूप से योगदान देने के कारण शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित होने के बाद रामदत्त बेहद खुश था मगर उसका अतीत चलचित्र की भांति उसकी आंखों के सामने घूम रहा था जो उसे बार–बार मलिन मुख बना रहा था। इस अवसर पर मीडिया द्वारा उसका साक्षात्कार लिया गया, जिसमें उसके जीवन, पारिवारिक स्थिति संबंधी अनेक प्रश्न पूछे गये। उनका अंतिम प्रश्न यह था कि–आपने अपने जीवन में यह लक्ष्य क्यों व कैसे निर्धारित किया एवं इस मार्ग में किन–किन बाधाओं का सामना करना पड़ा ?

तब रामदत्त ने बताया कि जीवन की असफलताओं और ठोकरों ने ही मेरे जीवन में ऐसा मोड़ ला दिया कि मैं अपनी सोच व भूलों पर पछताने को मजबूर हो गया पर हार न मानते हुए मैंने नये सिरे से फिर जीवन शुरू किया। अपने आपको संघर्ष के लिए सबल बनाकर इस राह पर निकल पड़ा और उन अंधेरों को काटने लगा, जिनमें मैं खुद भटका हूं।

पत्रकार ने पुनः कहा– ''कृपया खोलकर समझाइए।''
इस प्रश्न से उसके अतीत की परतें खुलने लगीं। उसने बताया कि मैं अपने परिवार के विषय में पहले ही बता चुका हूं। संपन्न परिवार का होने के कारण कभी भी कोई अभाव नहीं रहा। मैंने बचपन में पढ़ाई बड़ी ही लगन व मेहनत से की और हमेशा अच्छे अंक भी प्राप्त करता रहा। जब मैं कक्षा सात में पढ़ रहा था तो स्कूल से लौटते हुए एक दुर्घटना का शिकार हो गया तथा लम्बे समय तक स्कूल न जा सका। इस प्रकार मैं पढ़ाई में पिछड़ गया। मुझे स्कूल में जाने से डर लगने लगा। परिवार के समझाने पर विद्यालय तो जाने लगा पर देखते ही देखते मेरी दोस्ती कक्षा के कमजोर व शरारती बच्चों से हो गई। मैंने पढ़ाई करना बिलकुल छोड़ दिया।

हम दिन भर पढ़ने की बजाय खूब शरारत करते और परीक्षा में अच्छे अंक पाने के लिए नकल के नए–नए रास्ते खोजते। फिर नकल के हर दाव–पेंच में मैं भी माहिर होने लगा क्योंकि बिना मेहनत सरस्वती का खजाना जो हाथ लगने लगा था। अब तो हर कक्षा, हर परीक्षा में एक ही सिलसिला– नकल,नकल बस नकल।

हमारे जीवन का अब एक उद्देश्य बन गया–इधर–उधर घूमना, शरारतें करना, दोस्तों के साथ फिल्में देखना और परीक्षा के समय नकल करना और करवाना। यही शौक अब आदत बन गया। स्कूल के बाद कॉलेज में भी इसी राह पर चलता रहा।

बी.ए. द्वितीय वर्ष की परीक्षा देते समय नकल करता हुआ पकड़ा गया। मेरा केस बना दिया गया, बात घर तक पहुंच गई। पिता जी बड़े ही नाराज हुए। मैंने साफ झूठ बोला, '' पिता जी! मुझे तो मेरे प्रतिद्वंद्वी छात्र ने चालबाजी से फंसा दिया ताकि मैं उससे अच्छे अंक न ले सकूं।'' पिता जी मेरी बातों में आ गये। उन्होंने

मुझे बस इतना ही कहा, '' बेटा, तुमने नकल नहीं की होगी, ये मेरा विश्वास है। जो हुआ उसे भूल जाओ, मन में मलाल रखने से कोई लाभ नहीं। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए पढ़ाई–लिखाई में ध्यान दो।''

मेरे विश्वास दिलाने पर पिता जी ने मेरा साथ दिया और मैं ले देकर उस केस में छूट गया। अब मैं सुधरने की बजाय और भी आत्म विश्वास से नकल करने लगा। करूं भी क्यों न, एक रास्ता और जो जान गया था। मैंने इसी तरह एम.ए, एम.फिल की ताकि कॉलेज में प्रवक्ता बन सकूं। पढ़ाई पूरी हो गई, शादी हो गई तो परिवार की जिम्मेदारी कंधों पर आन पड़ी।

नौकरियों के लिए आवेदन शुरू किए मगर अब प्रतियोगी परीक्षाओं में नकल मेरा सहारा न बन सकी। मैं फेल होता गया और हिम्मत टूटने लगी। जो आत्मविश्वास कभी हम नकल करने में प्रयोग करते थे, उसका स्थान अब कुंठा ने ले लिया। छोटी से छोटी नौकरी के लिए मैं तरस गया। अंत में, घर से सहयोग मिलना भी बंद हो गया।

परिवार चलाने के लिए मजबूरन मुझे मजदूरी करनी पड़ी। इतना पढ़ा–लिखा होकर इस तरह मजदूरी करते देख सब बड़ी हिकारत से देखते। दोस्त साथ छोड़ गये। परिवार में, समाज में सब जगह यदा–कदा सुनने को मिलने लगा 'देखो नकल का पुतला! डिग्रियां लिए घूमता है पर ज्ञान के नाम पर बेकार।'

ये शब्द तीर से चुभते, पर क्या बोलता ? किसी से नजर मिलाने से भी कतराता। जीवन के अंधेरे गहराने लगे तो मन ही मन आत्महत्या की इच्छा उठती परंतु परिवार की जिम्मेदरियां और मोह बेड़ियां बनकर रोक लेते। मैं अंदर ही अंदर रोज सैंकड़ों मौतें मरता। अनेक बीमारियों ने भी घेर लिया।

समाज के ताने, मेरे अंदर की घुटन, परिवार का मोह व आत्मग्लानि ने झकझोर दिया। मुझे अपनी भूल पर बड़ा ही पछतावा हुआ तथा खुद को तलाशने की सोची। खुद ही 'सोचा जब जागे तभी सवेरा।' मैं नए जोश व नए निर्णय के साथ दोबारा मैदान में कूद पड़ा। रोजी रोटी भी कमाना जरूरी था। इस समय मुक्त विद्यालय की शरण में पहुंच दोबारा पढ़ाई शुरू की। लगन से पढ़ कर अच्छे अंकों से दसवीं व बारहवीं पास की।

कभी–कभी अपने से बहुत छोटे परीक्षार्थियों के बीच बैठते हुए बड़ी हिचकिचाहट भी होती पर लक्ष्य के ध्यान में आते ही सब काफूर हो जाती। ओपन यूनिवर्सिटी से बी.ए, एम.ए. और बी.एड. की। प्रतियोगी परीक्षाओं व सरकारी नौकरियों की आयु बहुत पीछे छूट चुकी थी। इस प्रकार मैं एक प्राइवेट स्कूल में शिक्षक लग गया।

पढ़ाई की कीमत मैं जान चुका था। दिन–रात बड़ी ही मेहनत से पढ़ता मगर बच्चों में घटता शिक्षा–प्रेम व नकल लगाव मुझे मेरे अंधेरे अतीत की याद दिलाते। यह दर्द का सैलाब मुझे पूरी तरह हिला देता। यद्धपि परिस्थतियां बदल चुकी थीं, फिर मैंने स्वयं पाताल खोदकर उसके गर्भ के समुद्र से ज्ञान का मोती निकाला था तो उसे निरर्थक कैसे जाने देता ? मैं अपनी भावी पीढ़ी को उजला आसमान देने की ठान चुका था। अब तो यह सिद्ध ही करना था।

कमजोर बच्चों को अतिरिक्त समय देकर अलग से पढ़ाता, नकल करते बच्चों को पकड़ कर उन्हें समझाता और इतना मजबूत बनाता कि नकल की जरूरत ही न पड़े। साथी अध्यापाककों से बार–बार मेरे इस कार्य के

लिए आलोचना भी मिलती तथा विरोध भी सहना पड़ता, क्योंकि उन्हें मेरे कारण यदा–कदा कड़वाहट भी झेलनी पड़ती थी। बच्चों में विकसित समर्थता, मेरी लक्ष्य–सिद्धि जहां सम्मान व आत्मविश्वास बढ़ा रही थी, वहीं सहकर्मियों की ईर्ष्या भी बढ़ा रही थी। कहते हैं कि ईर्ष्या के गर्भ से वैर का जन्म होता है।

इस प्रकार मेरी डगर फिसलन भरी होने लगी मगर मैं भी पैर जमाना सीख चुका था। मेरा अभियान विद्यालय की चारदीवारी से निकलकर समाज के आंगन में आ गया। इसमें अब मेरी ही तरह के राहगीर जुड़ते गए और देखते ही देखते कारवां बन गया। हमारे प्रयासों से हमने इसे संगठित रूप देकर संस्था बनाई तथा इसे नाम दिया– 'स्वर्णिक भविष्य निर्माण मंच।'

चूंकि हम नकल के हर दाव–पेंच बड़ी अच्छी तरह से जानते थे, इसलिए हमारी संस्था परीक्षा के दिनों में नकल रोकने के पुख्ता इंतजाम करती और नकलचियों को पकड़कर प्यार से इसके दुष्परिणाम समझाती। पढ़ाई से भागने वालों को रोचक एवं मनोरंजक तरीके से पढ़ाई में लगाव पैदा करती। अनेक परीक्षा आयोजक हमारी संस्था के सहयोग से उच्चकोटि की नकल रहित परीक्षाएं आयोजित कराने लगे।

हमारी साधना रंग लाई और राजकीय व राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता महसूस की गई। आज हमारी अनेक शाखाएं देश भर में नकल विरोधी कार्य में जुटी हैं। देश के कोने–कोने में समर्थ नागरिकों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर रही है। पत्रकार ने फिर पूछा, '' क्या इससे आपको आर्थिक लाभ मिल रहा है और संस्था–संचालन के लिए धन की व्यवस्था कैसे होती है।'' रामदत्त ने जवाब दिया, ''हम सब साथी अवैतनिक रूप से अपनी सेवाएं देते हैं, साथ ही अपनी आय का कुछ अंश भी संस्था में लगाते हैं। कभी–कभी परीक्षा आयोजकों द्वारा सहयोग राशि भी प्राप्त हो जाती है। वास्तव में नकल निरोधी कार्य से हम समाज व राष्ट्र को सबल एवं समर्थ बनाने की कोशिश में लगे हैं। अतः सबसे यथासंभव सहयोग की आशा रखते हैं। रही आर्थिक लाभ की बात तो वह हमें समर्थ नागरिकों के उज्ज्वल भविष्य व उनकी श्रद्धा को देखकर जो सच्चा सुख व आनंद मिलता है, वह गूंगे के गुड़ के समान है।

आज महामहिम ने जो यह पुरस्कार दिया है, वास्तव में यह मेरी उस ठोकर को समर्पित है, जिस मुझे संभलकर चलना सिखाया। आशा है, हमारी मुहिम में नौजवान शामिल होंगे और देश की धरोहर को अवश्य ही उजला आकाश देने में सहयोगी होंगे।'' बधाई व धन्यवाद के साथ हम पुनः अपनी राह की ओर चल पड़े।

डॉ. भामा अग्रवाल
भिवानी पब्लिक स्कूल,
सै–14 भिवानी, हरियाणा

दो बाल्टियाँ

हमारे मन में यह व्यवस्था कांटे की तरह चुभती थी। हम छुआछूत की इस सामाजिक बीमारी को घर–परिवार और समाज से बाहर निकालना चाहते थे। लेकिन गांव के पंच–पटेलों और मुखिया जी के सामने हमारी बातें आंधी में तिनके की तरह उड़ जाती थीं।

''अरे मास्टर! तेरी यह हिम्मत! तूने हमारे बच्चों को अछूतों की बाल्टी से पानी कैसे पिला दिया ? हम ऊंची जाति के हैं। वे निम्न जाति के हैं। सबको एक ही चश्में से देखता है क्या ? तेरी यह सरकारगिरि यहाँ चलने वाली नहीं है, समझा! नौकरी करनी है कि नहीं।''

बेचारा मास्टर गाँव के पंच–पटेलों के सामने हाथ जोड़े खड़ा था। ''जी–जी धाभाई जी! गलती हो गई। आगे से ध्यान रखूंगा। ''हां, यह हमारा गाँव है, यहाँ पर हमारी व्यवस्थाएं चलती हैं। सरकारी नियम चलाने की कोशिश मत कर। पढ़ाना है तो हम कहें वैसे चुपचाप काम कर वरना रस्ता नाप। हमें नहीं पढ़वाना बच्चों को।''

ऐसी स्थिति में मार्ट साब के पास दो ही विकल्प थे, या तो नौकरी छोड़े या धाभाई जी की व्यवस्था के अनुसार काम करे। उन्होंने धाभाई जी की व्यवस्था को माना। स्कूल में एक बाल्टी ऊँची जाति के लोगों के बच्चों के लिए भरवाई जाती और दूसरी बाल्टी निम्न जाति के बच्चों के लिए।

बूंदी जिले की पं. समिति तालेड़ा का गाँव गोपाल पुरा। जिस क्षेत्र में यह गाँव है, उस क्षेत्र को बरड़–क्षेत्र कहते हैं। हाड़ौती की लाल–पत्थर की पट्टियों के लिये मशहूर क्षेत्र। इस क्षेत्र का भौगोलिक स्वरूप जितना मजबूत है, सामाजिक रूढ़ियों की जड़ें भी उतनी ही अधिक मजबूती से जमी हुई हैं।

आजादी के बाद इस गाँव में सरकारी विद्यालय प्रारंभ किया गया था जिसमें केवल एक शिक्षक को पद स्थापित किया गया। बेचारा शिक्षक शिक्षा का कुछ उजास कर पाता, उसके पहले ही गांव वालों ने उसके हौंसले पस्त कर दिये। बच्चों को पढ़ाया कम, समय ज्यादा पास किया। वैसे भी गांव के लोगों को पढ़ाई से ज्यादा लेना देना नहीं था। शिक्षा के महत्व से वे अभी अनभिज्ञ थे। उनको आनन्द भी उसी में आता था। अनभिज्ञता परामानन्द है।

हमने भी बचपन में इसी स्कूल में पढ़कर आखर–ज्ञान प्राप्त किया था। पांचवीं कक्षा के बाद शहर में रिश्तेदारों के यहां रहकर जैसे–तैसे दसवीं–बारहवीं पास कर ली। हमारे गांव में अभी भी वही 'दो बाल्टी' व्यवस्था है। बच्चे उसी तरह पानी पीते हैं और शिक्षक महोदय भी उसी तरह पढ़ाते हैं।

हमारे मन में यह व्यवस्था कांटे की तरह चुभती थी। हम छुआछूत की इस सामाजिक बीमारी को घर–परिवार और समाज से बाहर निकालना चाहते थे। लेकिन गांव के पंच–पटेलों और मुखिया जी के सामने हमारी बातें आंधी में तिनके की तरह उड़ जाती थीं।

1997वें में राजस्थान सरकार के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक परियोजना प्रारंभ की गई– शिक्षा कर्मी–परियोजना। इस परियोजना का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करना था। दूर–दराज के रेगिस्तानी इलाकों, पहाड़ी–पठारी एवं जंगली क्षेत्रों के समस्याग्रस्त विद्यालयों को इस परियोजना में अधिग्रहित कर लिया गया। शिक्षकों एवं बच्चों के ठहराव को सुनिश्चित करने के लिए परियोजना का प्रमुख नियम यह था कि शिक्षाकर्मी चाहे कम पढ़ा हो लेकिन स्थानीय निवासी हो। इस नियम के तहत मेरा और मेरे साथी प्रेम का शिक्षाकर्मी (प्राथमिक शिक्षक) के लिए चयन हो गया।

हम दोनों को शिक्षाकर्म के लिए प्रशिक्षित किया गया। दोनों अपने ही गांव के इसी विद्यालय में प्राथमिक शिक्षक (शिक्षाकर्मी) बन गये। जब हम दोनों ने विद्यालय की कमान संभाली तब यहां का माहौल कुछ अलग ही प्रकार का था। गांव वालों को पढ़ाने में रूचि नहीं थी और बच्चे पढ़ना नहीं चाहते थे। पानी की व्यवस्था अब भी वही थी– दो बाल्टी पानी, पृथक–पृथक जाति–समाज के लिए।

दोनों शिक्षाकर्मियों के अथक प्रयास से स्कूल में 90 छात्र–छात्राओं का नामांकन हो गया। विद्यालय विकास समिति बनाई गई। लोगों को जागरूक किया गया परन्तु छुआछूत की जड़ें तो इतनी गहरी थीं कि ऊंची जाति के छात्र निम्न जाति के छात्रों को अपनी तरफ आने भी नहीं देते थे। बाल्टी से पानी पीना तो दूर हैण्ड पंप के 'थाले' पर भी नहीं चढ़ने देते थे।

हमने छुआछूत की इस बीमारी को पहले विद्यालय प्रांगण से और फिर गांव से बाहर भगाने की कसम खाई। दोनों ने मिलकर एक कार्य–योजना बनाई। 'छुआछूत एक सामाजिक बीमारी' इस विषय पर प्रार्थना–सत्र में कुछ न कुछ बोलना प्रारंभ किया। दोनों में कोई न कोई रोज इस विषय पर छात्रों को समझाता।

दो–तीन महीनों तक बच्चों को लगातार समझाते रहे, उनको छुआछूत मिटाने के लिए प्रेरित करते रहे। महात्मा कबीर, तुलसी, रहीम आदि संतों के दोहे, जो धार्मिक सद्भाव और छुआछूत की समस्या से संबंधित थे, बच्चों को याद करवाए। बच्चे घर पर इन दोहों को सुनाने लगे। अभिभावक इन दोहों को सुनकर प्रभावित जरूर होते लेकिन छुआछूत छोड़ने पर अपनी प्रतिक्रिया नहीं देते। वैसे प्रतिक्रिया देना इतना आसान नहीं था।

हमने व्यवहार के माध्यम से भी छात्रों को शिक्षा देने व समझाने का प्रयास किया। हम निम्न जाति के छात्रों से ही पानी भरकर मंगवाते और पीते। मध्यान्तर (रेसेज) में इन्हीं निम्न जाति के छात्रों के साथ बैठकर खाना भी खाते। धीरे–धीरे दूसरी जाति के छात्रों को भी बिठाना प्रारंभ किया। अब ऊंची जाति के छात्रों में भी व्यवहारगत परिवर्तन हो रहा था।

विद्यालय विकास समिति की बैठकों में तथा अभिभावक शिक्षिक–मीटिंग में भी हमने इस रूढ़ि को मिटाने का मुद्दा उठाया। स्वतन्त्रता दिवस एवं गणतन्त्र दिवस समारोह के अवसर पर अभिभावकों, पंचों तथा सरपंच को बुलाया। हमने सबके सामने इस सामाजिक बुराई का विरोध किया।

सरपंच जी ने भी बोलते हुए कहा, '' रूढ़ियां जब बंधन बनकर समाज पर बोझ बनने लगें, उन्नति में अवरोध पैदा होने लगे, तब उनका टूट जाना ही ठीक रहता है।'' इन अवसरों पर हमने सबको समझाया कि होटलों,

रेस्टोरेन्ट तथा जहां भी खाने–पीने की वस्तुएं मिलती हैं, हम पहले जाति नहीं पूछते। जाति पूछकर खाना नहीं खाते हैं। जाति पूछकर सामान भी नहीं खरीदते हैं।

अब अभिभावकों, गांव के पंच–पटेलों एवं मुखिया धाभाई जी को हमारी बातें कुछ समझ में आ रही थीं। वे हमसे इस मुद्दे पर बहस नहीं करते थे। अभिभावक लड़ने नहीं आते थे। उन्होंने यह समझ लिया था कि ये दोनों शिक्षक जो करेंगे हमारे भले में ही होगा।

हमने इन लोगों का विश्वास जीत लिया था। दो बाल्टियां अब भी थीं। हम दोनों बाल्टियों को छात्रों से पानी भरकर मंगवाते थे। लेकिन एक अन्तर था, हमने एक बड़ा मटका मंगवा लिया था। दोनों बाल्टियों का पानी मटके में डाल देते थे। एक ही मग से पूरे छात्र एक साथ पानी पीने लगे। ऊंच–नीच व भेदभाव के बादल अब छट चुके थे। शायद यही कह रहे हों, प्रयास तो करें सफलता मिलेगी जरूर भले ही कुछ समय लग जाए।

योगेश शर्मा
विद्याश्रम पब्लिक स्कूल,
बारां रोड़, कोटा, राजस्थान

अहिंसा की जीत

विजयोन्माद में डूबे अशोक के मन पर ये शब्द हथौड़े की चोट की तरह थे। यह युद्ध और जीत का दूसरा पक्ष था। असंख्य लोगों की हत्या कर, असंख्य परिवारों का सुख–चैन हरण कर प्राप्त की गई इस विजय पर गर्व की निरर्थकता का उसे उसी क्षण आभास हुआ। उसी क्षण उसने प्रतिज्ञा की, " अब और युद्ध नहीं। और यह सम्राट अशोक का अंतिम युद्ध साबित हुआ।

नंद वंश के अत्याचारी शासक घनानंद के अत्याचारों से पूरा मगध पीड़ित था। इसी घनानंद के साम्राज्य को नष्ट करने की प्रतिज्ञा की थी चाणक्य ने। चाणक्य की सूझबूझ तथा कूटनीति ने आखिर महान नन्द सम्राट के गर्व को चूर–चूर कर दिया। इस तरह निम्न वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला चन्द्रगुप्त मगध का शासक बना। कौटिल्य की सूझबूझ ने ही चन्द्रगुप्त मौर्य को एक सफल शासक बना दिया।

चन्द्रगुप्त के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार सिंहासन पर बैठा। कलिंग जो कि वर्तमान उड़ीसा के क्षेत्र के में स्थित था, एक छोटा सा भूभाग था किंतु अनेक प्रयासों के बाद भी सम्राट चंद्रगुप्त और उसके बाद बिन्दुसार इसे मगध साम्राज्य में शामिल नहीं कर पाये। कलिंग निवासी प्राणों की आहुति देकर भी अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए तत्पर रहते थे, अतः कलिंग अजेय बना रहा।

इस्वी सन् 273 पूर्व में बिंदुसार का पुत्र अशोक सिंहासनासीन हुआ। अशोक एक महान योद्धा था और उत्तर परिचम भारत के अनेक क्षेत्रों को, जो वर्तमान में अफगानिस्तान के भाग हैं, उसने अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया। परंतु कलिंग अभी भी अजेय था। यह महान विजेता अशोक की आंख की किरकिरी बना हुआ था।

सिंहासन पर बैठने के 12 वर्ष बाद ईस्वी पूर्व सन 261 में अशोक की सेनाओं ने कलिंग पर आक्रमण कर दिया। यह युद्ध असमान शक्तियों के बीच लड़ा जा रहा था। कलिंग के लिए यह युद्ध अस्तित्व का प्रश्न था। कलिंग के रणबांकुरे जान हथेली पर रखकर आमरण संघर्ष में लगे हुए थे। सारा कलिंग ही एक विशाल युद्ध क्षेत्र में बदल गया था।

इतिहास बताता है कि इस भीषण युद्ध में एक लाख से अधिक कलिंग सैनिक मारे गये थे और ड़ेढ़ लाख बंदी बनाए गये थे। अशोक के भी लगभग एक लाख सैनिक इस युद्व में वीरगति को प्राप्त हुए थे। यह वीरता की नहीं क्रूरता की विजय थी। कहा जाता है कि इस युद्ध में स्त्रियों ने भी अशोक की सेना के विरुद्ध संघर्ष किया था।

सम्राट अशोक ने इस युद्ध को जीत तो लिया था पर युद्ध क्षेत्र का दृश्य कारुणिक, भयावह, रोंगटे खड़े कर देने वाला था। सैनिकों के क्षत–विक्षत शव संपूर्ण युद्ध क्षेत्र में बिखरे हुए थे। जमीन खून से सनी हुई थी। बुरी तरह घायल लोग कराह रहे थे, सहायता के लिए पुकार रहे थे पर उनकी सुध लेने वाला कोई नहीं था। आकाश में गिद्ध उड़ रहे थे, लोलुप गिद्ध जिनके लिए यह क्षेत्र एक शानदार भोज का निमंत्रण था। कहा जाता है कि पास से बहने वाली दया नामक नदी का जल रक्तिम हो गया था। यह युद्ध वास्तव में खून की नदियां बहाकर ही जीता गया था।

अशोक महान की यह महानतम जीत थी। उसकी शक्तिशाली वाहिनी ने गर्वोन्नत कलिंग के सिर को सदा के लिए झुका दिया था। स्वाभाविक रूप से अशोक का सिर गर्व से ऊंचा हुआ था। जो उसके पिता और पितामह नहीं कर पाये थे, वह उसने कर दिखाया था।

एक ऊंचे स्थाने से अशोक इस महाविनाश स्थल को देख रहा था। तभी युद्ध क्षेत्र में बदहवास सी, अस्त–व्यस्त वस्त्रों वाली एक महिला पर उसकी दृष्टि पड़ी। वह प्रत्येक शव को ध्यान से देख रही थी। फिर निराशा से आगे बढ़ जाती और दूसरे शवों को देखने लगती। स्वाभाविक ही है कि सैकड़ों शवों में अपने प्रियजनों के शव को ढूंढना भूसे के ढेर में सुई ढ़ंढने जैसा ही दुष्कर था। फिर एक क्षत–विक्षत शव के पास वह बैठ गई और उसके चेहरे को ध्यान से देखने लगी। फिर एक करुण विलाप के साथ वह उससे लिपट गई।

सम्राट उत्सुकता से उसकी गतिविधियों को देख रहा था। आखिर उसने अपने सैनिकों को इशारा किया। कुछ सैनिक इसे पकड़ कर सम्राट के सम्मुख ले आए। अशोक ने कहा, ''तुम इस युद्धक्षेत्र में क्या कर रही हो ? तुम्हें डर नहीं लगता।''

महिला ने उत्तर दिया, हे महान सम्राट! मैं अपने परिजनों की मृत देहों की खोज कर रही हूं। आपकी इस विजय ने मुझसे मेरे पिता, पति और पुत्र तीनों को छीन लिया है। अब न मेरे पास कोई जीवित रहने का कारण है, न भयभीत होने का! आप चाहें तो मेरे प्राण ले सकते हैं।''

विजयोन्माद में डूबे अशोक के मन पर ये शब्द हथौड़े की चोट की तरह थे। यह युद्ध और जीत का दूसरा पक्ष था। असंख्य लोगों की हत्या कर, असंख्य परिवारों का सुख–चैन हरण कर प्राप्त की गई इस विजय पर गर्व की निरर्थकता का उसे उसी क्षण आभास हुआ। उसी क्षण उसने प्रतिज्ञा की, '' अब और युद्ध नहीं। और यह सम्राट अशोक का अंतिम युद्ध साबित हुआ।

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि इसके बाद अशोक ने कोई युद्ध नहीं किया, बल्कि आचार्य उपगुप्त से विधिवत दीक्षा लेकर उसने बौद्ध धर्म धारण कर लिया। फिर भी अशोक का विजयरथ चलता ही रहा। पर यह विजय प्रेम और अहिंसा की विजय थी।

गौतम बुद्ध ने न केवल बौद्ध धर्म का अहिंसा का संदेश विश्व के अनेक भागों में फैलाया बल्कि एक योग्य शासक बनकर अपनी प्रजा का हृदय भी जीता। सच ही है कि आज हम अशोक को कलिंग के विजेता के रूप में नहीं बल्कि सुशासक, प्रजापालक के रूप में जानते हैं। अहिंसा की विजय, हिंसा द्वारा प्राप्त विजय से कहीं ज्यादा स्थायी होती है।

ए.जी. बिलवाल
इटमा विद्या निकेतन,
इन्दौर, मध्य प्रदेश

बदलाव

इसी दौरान उनके आंगन में एक नन्हीं कली खिली। सुधा अपने कामों में व्यस्त रहती और समीर सारा समय घर पर खाली बैठा रहता। निराशा में डूबा रहने की वजह से उसने नशा करना भी शुरू कर दिया। अब इसी में उसे सुकून मिलने लगा।

सुधा और समीर एक ही कॉलेज में सहपाठी थे। सुधा हमेशा अपनी कक्षा में अव्वल आती थी। वह थी भी बला की खूबसूरत। कॉलेज के सभी लड़के उस पर मरते थे। उनकी ही कक्षा का समीर भी उस पर जान छिड़कता था।

हमेशा ही उस पर सुधा की दीवानगी का भूत चढ़ा रहता। उसे सुधा की खूबसूरती को देखकर लिखने की प्रेरणा मिलती। वह पत्रिकाओं–सामाचार पत्रों के लिए लेख, कहानियां और कविताएं लिखने लगा पर सुधा इन सब पर ध्यान न देकर हमेशा अपनी पढ़ाई में लगी रहती।

समय बीतता गया। समीर और सुधा की पढ़ाई पूरी हो गई। एक दिन सुधा अपना घर–परिवार छोड़कर अचानक समीर के घर जा पहुंची क्योंकि उसके अभिभावक उसका विवाह कहीं और कर देना चाहते थे।

सुधा ने समीर से कहा ''अगर तुम सच में मुझसे बहुत प्यार करते हो तो तुम्हें एक निर्णय लेना है, अभी और इसी वक्त तुम्हें मुझसे शादी करनी होगी।'' समीर और सुधा ने उसी दिन मंदिर में चुपचाप शादी कर ली।

जब समीर सुधा के साथ शादी के बाद घर पहुंचा तो उसकी मां ने सुधा को खरी–खोटी सुनाई और उसे घर से निकल जाने को कहा। कई दिन इस उधेड़बुन में गुजरे कि क्या किया जाये, वे घर से चले जाएं या इसी घर में रहें ? तब दोनों ने इसी घर में रहने का निर्णय लिया।

सुधा को रोज अपनी सास की जली–कटी बातें सुननी पड़ती। उन दोनों के पास कोई काम भी नहीं था, इसलिए सुधा ने नौकरी की तलाश शुरू कर दी। जल्दी ही सुधा को नौकरी मिल गई। समीर ने भी अपनी किताब अलग–अलग पत्रिका, विभागों में छपने के लिए भेजी, सभी प्रकाशकों ने उसकी किताब छापने को मना कर दिया। इससे समीर हताश हो गया।

इसी दौरान उनके आंगन में एक नन्हीं कली खिली। सुधा अपने कामों में व्यस्त रहती और समीर सारा समय घर पर खाली बैठा रहता। निराशा में डूबा रहने की वजह से उसने नशा करना भी शुरू कर दिया। अब इसी में उसे सुकून मिलने लगा।

सुधा और समीर के रिश्ते में दूरियां बढ़ने लगीं। समीर चाहता था कि सुधा उससे शिकायत करे, उससे झगड़ा करे पर सुधा किसी से कुछ न कहती। उसने तो जैसे खामोशी ओढ ली थी। सास के ताने सुनती, समीर के उलाहने सुनती, बच्ची की जिम्मेदारी, ऑफिस की परेशानियां, सब कुछ सहते–सहते सुधा जैसे पत्थर की बुत बन गई। समीर को तो यह अहसास भी न था कि जो रोटी घर में बैठकर वह खा रहा है, वह कैसे आती है। उसने तो खुद को नशे में डुबो दिया था।

एक दिन अचानक एक घटना घटी। उनकी सात साल की बच्ची रसोई में खाना गर्म करने लगी। उसने गैस ऑन कर दी और माचिस ढूंढने लग गई। जब उसने माचिस जलाई तो रसोई में आग लग गई। समीर को तो अपनी सुध न थी। बच्ची के चीखने–चिल्लाने की आवाजें सुनकर पड़ोसियों ने आकर बच्ची की जान बचाई। फायर ब्रिगेड को बुलवाया गया और जैसे–तैसे आग को काबू किया गया। सुधा को फोन पर इसकी सूचना मिली। सुधा ने बच्ची को अस्पताल में भर्ती करवाया।

अगले दिन समीर को जब होश आया तो उसे घटना का पता चला, वह बच्ची को देखने अस्पताल में पहुंचा। समीर को देखकर सुधा का गुस्सा उस पर फूट पड़ा।

उसने समीर को खूब खरी–खोटी सुनाई और कहा, ''समीर, एक निर्णय तुमने हमारी शादी के वक्त लिया था, एक निर्णय तुम्हें आज दोबारा लेना होगा। अगर तुम हमारे साथ रहना चाहते हो तो तुम्हें अपनी नशे की आदत को छोड़ना होगा, हमेशा के लिए।'' समीर की आंखों से पश्चाताप के आंसू लुढ़ग गये।

सुधा ने उसे नशा मुक्ति केन्द्र में दाखिल करवा दिया। थोड़े ही दिन में सुधा की दिन–रात की तपस्या रंग लाई। समीर और उसकी बेटी सकुशल घर लौट आए। सुधा ने समीर को एक लैपटॉप भेंट किया, उसके ट्यूशन पढ़ाने के लिए बच्चों का इन्तजाम किया। सुधा उसके लिए घर पर ही काम लाने लगी, उसे आमदनी भी होने लगी। उसके व्यवहार में बदलाव आने लगा। उसने दोबारा लिखना भी शुरू कर दिया।

समीर को यह अहसास हो चुका था कि वह कितना गलत था। उसने दिल से महसूस किया कि उसकी बीवी दुनिया की सबसे अच्छी बीवी है। तभी उसने एक शपथ ली कि मैं आज से व्यसनमुक्त जीवन जीऊंगा और हमेशा अपनी बीवी और बच्ची का ध्यान रखूंगा। सुधा समीर के इस बदले हुए व्यवहार से बेहद खुश थी।

आशा महानी
अमरावती विद्यालय,अमरावती एन्कलेव,
पंचकूला, हरियाणा

माँ की पीड़ा

जो भी उसे देखने आता, वही कहता, 'कितना समझाते थे विनोद को पर विनाशकाले, विपरीत बुद्धि। पीनी नहीं छोड़ी, यह तो होना ही था। और लोग शारदा के पास आते, मुँह लटकाकर सांत्वना भरे शब्द कहते मानो कटाक्ष कर रहे हों और शारदा असहाय पत्थर की मूर्ती बनी खड़ी रहती।

सूरज की किरणों से जिस प्रकार यह जहान रोशन होता है, उसी प्रकार शारदा के आँगन में भी उसके बच्चों ने अपनी मनमोहक बातों से, अपनी किलकारियों से उसका संसार रोशन कर रखा दिया। भरा–पूरा एक सम्पन्न परिवार, हर तरफ खुशी की लहर, समाज में मान–सम्मान प्रतिष्ठा सब कुछ था उसके पास पर अचानक उसके पति कमल की मौत के बाद मानो उसकी जिंदगी पर ग्रहण लग गया था। उसके बड़े बेटे विनोद पर परिवार की सारी जिम्मेदारी बढ़ गई। लेकिन इसके साथ–साथ उसने अपनी मेहनत से सारी बहनों की शादियाँ कर दीं। सामाजिक दायरा बढ़ा, साथ ही दोस्ती बढ़ी और साथ ही साथ शराब से भी दोस्ती हो गई। एक दिन अचानक नियति ने करवट बदली।

माँ शब्द कितना मधुर होता है, कितना संतोष मिलता है इस शब्द को सुनकर। एक माँ कभी नहीं भूलती वह दिन, जब उसका बच्चा जन्म लेता है, जब उसका बच्चा पहला कदम रखता है। माँ कभी नहीं भूलती वह दिन, जब पहली बार उसका बच्चा उसे माँ कहकर पुकारता है। पर सोचिए, उस माँ के बारे में, जिससे नियति ने क्रूर होकर ये सुनहले पल छीन लिए हों। जिसे अपने बच्चे को लाड़ करते हुए, उस पर ममता लुटाते हुए सुखद अनुभव न होता हो, बल्कि गहरी पीड़ा से गुजरना पड़ता हो। अपने बच्चे को देखकर जिसके रोम–रोम से 'आयुष्मान भव ?' का आशीर्वाद न निकलता हो बल्कि एक करुण पुकार उठती हो– 'हे प्रभु! इसके प्राणों के साथ इसके दुःखों का अंत करो। हे नियति! तेरे गर्भ में न जाने कितने दुःख और छिपे हैं, न जाने कितने दर्द और छिपे हैं।'

शारदा का रोरोकर बुरा हाल था। एक वक्त ऐसा आया कि उसके आँसू भी सुख चके थे। छः बेटियों और दो बेटों की माँ शारदा अब पूरी तरह टूट चुकी थी। लाख समझाने पर भी उसके दोनों बेटे शराब को नहीं छोड़ रहे थे। हर जतन करके वह हताश, निराश होकर, वक्त को अपने अनुकूल न पाकर, हारकर बठ नियति के फैसले का इंतजार कर रही थी।

आखिर एक दिन उसकी बड़ी बहू प्रियंका रोते–रोते आई और बोली, ''माँ, इनकी तबियत बहुत खराब है। ये ठीक से खा भी नहीं पा रहे हैं। शरीर शिथिल हुआ जा रहा है।''

शारदा का दिल सहम चुका था किसी अनहोनी की आशंका से। उसे रात भर नींद नहीं आई। अगले दिन सुबह भागदौड़ शुरू हो गई। डॉक्टर के पास गए। सारे टैस्ट करवाये गये। जब रिपोर्ट आई तो पूरा घर सहम गया। शराब पीने से विनोद का लीवर खराब हो चुका था। दोनों किडनी भी लगभग खराब हो चुकी थीं। सभी बहनें, पत्नी, माँ, बच्चे स्तब्ध खड़े शून्य में निहार रहे थे कि काश! कोई यह कह दे कि यह उन सबका वहम है।

जिस–जिस मंदिर में जाकर मत्था टेकने को कहा, वैसा–वैसा किया। बहुत से बाबाओं–गुरुओं के पास गए। यही सोचकर कि शायद किसी में लेखे को बदलने की शक्ति हो पर सब व्यर्थ। '' अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।''

बीतते समय के साथ शारदा का बेटा अपनी सांसें पूरी कर रहा था। उसकी माँ, बहनें, पत्नी, बच्चों का रो–रोकर बुरा हाल था। वह दर्द से तड़प रहा था। उसकी स्थिति देखकर शारदा तड़प उठी और मन से यही पुकार उठने लगी,– हे प्रभु, यदि यह ठीक नहीं हो सकता तो इसके प्राण हर लो। यह एक माँ की वेदना थी जो चाहकर भी अपने लाल के लिए कुछ नहीं कर पा रही थी।

जो भी उसे देखने आता, वही कहता, 'कितना समझाते थे विनोद को पर विनाशकाले, विपरीत बुद्धि। पीनी नहीं छोड़ी, यह तो होना ही था। और लोग शारदा के पास आते, मुँह लटकाकर सांत्वना भरे शब्द कहते मानो कटाक्ष कर रहे हों और शारदा असहाय पत्थर की मूर्ती बनी खड़ी रहती।

पल–पल शारदा का बेटा मौत की तरफ बढ़ रहा था। शारदा फफक–फफक कर रो रही थी। तभी उसकी एक सहेली आई, उसकी हालत देखकर गीता को बहुत धक्का लगा पर उसने उसे सांत्वना नहीं दी, उल्टे करारी डाँट पिलाई बोली, ''अब रोने से क्या फायदा ? जब नियति तेरे साथ थी तब तू उसके साथ नहीं थी। अब तू नियति की मार से जीवन हारकर बैठ गई। एक को तो तू खो चुकी है पर दूसरे को संभाल जो आज उसी राह पर चल रहा है, जिस पर चलते–चलते विनोद ने अपना अत्यंत दुःखद सफर तय किया।

शारदा गीता की बातें सुनकर फूट–फूटकर रो पड़ी। आज उसके बेटे का मृत शरीर उसकी आँखों के सामने पड़ा था। जो बच्चा उसका रोना नहीं देख सकता था, आज वह अपनी माँ के रोने की तेज आवाज सुनकर न घबराया, न रोया और न ही दौड़कर उसकी गोद में आया, तथा न ही उसके आँसू पौंछे क्योंकि आज वह चिरनिद्रा में सो चुका था हमेशा–हमेशा के लिए।

शराब ने आज फिर एक घर का चिराग बुझा दिया था। रह–रहकर शारदा के मन में एक तूफान सा उठ रहा था। काश! वह अपने बेटे के लड़खड़ाते हुए कदमों को रोक पाती। काश! वहा उसे दोबारा जिंदगी के चंद पल दे पाती। हमारे समाज में शारदा जैसी न जाने कितनी माँए हैं जो अपने घर के चिराग को अपनी ही आँखों के सामने बुझते हुए देखती हैं। आखिर कौन है इसका जिम्मेदार ? घर, परिवार या यह समाज, परिस्थिती या नियति ?

मीना वर्मा
बाल भवन पब्लिक स्कूल,
ए–ब्लाक, स्वास्थ्य विहार, दिल्ली

पीर पराई जानिये

अस्पताल से वापिस आने पर कुछ देर बाद दवाइयों का असर हुआ। बेटा ठीक दिखाई दे रहा था। मैं सुखी से आंटी की तरफ मुस्कराई। आंटी ने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, ऐसे वक्त में हम काम नहीं आयेंगे तो कौन आयेगा ? ऐसे में कभी संकोच मत करना''।

कोई भी इन्सान अपने बचपन को नहीं भुला पाता। बचपन की धुंधली यादें हमेशा मन पर हावी रहती हैं। मेरी इस कहानी की शुरूआत भी कुछ ऐसी ही यादों से शुरू होती है।

बचपन में मेरी दादी हमें भारत–पाकिस्तान के बंटवारे के किस्से सुनाती थी तो विभाजन का दुःख उनकी आंखों में आंसुओं के रूप में दिखाई देता था। इस बंटवारे से जो मानवता का नुकसान हुआ, वह सब हमें बताती थी। ये सब किस्से सुनकर मेरे मन में मुसलमानों के लिए एक नफरत का भाव आ गया जिसे मैं चाहकर भी अपने मन से नहीं निकाल पाई।

जब मैं बड़ी हुई बहुत सी किताबें पढ़ीं, तब भी यह नफरत मिट नहीं पाई। दादी के किस्सों की, हिन्दू और मुसलमानों की मारकाट की बातें आंखों के सामने घूमती थीं। जब मेरी शादी हुई तब मैं एक ऐसे मोहल्ले में गई जहां पर मुसलमानों की संख्या ज्यादा थी। मैं अपने पति, सास–ससुर के साथ रहती थी। शाम होते–होते जब खाना बनता था तब तरह–तरह की दुर्गंध आती थी। सासू जी बताती थी कि ये लोग मांसाहारी हैं, इनका खानपान अलग है।

मुझे बहुत अजीब सा लगता था कि मेरे परिवार वाले दस साल से यहां कैसे रह रहे हैं। शायद उनको आदत हो गई है। ऐसा सोचते हुए मैं अपना काम करने लगी। इतने में ही सकीना नाम की औरत मेरी सासू जी को आवाज लगाती हुई वहां पहुंची, ''अरी कुसुमा कहां है तू?'' यह कहते हुए वह मेरी सासू जी के पास पहुंच गई। उसके मुंह में पान था और कपड़ों से अजीब सी बदबू आ रही थी।

उनके जाने के बाद मैंने अपनी सासू जी से पूछा, ''यह कौन थी'' ? उन्होंने कहा, '' यह पास में ही रहती है। इसका एक ही बेटा है वो भी निकम्मा, रोज रात को पी कर आता है और अपनी पत्नी को पीटता है। बेचारी सकीना बहुत दुःखी रहती है।''

यह सब सुनकर मेरे मन की नफरत और भी बढ़ गई यह सोचते हुए कि लड़ना–झगड़ना तो इनके लिए आम बात है। मैं जब भी परेशान होती थी तब अकसर किताबें पढ़ती थी। उस दिन मैंने ऐसी किताब पढ़ी जिसमें लिखा था –
'अयम् निजः परोवेति, गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरिता नाम् तुः वसुधैव कुटुम्बकम्।
अर्थात् अपना पराया ये सब तो छोटी बुद्धि वाले सोचते हैं। उदार चरित लोगों के लिए सारी पृथवी के लोग एक परिवार की तरह होते हैं। लेकिन ऐसी बातें पढ़कर भी मेरे मन से मुसलमानों के प्रति उपजी नफरत कम नहीं हुई।

समय बदलता गया लेकिन मेरी नफरत वहीं की वहीं थी। उसमें कोई कमी नहीं आई। सकीना आंटी का बेटा कभी–कभी मेरे पति के साथ भी बातचीत करता था। जब मैं उनको साथ–साथ देखती तब मेरा डर चिन्ता में बदल जाता था कि कहीं यह इन्सान मेरे पति को भी अपने जैसा न बना दे।

जब मैंने अपने विचार अपने पति को बताए तो उन्होंने मुझे डांटा और कहा, '' अरे ये लोग बहुत अच्छे हैं।'' इतना सुनने पर भी मेरी सोच वैसी ही रही। तीन साल बाद मैंने एक बेटे को जन्म दिया। समय गुजरता गया, वह दो साल का हो गया। एक दिन उसे बहुत तेज बुखार हो गया। मेरे सास और ससुर जी तीर्थयात्रा पर गये हुए ये। पति भी काम से शहर से बाहर गये हुए थे। मैं बहुत परेशान थी। बेटे को कहां तथा किस डॉक्टर के लेकर जांऊ।

मैं ऐसा सोच ही रही थी कि सकीना आंटी आवाज लगाती हुई आई, ''अरी बेटा क्या कर रही हो'' ? मैं भागकर उनके पास पंहुची और बेटे का हाल बताया। वह तभी उसे लेकर डॉक्टर के पास पहुंची। मैं मन ही मन अपने आप को कोस रही थी यह सोचते हुए कि मैं इन्हें अब तक गलत समझ रही थी।

अस्पताल से वापिस आने पर कुछ देर बाद दवाईंयों का असर हुआ। बेटा ठीक दिखाई दे रहा था। मैं खुसी से आंटी की तरफ मुस्कराई। आंटी ने मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा, ऐसे वक्त में हम काम नहीं आयेंगे तो कौन आयेगा ? ऐसे में कभी संकोच मत करना''।

मेरी आंखों में आंसू थे। मैं बहुत खुश थी यह सोचकर कि बेटा ठीक हो रहा है लेकिन मन में एक ग्लानि का भाव भी था कि क्यों मैं इन लोगों के लिए एक गलत धारणा बनाए हुए थी। मैंने उस दिन महसूस किया कि मानवीय सद्भावना कितनी सुखद होती है और कितनी जरूरी भी। मैंने उस दिन सोच लिया था मैं किसी से भी कभी नफरत नहीं करूंगी। हमेशा याद रखूंगी और दूसरों को भी समझाऊंगी कि मानवीय धर्म सब धर्मों से ऊपर है।

अंजना शर्मा
वैश्य मॉडल सी.सै. स्कूल,
लोहारू रोड, भिवानी, हरियाणा

बचपन

नन्हीं ने पूछा, ''तुम भीख क्यों मांगती हो ?'' वो बोली, ''क्या करें दीदी, घर में मां तो है नहीं, जन्म देते ही मर गयी। बाप शराब पीकर रोज मारता है। अगर उसकी शराब के लिए पैसे नहीं जुटा पायी तो सौतेली मां खाने को कुछ नहीं देगी और घर से निकाल देगी।''

विद्यालय की व्यस्त दिनचर्या के बाद घर में कदम रखा ही था कि नन्हीं जोरो से चिल्लाती हुई आई और पैरों से लिपट गई। इससे पहले कि मैं उसके दिन भर का हाल पूछती वह जोश में बोली, ''मां जल्दी से खाना खा लो, अध्यापिका ने हमें जो परियोजना कार्य दिया है, उसमें मुझे स्ट्रीट चिल्ड्रन का इंटरव्यू लेने को कहा है।'' उसके जोश को देखकर मैं सारी थकान भूल गयी और जल्दी–जल्दी खाना खाकर उसके साथ चल पड़ी बच्चों के साक्षात्कार के लिए ।

रास्ते में मैं सोच रही थी कि यह वही नन्हीं है ना जिसने थोड़े दिन पहले ही सड़क पर भीख मांग रहे बच्चों को कुछ भी देने से मना किया था। तब तो स्पष्ट निर्देश देते हुए उसने मुझसे कहा, '' रेड लाईट पर भीख देने से आपको आर्थिक दण्ड भी भरना पड़ सकता है।''

शायद इस साक्षात्कार के बाद नन्हीं के मन में इन बच्चों के लिए कुछ सहानुभूति हो जाए, यही सोचते हुए अभी हम रेड लाइट के चौराहे पर आकर खड़े ही हुए थे कि नन्हीं की आंखें सड़क पर खड़े बच्चों में से किसी एक को तलाशने लगी जो उसके सभी प्रश्नों का जबाब दे सके और मैं एक मां उन बच्चों की आंखों में न जाने क्या–क्या पढ़ने के बाद स्वयं को किंकर्त्तव्यव विमूढ़ सा पा रही थी।

तभी नन्हीं एक छोटी सी बच्ची के पास पहुंच गयी जो उसे अपने पास आता देखकर संकोच से इधर–उधर देखने लगी। नन्हीं ने उसके हाथ में बिस्कुट का पैकेट देते हुए कहा ''क्या तुम मेरे प्रश्नों का जवाब दोगी ?'' वह कुछ सोचकर बोली, ''अगर आप उस दुकान से मुझे चाऊमीन खिलाओगी तब ही जवाब दूंगी।'' मैंने मुस्करा कर उसे चाऊमीन की एक प्लेट खरीद कर दे दी। बस अब क्या था, वह तो चाबी की गुड़िया की तरह बोलने लगी।

नन्हीं ने पूछा, ''तुम भीख क्यों मांगती हो ?'' वो बोली, ''क्या करें दीदी, घर में मां तो है नहीं, जन्म देते ही मर गयी। बाप शराब पीकर रोज मारता है। अगर उसकी शराब के लिए पैसे नहीं जुटा पायी तो सौतेली मां खाने को कुछ नहीं देगी और घर से निकाल देगी।''

नन्हीं वह सुनकर अवाक रह गयी, फिर भी हिम्मत जुटाते हुए बोली, ''दिनभर में कितने पैसे जमा कर लेती हो ?'' यही कोई साठ–सत्तर रुपये जिनमें से पच्चीस रुपए 'वर्दी वाला ले लेता है। कभी भागकर वर्दी वाले से बच गये तो पूरे हमारे।''

नन्ही ने हैरान होते हुए फिर पूछा, ''वर्दी वाला तुम्हारे पैसे क्यों छीनता है ?'' मायूस होकर उसने जबाव दिया, ' वो मुझ से ही नहीं सभी बच्चों से पैसे लेता है। नहीं तो यहां भीख मांगने ही नहीं देगा।''

नन्हीं सवाल पर सवाल किए जा रही थी और वो अपनी सारी मजबूरियां एक के बाद एक करके बताए जा रही थी। मेरे कान सुन्न हो चुके थे और शरीर ऐसा कि काटो तो खून नहीं। अचानक नन्हीं ने मुझे जोर से हिलाकर कहा, '' मां इंटरव्यू एक सुंदर सी फाइल में लगाकर अध्यापिका को देना है, चलो दुकान से फाइल भी खरीद लेते हैं।''

चलते–चलते मैं रास्ते में सोचने लगी कि एक यह बचपन है जिसे इंसान कभी भुला नहीं सकता और दूसरा वो जो मजबूरियों में कब का दम तोड़ चुका है।

फाइल लेकर जब मैं पुनः सड़क पर आयी और बच्चों को ढूंढने लगी तो देखा सारे बच्चे सड़क से गायब थे। वर्दी वाले सड़क पर खड़े थे। इससे पहले कि मैं उन बच्चों के लिए कुछ कर पाती, एक बार फिर सहानुभूति के दो आंसू के अतिरिक्त मेरे पास कुछ न था। बार–बार मन में यही प्रश्न उठ रहे थे कि क्या सच में हम बच्चों को भगवान का रूप मानते हैं ?

मधु तिप्ता
डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
सैक्टर बी, पॉकेट 1
वसंत कुंज दिल्ली

उपचार

जब चोट लगने पर प्राथमिक उपचार देना, पट्टियां बांधना, संबंधित सावधानियां बरतना आदि मैं सिखा रही थी, तब मैंने ईशान को ही अमन पर पट्टियां बांधना सिखाया। दोनों का सहयोग देखते ही बनता था, मानो उनके बीच कभी झगड़ा हुआ ही न हो।

''मैडम, जल्दी चलिये.....ईशान ने मार–मार कर अमन की बुरी हालत कर दी है।'' विद्यालय परिसर में कदम रखते ही जय ने दौड़ते–हांफते मुझे सूचना दी।

''यह स्कूल बसें भी न जाने क्यों इतनी जल्दी बच्चों को छोड़ जाती हैं ? कोई दुर्घटना हो जाए तो अभी विद्यालय में कोई देखने–पूछने वाला भी नहीं है।'' बड़बड़ाते हुए तेज कदमों से मैं वहां पहुंची तो नजारा देख कर पैरों तले जमीन सरक गई। अमन जमीन पर पड़ा कराह रहा था। सभी बच्चे ईशान को खींच–खींच कर दूर कर रहे थे और वह छूट छूट कर अनिकेत पर टूट पड़ रहा था। हाथ पकड़े तो पैरों से उसके पेट और यहां तक कि सर पर भी लातें मार रहा था।

''ईशान,रुक जाओ।'' मेरी आवाज सुनते ही वह हांफता हुआ रुक गया पर गुस्से से फड़फड़ाते होंठ लाल आंखें, क्रूरता से भरे हाव–भाव देखकर कोई भी नहीं सोच सकता था कि पांचवीं कक्षा का छात्र भी इतना आक्रमक हो सकता है ?

विद्यालय की संचालिका महोदया के सामने जब दोनों की पेशी हुई तो अमन की दशा देखते हुए उन्होंने ईशान को विद्यालय से निकाले आने की अन्तिम चेतावनी दे दी।

मेरी कक्षा में आये इन बच्चों को एक सप्ताह भी नहीं हुआ था और इनके रंग–ढंग देख मैं दंग रह गई थी। हर वर्ष मेरी कक्षा में कोई न कोई विद्यार्थी मेरे लिए विशेष चुनौती स्वरूप होता था, जिसे पूरी तरह से सुधार पाना मैं स्वतः ही अपनी जिम्मेदारी समझती थी और उसमें सफलता प्राप्त होने पर जो सुख की अनुभूति होती थी, वह चंद नोटों में प्राप्त तनख्वाह से कई गुना अधिक होती थी।

परंतु ईशान का क्या होगा ? इतना आक्रामक बच्चा, क्रोध पर कोई नियंत्रण नहीं। बल,बुद्धि, विद्या में अव्वल होते हुए भी पूरी कक्षा के लिए खतरा प्रतीत हो रहा था वह बालक। इस वर्ष की चुनौती इतनी विचित्र होगी, मैंने सोचा भी न था।

कुछ दिनों तक ईशान अपनी भूल और अन्तिम चेतावनी के डर से चुपचाप रहा परन्तु उसकी आंखों में आक्रोश का तूफ़ान उमड़ता घुमड़ता दिख ही जाता था।

यूं तो कक्षा के मॉनीटर का चुनाव हर महीने प्रजातांत्रिक रूप से होता था पर उत्सव का उसमें चुना जाना नामुमकिन से कम नहीं था। पढ़ाई में अव्वल होते हुए भी वह अपने क्रोधी स्वभाव के कारण सभी की आंखों में खटकता था।

विज्ञान के पाठ 'फर्स्ट एड' अर्थात प्राथमिक चिकित्सा पढ़ाने हुए मुझे एक युक्ति सूझी। मैंने सभी विद्यार्थियों को कक्षा के 'फर्स्टएड बॉक्स के लिए सामान लाने के बारे में पूछा। ईशान सबसे पहले उछल कर खड़ा हुआ और उसने पट्टियां, दवाइयां व रूई लाने की जिम्मेदारी ली। मुझे अपनी योजना की सफलता की झलक उसकी आंखों की चमक में दिखने लगी।

जब चोट लगने पर प्राथमिक उपचार देना, पट्टियां बांधना, संबंधित सावधानियां बरतना आदि मैं सिखा रही थी, तब मैंने ईशान को ही अमन पर पट्टियां बांधना सिखाया। दोनों का सहयोग देखते ही बनता था, मानो उनके बीच कभी झगड़ा हुआ ही न हो।

फिर क्या था, मैंने पूरी कक्षा की रजामंदी से ईशान को कक्षा का प्राथमिक चिकित्सक घोषित कर दिया, बशर्ते वह कभी किसी पर आक्रमण नहीं करें और क्रोध पर नियंत्रण करने की कोशिश करें।

अब तो पूरी कक्षा ही नहीं वरन् अन्य कक्षा के छात्र–छात्राएं भी चोट लगने पर हमारी कक्षा में दौड़े आते और ईशान जी जान से उनके उपचार में जुट जाता । फिर चमकती आंखों से खुशखबरी देने आता– ''मैडम अब पट्टियां खत्म होने वाली हैं, कल मैं और ले आऊँगा, और विजय की चोट पूरी तरह से ठीक हो गई है.....मीनू को 'ततैया' काट गया था..... दवा लगाई तो तुरन्त आराम आ गया उसे।'' एक ही सांस में, बिना रुके उसकी रिपोर्ट शुरू होती तो खत्म न होती और कब उसका क्रूर चेहरा नम्र भाव वाले मासूम बालक में बदल गया, वो खुद भी न जान पाया।

अगले महीने फिर ' मॉनीटर का चुनाव हुआ तो नतीजे से मुझे जरा भी हैरानी नहीं हुई। सबकी पर्चियों में एक ही नाम था– डॉक्टर ईशान। नतीजा सुन कर आक्रोश के तूफान वाली आंखों में आज नमी थी। मेरी भी आंखें नम हो गईं जब उसने आगे बढ़ कर मेरे चरण स्पर्श कर आशीर्वाद मांगा।

आखिर चोट देने वाला चोटों का उपचार करते–करते स्वयं मन कर्म और वचन से स्वस्थ हो चुका था।

सीमा शर्मा
बख्शीज स्प्रिंगडेल्स सी.सै. स्कूल,
बोरखेड़ा, कोटा, राजस्थान

कायाकल्प

सेठ–सेठानी उसे समझाते तब तक वह उनके हाथों से निकल चुका था। सेठ जी बहुत दुखी रहने लगे और उनकी पत्नी इसी गम में स्वर्ग सिधार गई परंतु इन सबका उस पर कोई असर नहीं हुआ। सख्ती करने पर वह चोरी करने लगा तथा दोस्तों के साथ गलत स्थानों पर भी जाने लगा। सेठ जी को रह रहकर मुनि महाराज के वचनों की याद आ रही थी। धीरे–धीरे उनका भी स्वास्थ्य गिरने लगा, फिर भी सेठ न धर्म का दामन नहीं छोड़ा।

एक सेठ और सेठानी थे। वे बड़े धार्मिक विचारों के थे। सुबह उठकर स्वाध्याय करने से उनकी दिन की शुरूआत होती थी तथा अंत भी भगवान को धन्यवाद करने से होता था। वे हमेशा समय निकल कर यदाकदा धार्मिक संस्थानों में जाया करते थे और धार्माथ हेतु शक्ति अनुसार आर्थिक मदद भी करते थे। वे बड़े मिलनसार और सहयोगी स्वभाव के थे परंतु दोनों प्राणियों के जीवन में एक खालीपन था क्योंकि सब कुछ होते हुए भी उनका जीवन एकाकी था। दोनों ही संतान न होने से बड़े दुःखी रहते थे।

एक दिन किसी धर्मस्थल पर उन्होंने मुनि महाराज के आहार देखे तो उनके मन में भी उन्हें आहार देने की इच्छा जागृत हुई। दूसरे दिन संपूर्ण विधि विधान से उन्होंने मुनि को आहार दिया और उसके बाद दोपहर को तत्व चर्चा में भी सम्मिलित हुए।

जिज्ञासा स्वरूप उन्होंने कहा, '' महाराज, अत्यंत दुखी हूं क्योंकि मुझे मेरी पत्नी को संतान सुख अब तक नहीं मिला है। मुनि ने कहा, '' आप तो बहुत सुखी हो क्योंकि प्राणी जितने कम मोह–बंधनों में लिप्त रहता है, उसे उतने ही कम बंधनों से मुक्त होना होता है।'' उत्तम अकिंचन गुण जानो, परिग्रह चिन्ता दुख ही मानो फांस तनक सी तन में साले, चाह लंगोटी की दुख भालै अर्थात जितना अधिक परिग्रह या संग्रह करने की प्रवृति रखोगे, उतना अधिक दुःखी होगे। इसलिए अपना समय परमार्थ में बिताओ। यह दैवीय गुण सभी में विद्यमान नहीं होते हैं। इसी में सुख खोजो।

इस पर भी सेठजी को संतोष नहीं हुआ। संतान के प्रति उनकी आकुलता, बढ़ती ही जा रही थी। समय का फेरा बदला, उनके धर्मार्थ और पुण्य दोनों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। खुले हाथों से उन्होंने दक्षिणा दी और पुण्यार्जन किया।

समय के साथ –साथ उनका पुत्र की बढ़ता जा रहा था। जैसे जैसे वह बढ़ता जा रहा, वैसे वैसे उसकी उदण्डता भी बढ़ती जा रही थी। दोनों ही उसकी उदण्डता को बाल सुलभ शैतानियां समझ कर नजर अंदाज करते जा रहे थे, परिणामस्वरूप वह संस्कारों की हर मर्यादा को तोड़ता जा रहा था। बुरी संगत में पड़कर वह सभी प्रकार के व्यसनों का आदी होता जा रहा था। बात–बात पर अपनी अय्याशी में पैसा उड़ना उसकी शान बन गई थी।

सेठ–सेठानी उसे समझाते तब तक वह उनके हाथों से निकल चुका था। सेठ जी बहुत दुखी रहने लगे और उनकी पत्नी इसी गम में स्वर्ग सिधार गई परंतु इन सबका उस पर कोई असर नहीं हुआ। सख्ती करने पर वह चोरी करने लगा तथा दोस्तों के साथ गलत स्थानों पर भी जाने लगा। सेठ जी को रह रहकर मुनि महाराज के वचनों की याद आ रही थी। धीरे–धीरे उनका भी स्वास्थ्य गिरने लगा, फिर भी सेठ न धर्म का दामन नहीं छोड़ा।

एक दिन अपने एक मित्र की सलाह पर सेठ जी ने अपने पुत्र को बुलाया और कहा, ''बेटा, मेरा स्वास्थ्य बिगड़ता ही जा रहा है। अतः तुम व्यवसाय को संभालने में ध्यान लगाओ अन्यथा मैं सारा धन मंदिर के ट्रस्ट को दान कर दूंगा।''

बेटे ने निर्लज्जता से कहा, ''इन सब बातों के लिए वक्त नहीं है। बाहर मेरे दोस्त इंतजार कर रहे हैं और कोई काम है तो कहो''।

सेठ जी ने फिर कहा, एक शर्त पर यह सब तुम्हारा होगा अगर तुम मुझे 30 दिन तक रोजाना धर्म चर्चा में जाने का वचन देते हो अन्यथा इसके उपरान्त सारा धन धर्मार्थ में लगा दिया जायेगा क्योंकि अपनी वसीयत मैं तैयार कर चुका हूं।''

इतना सुनते ही उनका पुत्र घबरा गया। उसने सोचा हां करने से अपार संपत्ति उसी की रहेगी तो वचन देने में क्या हर्ज है। अतः उसने अपने पिता को आश्वासन दे दिया कि वह उनकी इच्छानुसार सत्संग का अनुसरण करेगा। इस प्रकार पुत्र से वचन लेकर वह निश्चिन्त हो गया। कुछ समय बाद सेठ जी पर लोकसिधार गये।

पिता की मृत्यु के पश्चात् उसने पिता को दिये वचनानुसार सत्संग में जाना प्रारम्भ कर दिया। उसने महाराज जी से कहा, ''मैं अपने पिता की इच्छानुसार आया हूं, इसलिये आपके किसी प्रकार का कोई वचन मैं नहीं दूंगा, ना ही अपनी आदतों को बदलूंगा।'' महाराज जी शांत भाव से मुस्कुराये और बोले, ''ठीक है भाई, जो कहूंगा उसे सुनोगे तो सही और सुनने का समय न हो तो रोज एक नियम लेकर चले जाया करो।''

सेठ जी के पुत्र की खुशी का ठिकाना ही नहीं था क्योंकि एक नियम लेकर जाना था, बैठकर महाराज जी के प्रवचनों को झेलना तो नहीं पड़ेगा। उसने कहा, ''आज का नियम क्या है?

महाराज जी शात भाव से बोले, ''आज तुम्हें सच बोलना है अर्थात् किसी से झूठ नहीं कहना है।'' शाम को उसने सब मित्रों के साथ बैठकर शराब पी तथा महाराज को लूटने की योजना बनाई। इत्तफाक से उस दिन रात को राजमहल में महारानी के भाई आने वाला था। वह स्वभाव से बहुत गुस्सैल था। सभी पहरेदार रानी के भाई के स्वभाव से परिचित थे। उससे बात करने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी।

जब सेठ का पुत्र चोरी करने राजमहल पहुंचा तो पहरेदारों ने उसे रोका और इतनी रात में आने का कारण पूछने पर सब सकपका गये। तभी सेठ के पुत्र को ध्यान आया की आज झूठ नहीं बोलना है। उसने नशे में दमक कर कहा, ''मैं चोर हूं और राजमहल चोरी करने आया हूं।''इतना सुनते ही सभी पहरेदारों ने अपनी गर्दन अभिवादन में झुका ली, उन्हें लगा महारानी जी के भाई आये हैं और गुस्से में अपने आप को चोर बता रहे हैं। उन्होंने बिना कुछ कहे अंदर जाने का रास्ता दे दिया।

यह सब देख–सुनकर उसके दोस्त अचम्भित रह गये कि सच बोलकर इतनी आसानी से राजमहल में प्रवेश मिल जाता है। जैसे ही वे सब महाराजा के खजाने के पास पहुंचे, वैसे ही उन्हें महाराजा के जागने का आभास हुआ क्योंकि साले के स्वागत में राजा को नींद नहीं आ रही थी, आहट होने पर राजा ने पूछा, ''कौन है ?'' सेठ के पुत्र ने कहा, ''मैं चोर हूं, खजाने से धन चुराने आया हूं।'' राजा आश्चर्य में पड़ गया कि ऐसा चोर तो उन्होंने कभी देखा नहीं, कौतूहल वश उन्होंने पूछा, ''कहां से आये हो।'' सेठ के पुत्र ने कहा, '' मैं सेठ धर्मार्थ का पुत्र हूं।'' सेठ जी का नाम सुनकर राजा चौंक पड़ा। उसने जान लिया कि यह जाने–माने सेठ धर्मार्थ का बिगड़ा हुआ बेटा सुदर्शन है।

राजा ने कुछ नहीं कहा। सुदर्शन ने अपनी आवश्यकतानुसार धन लिया और वहां से चला गया। दोस्तों के आश्चर्य की सीमा ही, नहीं थी। सभी हक्के–बक्के से एक–दूसरे को देख रहे थे। उनके हाथ–पैर सुन्न पड़ रहे थे डर के मारे। सभी के दिलों की धड़कन तेज हो रही थी सबको अपनी मृत्यु निकट दिखाई पड़ रही थी। सब यत्रवत हो जहां था,

वहीं खड़ा रह गया। परंतु जब सुदर्शन ने चलने को कहा तो एक पल के लिए वे समझ ही नहीं पाये। चाबी के खिलौने की तरह जिस दिशा में वह ले जा रहा था, उसी दिशा की ओर वे सब बढ़ते चले गये।

दूसरे दिन सुबह सुदर्शन फिर मुनि महाराज के पास पहुंचा और बोला, ''आज का नियम क्या है ? '' उन्होंने उसे ईमानदारी से आचरण करने को कहा। इतने में राजा के सिपाही उसे ढूंढते–ढूंढते वहां पहुंच गये। राजा सेठ धमार्थ के सत्कर्मों से परिचित था तथा वह सेठ जी का बहुत आदर भी करता है, इसलिये उसने सुदर्शन से अपने खजांची बनने का आग्रह किया। सेठ के पुत्र ने ईमानदारी से अपनी सारी बुराइयों का कच्चा चिट्ठा राजा के सामने खोल दिया। फिर भी राजा को सेठ के संस्कारों पर तथा उसकी अच्छाईयों पर पूर्ण विश्वास था। अब सेठ का पुत्र राजा का खजांची बन गया था। यह खबर उसके दोस्तों ने सुनी तो उनकी खुशी का ठिकाना न था।

'सैंया भये कोतवाल, अब डर काहे को।' सबने मिलजुल कर दूसरे ही दिन खजाने को लूटने की योजना बना डाली। रोजाना मुनि की संगत में और प्रतिदिन एक नियम का पालन करने से धीरे–धीरे सेठ के पुत्र का हृदय परिवर्तित होने लगा।

रात्रि में सभी दोस्त चोरी के इरादे से उसके पास पहुंचे परंतु उसने यह कह कर टाल दिया कि आज नहीं फिर कभी। राजा यह सब छुपकर देख रहा था। उसे विश्वास हो गया की सेठ धर्मार्थ का खून उबाले मार रहा था।

इस प्रकार धीरे–धीरे उसे यह एहसास होने लगा था कि राजा का खजांची हूं। सब मुझे इतनी इज्जत देते हैं, राजा भी मुझ पर इतना विश्वास करता है, अगर मैं इन बुरी संगतों में रहूंगा तो सब लोगों का राजा पर से विश्वास उठ जायेगा।

रोजाना सत्संग में जाने से तथा प्रतिदिन एक नियम को पालने से उसकी सभी बुरी आदतें एक के बाद एक–एक कर छूटती चली गई। सत्संग ने उसे ही नहीं बदला अपितु धीरे–धीरे उसके सभी मित्र उसका अनुसरण करने लगे। उसने अनुभव किया कि सत्संग ने ही उसकी कायाकल्प कर दी थी। उसको इस बात का पछतावा होने लगा था की वह अपने माता–पिता के दुःख का कारण था। उसके माता–पिता उसके गम में प्राण त्याग चुके थे। उसका मन आत्मग्लानि से भर उठा, वह प्रायश्चित की आग में जल उठा।

यह देखकर राजा ने उसके सभी मित्रों को किसी न किसी पद पर आसीन कर दिया तथा अपनी पुत्री का विवाह सेठ के पुत्र से कर दिया। जब कोई बुरा व्यक्ति अच्छा बनता है तो वह पूर्णरूप से अपने आप को अच्छाइयों में समर्पित कर देता है।

राजकुमारी सिकरवार
लोक नायक तिलक हाई स्कूल
नीलगंगा, उज्जैन, मध्य प्रदेश

स्कूल में सांप

स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों ने जब यह घटना अपने–अपने घरों में सुनाई तो उनमें से एक के पिता ने दैनिक समाचार में घटना विस्तार से प्रकाशित की। बाद में सांप को मित्र महोदय ने जंगल में ले जाकर छोड़ दिया। एक सद्भावपूर्ण कदम से इतने सारे लोगों ने जाना कि सांप हमारे शत्रु नहीं होते बल्कि सभी प्राणी एक–दूसरे पर निर्भर हैं और महत्वपूर्ण हैं। हमें इन्हें निरपराध तंग नहीं करना चाहिए, न ही इन्हें उपेक्षित समझना चाहिए।

स्कूल में प्रार्थना के बाद कक्षाएं शांतिपूर्वक चल रही थी, अचानक टीनशेड में लगी तीसरी कक्षा से शोर की आवाजें आने लगीं। घबराई हुई कक्षाध्यापिका ने शोर सुनकर आने वाली प्रधानाचार्या व स्काउट अध्यापिक को कक्षा में अंदर की ओर इशारा करते हुए बड़ी मुश्किल से बताया– सांप..... अंदर सांप है।

कक्षा में सभी बच्चे अभी अंदर ही बैठे थे। उसमें प्रवेश और निकास का एक ही द्वार था। इसी दरवाजे के ऊपर टीन की चादर और दीवार के बीच की जगह में सांप महाशय कुण्डली मारे विराजमान थे। पहली समस्या सभी बच्चों को सुरक्षित बाहर निकालने की थी। अध्यापक ने अंदर पहुंच कर देखा–यह एक पीले रंग का काली चित्ती वाला सांप था जिसका मुंह उसकी कुण्डली के बीच छिपा था।

उन्हें पता था कि अधिकतर सांप जहरीले नहीं होते हैं लेकिन सांप का भय बुरा होता है। अब उन्होंने सभी बच्चों को अपनी चप्पल, बस्ते, टाटपट्टी आदि को जैसे का तैसा वहीं छोड़कर चुपचाप बाहर निकलने को कहा। धीरे–धीरे बाकी सारा सामान भी बाहर निकाल लिया गया। ''अब क्या होगा?'' कक्षा के बाहर घेरा लगाए बच्चों, अध्यापक–अध्यापिकाओं के मन में यही प्रश्न चक्कर काटने लगा। सांप अभी भी वहीं था।

अब तो दो ही बातें हो सकती थीं, या तो सांप को भगा दिया जाये या उसके भागने का इंतजार किया जाए। लेकिन इस बात की क्या गारंटी कि अगली बार सांप किसी बच्चे को न काट ले। मान लो दौड़ते–भागते किसी बच्चे का घास में सांप पर पैर पड़ जाए तो क्या सांप को मार देना चाहिए ? नहीं.....नहीं, आखिर इसका अपराध क्या है ? ईश्वर की इस सृष्टि में सभी प्राणियों को रहने का अधिकार है। हम इसे मारेंगे नहीं। तो फिर प्रश्न वहीं का वहीं आ गया।

तभी किसी ने सुझाव दिया–किसी सपेरे को बुलवा कर पकड़वा दो। ''हां....बिलकुल, यह ठीक रहेगा।'' अध्यापक को अपने एक पशु प्रेमी मित्र की याद आयी।
''क्या हुआ, क्या है, बताइएंगे आप ?'' वे बोले।
''हां हमारे स्कूल में सांप आ गया है जो कक्षा में बैठा है। बच्चे कक्षा से बाहर हैं।'' अध्यापक ने व्यग्रता से कहा।
''ठीक है, आप सांप पर नजर रखिए मैं तुरन्त अभी आता हूं।'' मित्र, ने आश्वासन दिया।

लगभग दस–पन्द्रह मिनट के बाद ही वे बाइक पर अपनी पत्नी के साथ आ गये। बाइक को खडा कर नजदीक आते हुए उन्होंने उत्सुकता से पूछा '' कहां है सांप ? अभी है क्या! भागा तो नहीं ? '' अध्यापक उन्हें लेकर कक्षा की ओर मुड़े। देखा, सांप अभी भी वहीं बैठा था। उसे देखकर जान में जान आयी। अब शुरू हुआ– आपरेशन गिरफ्त''।

वे अपने साथ तकिए के दो खोल लाऐ थे। जल्दी ही दरवाजे के साथ एक मेज लगाकर उस पर चढ़कर उन्होंने सावधानी से सांप को बीच से पकड़ लिया। सांप ने जैसे ही अपने शरीर से छेड़छाड़ महसूस की, वह वहां से भागने की तैयारी करने लगा। अब स्थिति यह थी कि सांप अपने आप को अंदर की तरफ खींच रहा था और मित्र महोदय

बाहर की ओर। काफी देर की जद्दोजहद के बाद जब सांप ने अपना मुंह दूसरी ओर से बाहर निकाला तो उन्होंने उसे मुंह के पास से व दूसरे हाथ से पूंछ के ऊपर पकड़ लिया ।

अपने इस प्रयास में वे पूरी कोशिश इस बात की कर रहे थे कि सांप को कोई कष्ट न हो। बच्चे, अध्यापक–अध्यापिकाएं सांस रोके इस दृश्य को देख रहे थे। अब सांप का मुंह भी दिखाई दे रहा था, जो काले रंग का सुन्दर किन्तु डरावना था।

उन्होंने अध्यापक और अपनी पत्नी की सहायता से उसे पिलो कवर में डालकर गांठ बांधी और उसे फिर दूसरे पिलो कवर में डाल लिया। अब वे चलने लगे तो उन्हें रोका गया कि थोड़ा विश्राम करके जांए।

सारे बच्चे घेरा लगाए उन्हें ऐसे देख रहे थे मानो कोई अजूबा हो। मारे उत्सुकता के जब नहीं रहा गया तो एक बच्चे ने आखिरकार पूछ लिया, ''अंकल! क्या आपको मंतर आता है? ''अरे नहीं।'' वे ठठा मार कर हंस दिए।

''मुझे भी लगा था कि आप किसी परिचित सपेरे को बुलाएंगे। आपने तो सांप को स्वयं पकड़ लिया। यह मेरे लिए भी हैरान कर देने वाली बात थी।'' परिचित अध्यापक ने कहा।

वे बोले, '' सांप पकड़ना मैंने किसी से सीखा था, थोड़ा बहुत अभ्यास से आ गया। वैसे यह सांप ज्यादा जहरीला नहीं है लेकिन काट तो सकता ही था। सर्वाधिक जहरीला सांप समुद्री सांप और रेगिस्तानी सांप होता है। हमारे देश में पाए जाने वाले सांपों में ब्लैक कोबरा, जिसे नाग कहते हैं, सर्वाधिक जहरीला होता है। जितना हम सांपों से डरते हैं उतना ही ये हमसे भी डरते हैं। सांप हमारे मित्र भी होते हैं।''

''वह कैसे ? '' बड़ी उत्सुकता से उनकी बातें सुन रहे बच्चों में से एक ने पूछा। ''सांप चूहों को खाते हैं। उन चूहों को जो हमारा ढेर सारा अनाज खा जाते हैं और दूसरे सांपों के जहर से बेशकीमती दवाइयां बनती हैं जिनसे मनुष्य के प्राणों की रक्षा होती है''। इस तरह की ढेरों जानकारियां देकर और स्वयं को वहां बुलाने के लिए धन्यवाद देकर वे चले गये।

स्कूल से निकलकर उन्होंने अपनी मोटर साइकिल का रुख सपेरों की बस्ती की ओर कर दिया। ''इसे कल सुबह आकर ले लूंगा'' कहकर उसने सांप को एक संपेरे के हवाले कर दिया।

अगले दिन राजधानी के इंडिण्या हैबीटेट सेंटर में अंतर्राष्ट्रीय सर्प विशेषज्ञ आने वाले थे। वहां प्रिंट और इलैक्ट्रानिक मीडिया से जुड़े लोगों के बीच वह जीवित सांप जब प्रदर्शित किया गया तो थोड़ी ही देर में उसकी कहानी के साथ उसका फोटो भी अखबार और टेलीविजन चैनलों के लिए कैद हो गया।

स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों ने जब यह घटना अपने–अपने घरों में सुनाई तो उनमें से एक के पिता ने दैनिक समाचार में घटना विस्तार से प्रकाशित की। बाद में सांप को मित्र महोदय ने जंगल में ले जाकर छोड़ दिया। एक सद्भावपूर्ण कदम से इतने सारे लोगों ने जाना कि सांप हमारे शत्रु नहीं होते बल्कि सभी प्राणी एक–दूसरे पर निर्भर हैं और महत्वपूर्ण है। हमें इन्हें निरपराध तंग नहीं करना चाहिए न ही इन्हें उपेक्षित समझना चाहिए।

रजनीकान्त शुक्ल
सर्वोदय विद्यालय आनन्द विहार,
दिल्ली

नीति–अनीति

जिस कौशल्या बाई की जायदाद के पीछे चारों भाई पड़े थे, उसी कौशल्या बाई के मरने पर चारों भाई परायों की तरह आए और ओम कुमार को अपनी सगी मां गुलाब बाई से भी ज्यादा दुख हुआ क्योंकि ओम कुमार और कौशल्या बाई का रिश्ता सगे मां–बेटे के रिश्ते से भी बढकर था। लेकिन चारों भाइयों को कोई दुख न था। तब भी ओम कुमार 'मैं आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' पर अडिग रहे।

दो बहनें कौशल्या बाई और गुलाब बाई की शादी एक ही घर के सगे दो भाइयों से होती है। कौशल्या बाई निःसंतान और गुलाब बाई के पांच पुत्र हुए। कौशल्या बाई के नाम पर पूरी प्रोपर्टी नाम करके दोनों के ही पति मृत्यु को प्राप्त हो गये।

गुलाब बाई के चौथे पुत्र का नाम था ओम कुमार। बचपन से ही ओम कुमार अपने बड़े भाई, भाभी और मां गुलाब बाई के कहने पर कुछ भी करने को तैयार रहता था। इधर–उधर दूकान, खेत पर ध्यान देकर पूरे परिवार का खर्च चलाता था। भले ही ओम कुमार अपनी पत्नी और बच्चों को उनकी पसंद की चीजें नहीं दिलाता हो, परंतु पांचों भाइयों के अलग–अलग होने पर भी वह चारों भाइयों और उनकी पत्नी, बच्चों की जहां तक सम्भव हो रुपयों से पैसों से मदद करता था।

कौशल्या बाई निःसंतान थी और ठीक से उठने–बैठने में असमर्थ थी, वह ओम कुमार के पास में ही रहती थी। ओम कुमार उनकी बहुत देखभाल करता था। नहलाता था, खिलाता था, रात को ठंड में जाकर चादर उढ़ाता था। दवाइयां देना, सभी तरह की सेवा बड़ी मां कौशल्या बाई की करता था और बाकि चारों भाई बस दूर से देखते थे।

कौशल्या बाई ओमकुमार के अलावा किसी भाई पर विश्वास नहीं करती थी। कौशल्या बाई से जायदाद में हिस्सा पाने के लिये चारों भाई हमेशा ओम के गुणगान करते थे। ओम कुमार के कहने पर ही कौशल्या बाई ने चारों भाइयों को न चाहते हुए भी उनका जायदाद में हिस्सा दे दिया परंतु आगे बची प्रोपर्टी ओम कुमार ने भाइयों को दिलाने से मना कर दिया क्योंकि कौशल्या बाई चाहती थी कि उनके मरण के बाद ही बंटबारा हो बची प्रोपर्टी का। इसलिये ओम ने अपनी प्रोपर्टी भी कभी कौशल्या बाई से नहीं मांगी। इसी बीच कौशल्या बाई और गुलाब बाई की मृत्यु हो गई। ओम कुमार और उनकी पत्नी, बच्चों ने काफी समय ऐसे ही बिताया, कभी चारों भाइयों को किसी तरह से ठेस नहीं पहुंचाई।

परंतु जब ओम कुमार ने कौशल्या बाई की इच्छा के अनुसार चारों भाइयों को आगे प्रोपर्टी बेचने के लिए मना कर दिया था, तब चारों भाई नाराज रहने लगे और अनेक तरह से ओम कुमार का अपमान करने लगे। तब भी ओम कुमार 'मैं आक्रमक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' की नीति पर अडिग रहे।

जो भाई ओम कुमार पर जान देते थे, वही बदल गये क्योंकि ओम कुमार से मिलने वाले फायदे खत्म हो गये थे। फिर भी ओम कुमार अपनी पत्नी ओर बच्चों को छुपाकर चारो भाइयों का बिजली बिल और अनेक तरह की जरूरतें पूरी करता था। जिन चारों भाइयों के लिए ओम कुमार ने सब कुछ एक पिता की तरह किया उन्हीं के बच्चों को चारों भाई, उनकी पत्नियों और बच्चों को परेशान करने लगे। तब भी ओम कुमार 'मैं आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' पर अडिग रहे।

पढ़े–लिखे, सुंदर–सुंदर बच्चों की देखभाल ओम कुमार ने बहुत अच्छे से की थी पर जायदाद के लालच में चारों भाई ओम कुमार के ऐसे संस्कारी बच्चों को सताने लगे। शादी के समय उन बच्चों के बारे में चारों भाइयों के परिवारों ने

उनके तरह–तरह के मजाक बनाये, नाम खराब किये, धमकी दी कि प्रोपर्टी नाम कर दो नहीं तो बच्चों की शादियां नहीं होने देंगे। तब भी ओम कुमार 'मैं आक्रमक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' की नीति पर अडिग रहे।

ओम कुमार की बड़ी लड़की की शादी के 8 दिन पहले ब्लेक पेपर साइन करवाने की कोशिश की गई व यह धमकी दी कि साइन कर दो नहीं तो शादी नहीं होने देंगे। तब भी ओम कुमार मैं आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा पर अडिग रहे।

जिस कौशल्या बाई की जायदाद के पीछे चारों भाई पड़े थे, उसी कौशल्या बाई के मरने पर चारों भाई परायों की तरह आए और ओम कुमार को अपनी सगी मां गुलाब बाई से भी ज्यादा दुख हुआ क्योंकि ओम कुमार और कौशल्या बाई का रिश्ता सगे मां–बेटे के रिश्ते से भी, बढ़कर था। लेकिन चारों भाइयों को कोई दुख न था। तब भी ओम कुमार 'मैं आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' पर अडिग रहे।

चारों भाइयों के रिश्ते में किसी की मृत्यु हो जाने पर जब ओम कुमार अपनी पत्नी और बच्चों के साथ उनके घर दुख में शामिल होने गये तब उन लोगों ने सारे मेहमानों के सामने ओम कुमार और उसके परिवार का अपमान किया और वहां से जाने को कह दिया। तब भी ओम कुमार 'मैं आक्रमक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' इस पर ही अडिग रहे।

जब इससे भी काम न बन सका तो चारों ने किसी तरह पैसा खिलाकर सरकारी कर्मचारी से ओम कुमार की जायदाद अपने नाम पर करवा ली। ओम कुमार को जब यह मालूम हुआ कि जिस जायदाद को बचाने के लिए वह और उनके बच्चे रात दिन मेहनत करते हैं, वे धोखे से चारों ने ठग लिये। तब वह बहुत रोये और उनके पसीने छूट गये और उनका परिवार सकते में आ गया।

अब समय विचार परिवर्तन का था। अब ओम कुमार के बच्चे और खुद ओम कुमार भी अपने आप से पूछने लगे कि उन्होंने 'आक्रामक नीति' का समर्थन क्यों नहीं किया ? विरोधी शक्तिशाली होते हुए भी ओम कुमार ने अपनी नीति नहीं बदली थी। उन्हें अब अपनी सोच और नीति पर पछतावा हुआ है कि अगर थोड़ा आक्रामक तेवर यदि अपने हक के लिए अपनाते तो परिस्थितियां इतनी विपरीत नहीं होतीं। 65 साल की उम्र में उन्हें काम करने नहीं जाना पड़ता, बुढ़ापा सुख से गुजरता।

सही समय पर, सही बात के लिए, सही तरीके से आक्रामक रवैया आवश्यक है। अगर विरोधी शस्त्रधारी है तो हमें भी अपनी नीति बदलनी चाहिये अन्यथा इन्सान अपना मान, धन, सुख, शांति सब कुछ खो देता है।

आज के युग में क्या भलाई या सच्चाई की जीत होती है, क्या कोर्ट में ओम कुमार अपने हिस्से की जायदाद पा सकेगा, आखिर इस बुढ़ापे में ओम कुमार कब तक अपने परिवार और कोई का खर्च उठा पायेगा। उसने अपने बच्चों की शादी भी तो करनी है ओम कुमार को भगवान पर भरोसा है, शायद भगवान उनकी अच्छाई और 'मैं आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूंगा' इस नीति का उन्हें फल दे, सुख और शांति और इस उम्र में कुछ आराम दे।

पायल मोहन लाल गुप्ता
सेवा सदन उ.मा. विद्यालय
बुरहानपुर, मध्य प्रदेश

मैं हूं ना

भोलू की अपाहिज टांग चाहे लकड़ी के आश्रय पर टिकी थी लेकिन उसके चेहरे पर स्वाभिमान की अनोखी आभा से दीप्त प्रतिभा अवसर की उपलब्धि की प्रतीक्षा में प्रश्नचिह्न सी खड़ी थी। ईश्वर जब कोई शारीरिक अक्षमता देता है तो आत्मिक शक्ति दोगुनी कर देता है। प्रकृति की ये उदारता वन्दनीय है।

विद्यालय से आकर जैसे ही घर का दरवाजा खोला, आखों से सफेद रंग की कोई चीज टकराई। उठाकर देखा तो वह एक लिफाफा था। उस पर मोती जैसे अक्षरों में अपना नाम पढ़कर स्मृति के परदे सरक गये और दिखाई दिया वो चेहरा जो बरसों पहले देखा और हमेशा के लिए चिन्हित हो गया।

बात उन दिनों की है जब मेरी प्राथमिक विद्यालय में प्रथम नियुक्ति हुयी थी। समय स्मृतियां बनाने के लिए स्वतः ही हमारी डोर खींच कर हमें नियति से जोड़ देता है। कई लोगों के भाग्य कैसे एक–दूसरे के सौभाग्य से जुड़ कर विधान में बदल जाते हैं, यह अल्पज्ञानी मानव कभी समझ ही नहीं पाता।

बस चल पड़ते हैं कदम उस ओर रुख कर जिस दिशा में हवा ले जाए। मेरी उस गांव में नियुक्ति शायद भविष्य के सुंदर आगाज की ही पहली सीढ़ी थी। गांव का वह छोटा–सा बस अड्डा उस अप्रतिम क्षण का साक्षी बना जहां इतिहास के वक्ष पर नियति कुछ लिखना चाहती थी।

चाय की दो–चार थडियां बेतरतीन भांड़ों–सी बिखरे किसी कुम्भकार के अलसाए हाथों की परछाई को उकेरती हुई। उन पर बैठे ग्रामीण पास ही हैंडपंप पर पानी भरती कनखियों से बतियाती विधि की रची भोली– सरल मूर्तियां। उनकी सरलता भारत की माटी की सौगात है तभी तो भगवान भी उनके अंक में अठखेलियां करने चले आते हैं।

बीच चौराहे पर शहीद की मूर्ति और पास ही नीम के पेड़ के नीचे बैठे हुक्का पीते बुजुर्ग। सड़क की हालत किसी गरीब की गुदड़ी जैसी जो धरती पर बिछी हो तो जगह–जगह से लिपा–अधलिपा आंगन नजर आता है तो कई मटमैली पाती लगा दृश्य।

धूल का बवंडर साथ लिये जैसे ही बस वहां रुकी, ग्रामीणों की स्वेदगंध भरा हुजूम बैठने के लिए उमड़ पड़ा। धक्का–मुक्की के बीच एक दमदार आवाज ने मेरा ध्यान खींचा, ''आप अपना थैला मुझे दीजिये''। जब तक मैं देख पाती, थैला और मैं दोनों बस से नीचे उतर चुके थे। '' आप हमारी गुरुजी हैं ना ?'' दोबारा उसी आवाज ने बरबस मेरा ध्यान खींचा।

तब तक वहां गांव के कई लोग इकट्ठे हो चुके थे लेकिन यहां मुझे पहचना कैसे गया ? सच अनुभव की आंखों की पैठ बुद्धि के वेग से कहीं अधिक सजग होती है। उमड़ी उस भीड़ में मैं उस आवाज को ढूंढ रही थी। अचानक नदी की हिलोर से कुछ बच्चों की भीड़ में एक बालक पर मेरी दृष्टि टिक गई।

सनई के सूखे ठांड सी खड़ी कृशकाय देह पर धूप में सूखे झांखरों जैसे बाल। बाजरे की रोटी पर चकते सी पड़ी दो आखें थीं। छोटी, पर जीवन की आशा से भरी। नाक तो जैसे खेत में खड़े बजूके–सी जान पड़ती थी। काठी साधारण, दाहिने पैर में पोलियो की दू बूंद न मिल पाने की तृष्णा में खो चुकी शक्ति। उसके हाथ में जिसे अन्य बालक भोलू कह कर पुकार रहे थे, मेरा थैला था।

गांव की माटी में दायित्व बोध और अपनेपन की सौंधी महक का स्पर्श उसमें खेल कर बड़े हुए इन बाल–गोपालों के शरीर वर वर्ण बन कर रच गई थी। शायद कृष्ण की श्यामल आभा भी हमें यही साक्ष्य करती है।

भोलू की अपाहिज टांग चाहे लकड़ी के आश्रय पर टिकी थी लेकिन उसके चेहरे पर स्वाभिमान की अनोखी आभा से दीप्त प्रतिभा अवसर की उपलब्धि की प्रतीक्षा में प्रश्नचिह्न सी खड़ी थी। ईश्वर जब कोई शारीरिक अक्षमता देता है तो आत्मिक शक्ति दोगुनी कर देता है। प्रकृति की ये उदारता वन्दनीय है।

पत्र में छिपी हर ध्वनि की जीवन्तता भोलू के मुख से उच्चारित होने की अनुभूति करवा रही थी। पत्र में लिखा था गुरूजी , मैंने आर ए एस परीक्षा पास कर ली। मुझे प्रशिक्षण के लिए जोधपुर जाना है। आपके आशीर्वाद के बिना कैसे जा सकता हूं ? बाबा का इलाज पूरा हो गया, उन्होंने फिर से काम करना शुरू कर दिया है। पुस्तकों के रूप में मिलने वाला आपका आशीर्वाद और ज्ञान का उपहार नहीं मिला होता तो मैं शायद.....। गुरुजी! आपके द्वारा भेजी पुस्तकें मैं पढ़ने के बाद गांव के ही एक बालक कृष्णा दे दिया करता था। उसने भी बी.ए. पास कर लिया है। गुरुजी, वो आपसे मिलने को तत्पर है और आपकी ही भांति शिक्षक बन कर ज्ञान का आलोक फैलाना चाहता है।
आपके समाचार लिखना। आपका शिष्य भोलू

ये अक्षर थे या गांव की वो पगडंडी जो मुझे खींच कर गांव की पाठशाला में ले गई।

याद आते हैं, सर्दियों के दिन थे। भोलू मंडली प्रार्थना के बाद मेरे कालांश की प्रतीक्षा कर रही थी। मेरे पहुंचते ही भोलू ने मेरे सामने सुंदर सी सुराही रखते हुए कहा, '' ये मेरे बाबा ने बनाई है, आपके लिए। ''ये कितने रुपये की है ?'' मैंने पूछा तो उसके श्यामल कर्ण रक्ताभ हो उठे। नथुने फुला कर कहा, '' आप इसे रख लीजिये बाबा को खुशी होगी, और मुझे भी।''

आंखों में उड़ते पंछी को लगी अचानक आघात से उठी पीड़ा को देख मैंने कहा, '' ठीक है, रख लेती हूं लेकिन एक शर्त पर तुम्हें खूब मन लगाकर पढ़ना होगा, बिना नागा किये।''एक दिन जैसे ही मैं विद्यालय पहुंची, उसके साथियों ने बताया, गुरुजी भोलू नहीं आ पायेगा, आज उसके पिता जी बहुत बीमार हैं।

विद्यालय की छुट्टी के बाद एक बालक जो भोलू का पड़ौसी था, उसके साथ घर पहुंची। घर के नाम पर एक कच्चा कमरा, जिसकी दीवारों पर जीवन की खण्डरनुमा पपडियां उतरी सी जान पड़ती थी। छत तो मरम्मत की आशा में छलनी होकर अपनी नियति आप लिखती जान पड़ती थी। दरवाजे के नाम पर टाट का परदा लटकाया गया था लेकिन वो भी तार–तार होकर दारिद्रय के कड़वे घूंट को पीकर घुट–घुट कर मरती देह सा। एक कोने में चारपाई में निढाल पड़ी पुतले सी देह देख कर मेरा अंतर्मन कांप उठा।

भोलू वहीं बैठा रो रहा था। यह ईश्वर की कैसी लीला है। विषमताओं की निर्मय छवि देखकर कंठ अवरुद्ध हो उठा। भोलू मेरे बैठने के लिए दरी उठा लाया जिसके किनारों पर बड़े यत्न से लगाई गोट शायद भोलू की मां की एक मात्र स्मृति थी।

मां के हाथ की इस निशानी को भोलू ने बहुत सहेज कर रखा होगा लेकिन उसमें छोटे छिद्रों से झलकती आंगन की कृपणता उसके इस घर की चिर–संगिनी होने का बोध करवा रही थी।

मैं अपने साथ डॉक्टर भी ले आई थी। डॉक्टर ने उन्हें देखा और कुछ दवाइयां लिख दीं लेकिन उनके चेहरे का भूगोल और भोलू के पिता जी की दशा का मानचित्र आगामी आपदा का अंदेशा करवा रहे थे।

लौटते समय मैंने उनसे बीमारी के विषय में पूछा तो वे बोले, इनकी बीमारी है, भुखमरी, जिसका कारण है बेकारी और इसी से जन्मी निराशा और उसके उपचार में ढूंढा गया इलाज नशा।

''क्या ?'' मैं हतप्रभ भी ? ''लेकिन सही बात क्या है, वह बताइए।'' मैंने पूछा।

तब वे बोले कि अत्यधिक नशा व धूम्रपान से इन्हें पित्त का कैंसर है। शायद भूख का कष्ट और अन्न नहीं मिल पाने की पीड़ा ईश्वर ने हमेशा के लिए मिटा दी।

मेरी परेशानी देख कर उन्होंने मुझे नशामुक्ति केन्द्र की जानकारी दी और कहा कि इन्हें वहां ले जाना ही होगा। मैं एक स्वयंसेवी संस्था के विषय में जानता हूं जो गरीब एवं नशा पीड़ित लोगों का निःशुल्क उपचार कर उन्हें स्वस्थ बनाने में एवं स्वरोजगार हेतु प्रशिक्षण देने में मदद करती है।

''तो हम कल ही उन्हें ले जाएंगे। अगले दिन भोलू के पिता जी को नशा मुक्ति केन्द्र ले जाया गया। लेकिन अब भोलू अकेला रह गया था। मैंने उसे अपने साथ रखने के लिए कहा लेकिन वह ठहरा स्वाभिमानी। मेहनत– मजदूरी करता और मन लगाकर पढ़ता।

उन दिनों राजस्थान सरकार ने प्राथमिक विद्यालयों में पुस्तकों व दोपहर के भोजन की निःशुल्क व्यवस्था कर इन बालक के जीवन को गतिमान बनाने में बड़ी सहायता की। उसी वर्ष मेरा तबादला हो गया और मैं फिर से नये भोलू की तलाश में निकल पड़ी।

आज इतने बरस बाद अचानक भोलू की यह चिट्ठी इस बात की अहसास करवा गई की ज्ञान जीवन के दीप को प्रकाशमान बनाता है किंतु उस दीपक को हवाओं में मजबूती से खड़े रहने की शक्ति देने वाले हाथ अगर ना हो तो कोई दीपक नहीं रोशन हो पायेगा। ज्ञान जीवन का आदि है तो नशा जीवन का अंत ।

विजय लक्ष्मी जांगिड
एम.पी.एस. तिलक नगर,
जयपुर (राजस्थान)

कामना

तुम नवयुग के प्रथम दीप की शिखा बनो
ज्ञान–ज्योति से आलोकित नव–दिशा बनो।

स्नेह–धार से सिंचित हो मन,
मानव–हित में जीवन अर्पण।
हिंसा–विष से मुक्त, सुधामय धरा बनो।

काटों बंधन सभी तमस के,
त्यागो सारे पंथ असत् के
धवल चन्द्रिका से ज्योतिर्मय निशा बनो।

धर्म सभी हों पूजित, रक्षित
हो समता–संदेश प्रचारित
तुम मानव के ऐक्य भाव की प्रथा बनो।

व्यसन–कलुष से मुक्त, अमल मन
सदाचरण का जप हो पावन
नई सदी में लिखी, वेद की ऋचा बनो।

रूढ़ि–रीति के खोलो बंधन,
मलिन धरा को दो नव जीवन।
मुरझाती प्रकृति–हित पीयूष घटा बनो।।

ब्रह्मचर्य की अडिग साधना,
रहे त्याग की सतत् भावना।
पर–दुःख में सर्वस्व लुटाती व्यथा बनो।

कुल की मर्यादा के रक्षक,
निज संस्कृति के हो यश–गायक।
भारत के गौरव की उज्ज्वल ध्वजा बनो।

पाए तुमसे विश्व निदर्शन
महके हर पल जीवन–मधुवन
तुम मानवता के सर्जन की कथा बनो।

तुम नवयुग के प्रथम दीप की शिखा बनो
ज्ञान–ज्योति से आलोकित नव–दिशा बनो।

इन्द्रा बहादुर
ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
साकेत, नई दिल्ली

कभी करेंगे नहीं नशा

सिगरेट, पान, तम्बाकू, गुटखा
हेरोइन, सुपारी या हो शराब,
ये सभी मादक पदार्थ
देह को करते हैं खराब।
कहीं गले में खराश
कहीं छाती में पीड़ा
लेकर जाते चिकित्सालय
आते होकर हताश।
एक बार जो जाकर
इस दलदल में धँसा,
बेवक्त गिरा कर जाल
मौत लेती है फंसा
तो लो शपथ सभी
कभी करेंगे नहीं नशा।

लुट जाते हैं दिग्गज
न घर में होती बरकत,
खो देते हैं इज्जत
कर के गिरी हुई हरकत।
ये नशे की दावत लाती
बरबादी की आहट
बुराई–अच्छाई से करे बगावत
आती सभ्य समाज में गिरावट।
वे मानव के भेष में दानव बनकर
खोते नैतिक शिक्षा
जो न निकाल पाते दिल से
कभी नशे की मंशा।
तो लो शपथ सभी
कभी करेंगे नहीं नशा।

पड़ा रहा आठों प्रहर
तू नशे के दर
वक्त ने न देखी राह
उड़ गया लगा कर पर।
जिसको भी लेकर नशे ने
अपनी बाहों में कसा,
रोता रहा वो जीवन भर
वक्त उस पर हंसा।
तो लो शपथ सभी
कभी करेंगे नहीं नशा।

आज मादक बादल
जैसे बरस रहा,
डूबेगा कल इसमें अवश्य
हर बूंद में दर्श रहा।
वह जाएंगे जीवन–मूल्य
संदेशा लटक रहा,
सड़ जाएगी जिंदगी बहुमूल्य
अंदेशा खटक रहा।
नशे की बाढ़ में भविष्य
खो देगा दिशा,
अगर वक्त रहते रूकी नहीं
ये मादक वर्षा।
तो लो शपथ सभी
कभी करेंगे नहीं नशा।

सुनीता डागर
प्रताप सिंह मै.मो. वरि. माध्यमिक
विद्यालय, खरखौदा, सोनीपत, हरियाणा

वन की पुकार

जब जन्म लिया इस धरा पर
पाया अपने को कोमल पाती पर
हरितिमा थी तब जगह–जगह पर
मधुवनों का था तब जाल जहाँ
खुशबू का था तब वास वहाँ
बोली मैं यह क्या है अजब स्थल।

सखियों ने बताया यह है चानन
कहते हैं इसे भी हम कानन
अद्‌भुत है यहाँ का दृश्य मनमोहना
शुरू हो गया जीवों का बौराना
मधुकर ने बताया मधुपों को
चलो लें आनंद इस मधुवन का।

जब मैं यौवन के कगार पर पहुँचा
पाया मैंने इस वन को वीराना
हाय रे ! मानव तूने क्या कर डाला
जंगल काटे, घर बना डाले
पेड़ काटे, उद्योग–धंधे खोल डाले
क्यों तूने इस सलोनी धरती का
यह अद्वितीय, अनुपम रूप बिगाड़ा।

पूर्वजों ने तेरे पूजा है हमें
फिर क्यों नहीं करता तू भी नेक काम ये
जी और हमें भी तू जीने दे
हमीं से है सब जीव–जन्तु यहाँ
शिशुओं का हम इक उद्यान यहाँ।

तो फिर तू यह मूढ़ता न कर
संकल्प ले तू हमारे संरक्षण का
और हम देंगे तुझे सुखों की छाया
छोड़ दे छुरे लिए घूमना
सत्ता के गलियारों में
कार्य ले तू अपने विवेक से।

अब तू अपना यह हठ छोड़ दे
देख सावन भी आने को है
चल रोपन कर नए विटपों का
हमारी संख्या तुम बढ़ाते जाओ
फिर देखो तुम कैसा अनूठा सुख पाओ,
धरती को पुनः तुम स्वर्ग बनाओ।

मधु गुप्ता
ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
साकेत, नई दिल्ली

वध करने का प्रयास न करो

बाँधकर वध करने का प्रयास न करो,
प्रियतम! मुझे बहने दो,
क्योंकि जब तक मैं बहूँगी,
तब तक ही रहूँगी।
जिस दिन अन्त हुआ मेरे बहने का,
उस दिन होऊँगी मलीन, गतिहीन, निर्जीव
इसलिए बाँधकर वध करने का प्रयास न करो,
प्रियतम! मुझे बहने दो।

मेरे बहने से अनेक सूखे तट होंगे सरस,
अनेक सूखे वृक्ष होंगे शस्यश्यामल,
अनेक अस्तित्वहीन प्राणी होंगे अस्तित्ववान
खिलेंगे अंकुरों में,
बन विराट वृक्ष
फल ही बाँटेंगे,
शीतलता ही बाँटेंगे,
छाया ही बाँटेंगे,
इसलिए बाँधकर वध करने का प्रयास न करो,
प्रियतम! मुझे बहने दो।

मेरे बहने से बनेंगे बादल,
जो भी थका हारा क्लान्त आएगा पास,
देंगे उसे शीतल छाँव,
और बरस इस धरा पर
करेंगे इसे सरस,
जीवन फिर होगा शांत, सरस एवं मनोहर,
इसलिए बाँध कर वध करने का प्रयास न करो,
प्रियतम! मुझे बहने दो।
नदियों से सीखो,
पेड़ों से सीखो,
बादलों से सीखो,
ये सभी किसी का हिंसा नहीं करते,
किसी का वध नहीं करते
क्योंकि ये सभी दानी हैं, परोपकारी हैं,
ये कृपण नहीं हैं,
इसलिए बाँटना एवं देना जानते हैं,
किसी से छीनना एवं वध करना नहीं जानते।
इसलिए बाँधकर वध का प्रयास न करो,
प्रियतम! मुझे बहने दो।

मनीष कुमार चतुर्वेदी
लेडी अनुसुईया सिंघानिया एजूकेशन
सेंटर झालरापन्तन रोड़, झालावाड़, राजस्थान

नई उमंग

अमंद उमंगें रुकती हैं, हिंसा के साए में घिरकर
जीवन की राहें मुश्किल हैं, नफरत की चक्की में पिसकर
क्या रोक न सकता है कोई, हिंसा की होली को मिलकर
जनता के सेवक बनकर हम, हिंसा को मिटाएँ खुद
मिटकर।

हिंसक प्रवृत्तियों में घिरकर, मानव बिखर न जाए कहीं
नव चिंतन कर दुनिया में हम अपना नाम कमा ले अभी
है अनमोल घड़ी जीवन की, बार–बार नहीं ये आती
नवनिर्मित संकल्पों से ही, धरती की बगिया खिल जाती।

सदाचार को जीवन में मिलकर अब फैलाएं हम
परोपकार के कर्मों से जीवन सफल बनाएं हम
नवयुग के इस महायज्ञ में सुरभि मिल फैलाएं हम
हिंसा के उठते शोलों को, मिलकर अब दफनाएँ हम।

हिंसा से घिरे महाप्रलय में सबको पतवार थामनी है
अभिलाषा की जोत जगाकर, जीवन राह बनानी है
हिंसा से पोषित बेईमानी मिट्टी में मिल जानी है
जीवन के खिलते उपवन में, नई उमंग महकानी है।

रंजीत कौर
केन्द्रीय विद्यालय, सैक्टर–3,
रोहणी,दिल्ली

आओ सूरज बन जाएं

किस मुंह से भला
सांस्कृतिक परंपराओं की बात करें हम ?
संस्कृति को तो
कतरा–कतरा पीछे छोड़ आए हैं हम।
परंपराओं को ही सिर्फ
अंग–संग हम ढो चले हैं
हर कदम पर
सुलह–समझौतों कर बैसाखियों को थामे हुए
अपनी ही संस्कृति के मोहताज हम हो चले हैं।

अब तो महानुभावों,
हो अगर कुछ इस तरहा,
धधकते हुए सूरज की
प्रखरता की तरहा,
तभी बस हम कुछ उबर सकते हैं–
और अंधेरों के समीकरण बदल सकते हैं।

हो अब मंथन सशक्त विचारों का
और परिमार्जन परिपक्व इरादों का,
सारी परिधियों को मिटाकर
(सिर्फ भुला कर नहीं)
चलो एक कर चलें उजाला सारे वलयों का।

सतत सचेतन चेष्टाओं की समिधा हो अब
एक अखंड महायज्ञ के पावन कुंड में
कभी देखें स्वयं को,
कभी दिखाएं सबको,
चलो उठा लें एक–एक दर्पण हाथ में।

मौन अनुगामी बने रहना होगा महाघातक,
मौन साक्षी होना तो उससे भी घोर पातक,
सत्य का प्रतिबिंबित होना है आवश्यक,
चलो कोने–कोने बिखर चलें
सत्य है जहां तक।

बात केवल मुझ तक सिमटकर मिट जाती
तो कोई बात न थी
परंतु जहां संस्कृतियों के तीर्थों पर
हाट लगे हुए हों सिर्फ परंपराओं के
और बोली लग रही हो उजालों की
तो ऐसे में
मेरा होकर भी न होना
संगीन जुर्म सा लगता है।

मैं अपने होने के मायने देना चाहती हूं
मैं सीप में बन्द मोती नहीं
मोती सृजन करने वाला सीप बनना चाहती हूं।
दर्पण में झांकता प्रतिबिंब नहीं
प्रतिबिंन करता दर्पण बनना चाहती हूं,
एक अंधेरे कोने में जलता हुआ दीया नहीं
हर कोने में बिखरा हुआ उजाला होना चाहती हूं।

बिखराव से लेकर रखरखाव तक के
सारे मंजरों में जज्ब होना चाहती हूं,
टकराव से लेकर समन्भाव तक के
तमाम बयानों में दर्ज होना चाहती हूं।

सुलहों से तो सहजती हैं सिर्फ परंपराएं
मैं कतरा–कतरा संस्कृति समेटना चाहती हूं।

सुलहों– समझौतों पर टिकी जिंदगियां
कब मायने दे पाती हैं अपने होने को भला,
परंपराओं में ही उलझ कर रह जाती हैं
जिंदगी को बस, एक दीये की ही शक्ल दे जाती हैं।

आओ, शक्ल जिंदगी की कुछ बदल चलें अब तो
वरना, दीयों तेले अंधेरे यूं ही पलते रहेंगे,
पल–पल कर गहन होकर
बस, सलते रहेंगे।

याद करों.....याद करो
संस्कृति तो हमारी उजालों की थी,
सोचो.....जरा सोचो,
भला क्यों मोहताज हों हम दीयों के
क्यों ना जोड़ें हृदयों को हृदयों से
आओ सूरज बन जाएं उजालों के।

अलका पाल
जे.एच.अंबानी सरस्वती
विद्यामंदिर,सूरत

अधूरी जीत

मानव तुमने जीत लिया है, धरती अम्बर तारों को,
लेकिन जीत नहीं पाए तुम, मन के सूक्ष्म विकारों को।

तेरा–मेरा, मेरा–तेरा वही पुरानी बातें हैं,
नदिया बीच भँवर से जैसे, कभी निकल नहीं पाते हैं।
मानव तुमने जीत लिया है, वेगवती जल धारों को।
लेकिन जीत नहीं पाए तुम, मन के सूक्ष्म विकारों को।

किसी का सुख और आगे बढ़ना, पचा नहीं तुम पाते हो,
मन में रखते द्वेष–भाव, मीठी बातें बतियाते हो।
मानव तुमने जीत लिया हे, लपटों और अंगारों को,
लेकिन जीत नहीं पाए तुम, मन के सूक्ष्म विकारों को।

गिरता है जब कोई निर्बल, उसको कहाँ उठाते हो?
हँसते हो तुम उसके ऊपर, व्यंग्यबाण बरसाते हों।
मानव तुमने जीत लिया है, कश्ती और किनारों को।
लेकिन जीत नहीं पाए तुम, मन के सूक्ष्म विकारों को।

निज स्वार्थ की खातिर भईया, गदहा बाप बन जाता है,
अपना काम निकल जाने पर, कभी याद नहीं आता है।
मानव तुमने जीत लिया है, दूरी और दीवारों को।
लेकिन जीत नहीं पाए तुम, मन के सूक्ष्म विकारों को।

धन के पीछे फिरने वाले क्यों बालक–सा भरमाता है ?
तेरा हम आज भी तुझको बन्दर नाच नचाता है।
मानव तुमने जीत लिया है, बबर शेर खूँखारों को।
लेकिन जीत नहीं पाए तुम, मन के सूक्ष्म विकारों को।

नरेन्द्र सिंह,
राजकीय उ.मा. माध्यमिक विद्यालय,
डी.डी.ए. फेज–II,
कालका जी, दिल्ली

पेड़ बोलेंगे

एक दिन बोलेंगे पेड़
मानव की संकीर्णताओं पर
अपनी संवेदना का भेद खोलेंगे।

सजाया था घर–आंगन
जिसका अपने हाथों से
संवारा था जिसका जीवन
अपने श्वासों से
पता नहीं था वही जीवन में जहर घोलेंगे।
एक दिन पेड़ बोलेंगे।

प्रकृति सदा मां तुल्य रही
सखा,देव समतुल्य रही
स्वार्थ इतना गहराया
आत्मघात तक बढ़ आया
जन से निर्जन करने को
मनुज हाथ आगे आया।
ग्लोबल वार्मिंग की ज्वाला में
तंगहाल सब डोलेंगे।
एक दिन पेड़ बोलेंगे।

डॉ. अरूण कुमार वर्मा
जवाहर नवोदय विद्यालय
सिरमौर (म.प्र.)

विश्व शान्ति के सैनिक हम

नहीं रुकेंगे, नहीं थकेंगे
आगे बढ़ते जाएं हम,
विश्व शांति के सैनिक हम

कदम बढ़ाया है आगे तो
घर–घर खुशहाली लाने को
भेद–भाव को हम मिटाएं
विश्व शांति के सैनिक हम,

विश्व शान्ति का नारा लेकर
मानवता का पाठ पढ़ाएं
पंचशील के सिद्धांतों को
घर–घर में फैलाएं हम,
विश्व शांति के सैनिक हम।

विश्व शांति अपनाकर
हिंसा के शूलों को हटाएं
शांति जीवन का आधार
यह सबको समझाए हम,
विश्व शांति के सैनिक हम।

अनुशासन है अपना नारा
मातृत्व का है भाव हमारा
स्वर्णिम भविष्य की राह बनाकर
उस पर चलते जाएं हम,
विश्व शांति के सैनिक हम।

अणुव्रत को जीवनधारा बनाकर
देश का नवनिर्माण करेंगे
अखिल विश्व हो परिवार हमारा
यह दोहराते जाएं हम
विश्व शांति के सैनिक हम

अणुव्रत ने यह राह दिखाकर
विश्वशांति का भाव सुझाया
अणुव्रत नियमों को अपनाकर
संयम में संस्कार जगाएं हम
विश्व शांति के सैनिक हम

शिवि रस्तोगी
बाल भवन पब्लिक स्कूल,
पाकेट बी, मयूर विहार, फेज–।।,दिल्ली

बस चलते जाना है

जीवन है प्राणी मात्र की धरोहर
चाहे वह वनस्पति हो या हो प्राणी
उसे हक है जीने का
जन्म से लेकर मरण तक।

यह है विधि का विधान
पर इस में बाधा डालने वाले
इंसान किस बिरादरी का है,
मानो ईश्वर ने उसे कुछ अलग ही बनाया है

करता रहता अपनी मनमानी
कभी इधर को काटा
कभी उधर को मारा
चलती रहती है उसकी मनमानी।
अरे! ओ इंसान तू सोच
जीवन लेने का अधिकार
दिया है किसने तूझे
तू भी है उस विधाता की संतान
जिसने तुझे और उसे भी प्राण दिए हैं।

कहाँ गया है संस्कार हमारा
जिसने हमें सिखाया क्षमा और त्याग
आज ऐसा दीख पड़ता है
कि हम एक–दूसरे के दुश्मन
बन बैठे हैं।

भाई–भाई को नहीं पहचानता
बेटा, मां का सहारा नहीं बनता
सब उतर आए हैं स्वार्थ पर
हमारे पुरखों ने हमें दिखाई है राह नेकी की
जिस पर चलते जाना है
अपना कर्म कर बस चलते जाना
फल की कामना न करना

स्मिथा जयाराज
भवन्स विद्या मन्दिर
पो.एलमक्कारा, कोची, तमिलनाडु

हमें नहीं चाहिए हिंसा

नहीं चाहिए हमें लड़ाई
इसमें नहीं किसी की भलाई,
क्या सम्भव नहीं कि
मंदिर – मस्जिद साथ बनाएं
आपस में भाईचारे के
हर आंगन में फूल खिलाएं।

हमको धर्म नहीं सिखलाता
कभी किसी को दुख पहुंचाना,
भाषा,जाति, प्रांत को लेकर
पग–पग पर दीवार बनाना।
बड़े प्यार से पशु–पक्षी तक
देखो कैसे मिलकर रहते
और एक हम इसां होकर
आपस में ही लड़ते रहते।

क्यों न आपस के झगड़े को मिटाएं
बैर–भाव सब भूलकर
आओ मिलकर एक हो जाएं
अहिंसा अपनाएं।

क्योंकि–
हिंसा से मिल सकती है बुराई,
भलाई नहीं।
हिंसा से मिल सकता है अकेलापन,
अपनापन नहीं।
हिंसा से मिल सकता है अधिकार,
प्यार नहीं।
हिंसा से मिल सकती मौत,
जिन्दगी नहीं।

हेमलता
हंसराज मॉडल स्कूल,
पंजाबी बाग,दिल्ली

नई सोच अपनाएंगे

हरे–हरे उन पौधों में
कई फूल मुस्काते थे,
खुशियों की बहार सदा हो
ऐसी सीख बताते थे।

उन्नति की इस दौड़ में
हम उनको भूल गये
बंगला,गाड़ी याद रहे
खुद को भी हम भूल गये।

प्रकृति की बरबादी से
धरती माता रूठ गई,
सुनामी की चपेट में
जन जीवन को समेट गई।

अपनी उन भूलों को
अब नहीं दोहराना है
हर संभव प्रयास से
संसार हमें बचाना है।

लाल–पीले फूलों के संग
हम हरे रंग फैलायेंगे,
नहीं मिटेगी धरती हमारी
प्रदूषण दूर भगायेंगे।

नयी उमंगें, हो नयी तंरगें
नयी सोच अपनायेंगे,
करेंगे वृक्षारोपण हम
धरती माँ को बचायेंगे।

धरती हमारी आकाश हमारा
यह संसार हमारा है,
आओ मिलकर साथ चलें
यह कर्तव्य हमारा है।

अनिता लोणी
वासवदत्ता विद्या विहार
सेड़म, जिला : गुलबर्गा, कर्नाटक

देखें प्रकृति की ओर

प्रकृति का विध्वंस हो रहा
शैल टूटते जाते हैं,
त्याग–भावना छोड़ सभी हम,
स्वार्थी बनते जाते हैं।

बाग–बगीचों की फुलवारी
नजर नहीं अब आती है,
मानव उसका विध्वंसक है,
शर्म उसे नहीं आती है।

पोषण करने वाला मानव
शोषक बनता जाता है,
पेड़ काटना काम है उसका
पौधे नहीं लगाता है।

हरी भरी यह वसुन्धरा अब
पीली पड़ती जाती है,
कारण उसका मानव है,
शर्म उसे नहीं आती है।

मानव में मानवता खोकर
प्रकृति–प्रेम को छोड़ दिया।
अंधे होकर मानव ने,
उसकी गर्दन को तोड़ दिया।

जीवन हुआ विषाक्त अब ,
खुशी आजकल सिमटती जाती हैं,
फिर भी बना हुआ विध्वसंक,
समझ उसे नहीं आती है।

छोड़ सभी हम स्वार्थ– भावना
देखें मुड़ प्रकृति की ओर,
वृक्ष लगाएँ, सौन्दर्य बढ़ाएं
सुख उपजे जिससे चहुं ओर।

विजयनंद भारद्वाज
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गुरूतेग बहादुर, दिल्ली

सुन अहिल्या!

सुन अहिल्या!
मत बन
राह का पाषाण–खंड।

जो बनना है तो अयोनिजा
द्रौपदी बन
क्योंकि काल–चक्र थमा नहीं
महाभारत आज भी जारी है।

यज्ञ से तू ज्वाल ले
और बनना है तो बन
जलती मशाल
जो जलती है तो
धधकता है अंधेरा
अंधेरा जो अभिमान है
अंधेरा जो दिन में
काला मेघ है
और दिन ढले जो सूर्य का अवसान है।

गर जलना ही है तो यज्ञ की आहुति बन
गर जलना ही है तो
ज्वाल बन, अंगार बन
सुन अहिल्या!
मत बन
राह का पाषाण खण्ड।

यह काल रामायण नहीं
यहां आज सुर–गायन नहीं
यह काल है महाकाल का
सौ फन उठाये व्याल का
जो बनना है तो तीर बन
तू पार्थ के गांडीव का।

यह जगत जो आज है
अंगार–पर्ण
तू शिखा–सी हो
न आज तुषार बन
इस धर्म के संग्राम में

संघर्षरत अविराम बन
जो बनना है तो
सुन अहिल्या!
धनुष की टंकार बन।

सुन अहिल्या!
मत बन
तू राह का पाषाण–खंड।

पुष्पा अरोरा
कैम्पस स्कूल, पंतनगर,
उधम सिंह नगर, उत्तराखंड

वह आम का बीज

आज का समय
कब आया और कब गया
यह पता न लगा,
एक–एक साँस कब आकर चली गई
यह पता न लगा।

मैंने जो आज बोया था वह
'आम का बीज'
कब वो बढ़ने लगा
यह पता न लगा।

काफी वक्त सोते रह गये हम
कल–कारखानों वाहनों
ने कत्ल कर दिया पर्यावरण का,
यह पता न लगा।

कब जागेगी हमारी नींद
खुली आँखों से भी वो नहीं दिखा
सारी दुनिया काले धुएं में कब खो गई,
यह पता न लगा।

आकाश, जल, धरती
सभी की पवित्रता
को अपवित्र कर
आज मानव भूल गया
पर्यावरण को
यह पता न लगा।

सपनों से सुन्दर संसार में
जहर की तरह
कब घुल गया प्रदूषण नामक पाप
यह पता न लगा।

उगते बीज की आवाज आई
बिन पानी, हवा मिट्टी के
मर जाऊँगा मैं
मुझे बचा लो, हे मानव
जागो! जागो! जाग तो जाओ आज।

अरे! आज मेरे ''आम के बीज'' ने
मेरी आँखें खोल दीं !
मैं क्या कर रही थी
अपनी ही दुनिया में जहर भर रही थी
यह पता न लगा।

हेमा रावत
राष्ट्र शक्ति विद्यालय,
हस्तसाल, दिल्ली

नशा नाश की जड़ भैया...

नशा नाश की जड़ है भैया, इसका काला है संसार।
मानवता के इस कलंक पर, बिखर गए लाखों परिवार।

बाल, वृद्ध और युवा वर्ग पर इसने अपनी धाक जमाई,
फूँक दिया पुरखों की दौलत भूखों मरने नौबत आई।
जुदा हुए रिश्तों से रिश्ते बढ़ती चली खूब तकरार,
नशा नाश की जड़ है भैया, इसका काला है संसार।

धूम्रपान और मद्यपान ने कब किसको आबाद कराया,
दसों दिशाएं शून्य पड़ गईं नीरव जीवन इसकी छाया।
गली–गली में नशा फूलता बना दिया हमको लाचार।
नशा नाश की जड़ है भैया, इसका काला है संसार।

खो जाता है नशे की धुत में अपना यौवन, अपना जीवन,
चिन्तन–शक्ति भी है जाती, तन–मन होता सदा अपावन।
चलो आज से कसम उठा लें, सादा जीवन–उच्च विचार।
नशा नाश की जड़ है भैया, इसका काला है संसार।

गली–गली में नशा मुक्ति के ध्वज–वाहक बन मान बढ़ाओ
हर्षित होगा सबका जीवन मानवता के लाल कहाओ।
'नशा–मुक्त जीवन प्रयास' से धरती मां का करो श्रृंगार।
नशा नाश की जड़ है भैया, इसका काला है संसार।

सुभाष कुमार
ओ.पी. जिंदल स्कूल,
रायगढ़, छत्तीसगढ़

गा संयम के गीत

अहिंसा है जीवन में बहुत जरूरी
क्योंकि वह करती है प्रेम की कमी पूरी
यदि हिंसा का मार्ग अपनाओगे
तो जीवन में बहुत पछताओगे।

कर्मों का फल भोगना ही पड़ेगा
यह सच्चाई भुलाओगे
गर चाहते हो जीवन में आनंद पाना
तो अहिंसा का मार्ग जरूर अपनाना।

अहिंसा जीवों के प्रति सहिष्णुता लाती है
हमें मिलजुल कर रहना सिखाती है
अहिंसा हमें सुख का मार्ग दिखाती है
मनवाणी तथा कर्मों को विशुद्ध बनाती है।
केवल वध नहीं है हिंसा की परिभाषा
असत्य भाषण व दुख पहुंचाना हिंसा की ही है भाषा
अहिंसा तो है जीवन का मूल
इसीलिए इसको तू प्राणी कभी न भूल।

अहिंसा को ही प्रश्रय देना है हमारा आशय
इसके अभाव में सूख जायेगा
जीवन का जलाशय।
अहिंसा की युक्ति अपनाओगे
तो भ्रम से मुक्ति पाओगे।

अहिंसा तो है ऐसी प्राणदायिनी संजीवनी
कुविचारों के हलाहल को दूर कर
जीवन को महकाती है ये प्रबोधिनी।
यदि जीवन के आँगन को महकाना है
तो अहिंसा को ही शस्त्र बनाना है।

'अहिंसा परमो धर्मः' नहीं है
यह केवल पुस्तकीय ज्ञान
सैद्धान्तिक रूप से ही
पालन करने पर हो इसका मान।
विश्व को हिंसा मुक्त बनाना है
भारत को पुनः विश्व गुरु
के पद विभूषित करवाना है।

सत्य, अहिंसा के मनभावन गा संयम के गीत
करुणा के कोमल हाथों से जला दया के दीप।
'जिओ और जीने दो' जीवन का हो यह नारा
जिसने अंगीकार किया, वह कभी नहीं है हारा

निवेदिता टंडन
भारती पब्लिक स्कूल,
स्वास्थ्य विहार, दिल्ली

बेटी बोली कोख से

कली हूँ जरा सा, खिलने तो दो तुम,
मुझे अपनी मां से, मिलने तो दो तुम।

मैं चाहती हूं उसके आंचल को छूना,
मेरे बिन उसका भी आंगन है सूना,
बाहों के झूले में झूलने तो दो तुम,
मुझे अपनी मां से मिलने तो दो तुम।
कली हूँ जरा सा, खिलने तो दो तुम।

हाथों में उसके पल दो पल मैं खेलूँ,
रख के सर गोदी में निंदिया ही ले लूँ।
उस मां की ममता पिघलने तो दो तुम,
मुझे अपनी मां से मिलने तो दो तुम।
कली हूँ जरा सा, खिलने तो दो तुम।

हक न क्या मुझको कि आंखे मैं खोलूँ,
इस दुनिया में आकर अपने मुँह से मैं बोलूँ।
रूकी दिल की धड़कन हिलने तो दो तुम,
मुझे अपनी मां से मिलने तो दो तुम।
कली हूँ जरा सा, खिलने तो दो तुम

जसविन्दर कौर
ममता निकेतन कॉन्वेट स्कूल,
तरनतारन, पंजाब

रोशनियों के बावजूद अंधेरा है

वैज्ञानिक भी क्या सिर–पैर की उड़ाते हैं
सूरज ठंडा हो रहा है, धरती गर्म हो रही है
चांद के धब्बे और उभर रहे हैं।

कुछ नदियां सूख जाएँगी
जंगल खत्म हो जाएंगे
समन्दरों के पानी में से
अमृत की बजाय जहर निकलेगा
इसलिए देवता सब इस काल में
मंथन करने नहीं आएंगे
रह गये धरती पर
अब ज्यादा दिन नहीं रह पाएंगे

यह सब झूठ है
अब जलाने और दफनाने को
मुर्दों का इंतजार नहीं करना होगा
इंसान ने जिंदा लोगों को जलाने
दफनाने का फन सीख लिया है।
भून डालो बम से
कत्ल कर दो, जला दो
किसी को भी सादे तरीके से
बस कुछ ऐसा कर दो
उजाड़ दो आबादी को
बस जालिम मक्कार, फरेबी
दगाबाज को बच जाने दो
इन्हें ही झेलने दो सजा
अपने किए–कराए की
मौत को भी खौफ है
इस खौफनाक इंसान से।

एक दिन ऐसा आयेगा
जब इंसान इंसान के लिए तड़पेगा
और तभी मैं जिंदा होने की सोचूंगा
अभी तो सभी अपनी–अपनी बारी के इंतजार में है

किसे सादा दफनाना है
किसे बम से उड़ाना है
किसे जलाना है
किसे यूं ही सड़ने–गलने को फेंकना है
अहिंसा ने डाला घेरा है
रोशनियों के बावजूद अंधेरा है।

रानी सोनी
भारती पब्लिक स्कूल
स्वास्थ्य विहार, दिल्ली

एकता है शक्ति हमारी

एकता की है मजबूत डोर,
चाहे लगाए कोई जोर,
एक टक न हिला सकेंगे,
डाली से न फूलों को तोड़ सकेंगे।
हाँ, हम मानवीय एकता पर विश्वास करेंगे।

चाहे आ जाए पग–पग काँटे,
चाहे हम जीवन रास्ते पर सो कर काटें,
एक होकर सबका सामना करेगें
आंधी, तूफानों से हम न डरेंगे
हाँ, हम मानवीय एकता पर विश्वास करेंगे।

जीवन रूपी बगिया को एक होकर महकाएँगे,
एक होकर जीवन में मधुर संगीत हम गाएँगे,
एकता है शक्ति हमारी,
संसार को हम जीत जाएंगे।
हाँ, हम मानवीय एकता पर विश्वास करेंगे।

आतंक, शोषण, भ्रष्टाचार से
एक होकर हम लड़ जाएंगे,
अंधे के हाथों लाठी देकर,
रास्ता उन्हें हम पार कराएंगे।
हाँ, हम मानवीय एकता पर विश्वास करेंगे।

जाति, धर्म, वर्ण के भेद को भूल,
मानवीय एकता में विश्वास कर,
ऊँच–नीच की दीवार को तोड़,
लालच, स्वार्थ के मोह जाल को छोड़ेंगे
हाँ, हम मानवीय एकता में विश्वास करेंगे।

जानकी झा
एल.आर. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल,
गन्धरपुर,कटक, उड़ीसा

वक्त नहीं

आज माँ की लोरी का अहसास तो है
पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं।

हर खुशी है लोगों के दामन में
पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं।

दिन–रात दौड़ती दुनिया में
जिन्दगी के लिए ही वक्त नहीं

सारे नाम मोबाइल में हैं
पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं।

आंखों में है आज सबके नींद बड़ी
पर सोने के लिए वक्त नहीं।

गैरों की क्या बात करें
जब अपनों के लिए ही वक्त नहीं।

दिल है आज बहुत घावों से भरा
पर रोने के लिए वक्त नहीं।

पैसों की होड़ में आज ऐसी है दौड़
कि रुकने के लिए वक्त नहीं।

पराए अहसास की क्या कद्र करें
जब अपने सपनों के लिए ही वक्त नहीं।

आज इंसान सब कुछ भूल रहा है
अब किसी को याद करने का ही वक्त नहीं।

राजकुमारी
राबिया गर्ल्स पब्लिक स्कूल,
कटरा दिना बेग, लाल कुआं, दिल्ली

अब सबको जगाना है

ईश्वर ने हमें दिया क्या शानदार तोहफा
जीने का सही दिया था फलसफा,
चारों तरफ थी हरियाली,
हर चीज की बात थी निराली।

फिर एक दिन मनुष्य ने अपना दिमाग चलाया,
हर चीज में फायदा पाने का मन बनाया,
अंधाधुंध की पेड़ों की कटाई,
उसकी रग–रग में निर्दयता थी छाई।

प्रदूषण मनुष्य ने इतना बढ़ाया,
सबका जीवन नरक बनाया,
अब चारों और अंधेरा है,
कहीं न दिखता सवेरा है।

अभी भी मनुष्य को होश न आया,
उसे चाहिए बस ऐश और माया,
कहीं पर बाढ़ कहीं पर सूखा,
मानव मर रहा है भूखा।
है इसका बस एक उपाय
सबको जागरूक हम बनाएं
पर्यावरण को हम बचाएं।

धरती को है अगर बचाना,
पेड़ों को अधिक से अधिक लगाना,
मेरा तो है यह कहना
पर्यावरण को बचाना है
यह संदेश जन–जन तक पहुंचाना है,
मैं तो अब जाग उठा,
अब सबको जगाना है।

गौरव कुमार
स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल
सै.–17 हुड्डा, यमुना नगर, हरियाणा

जीना सीखो

जला सको तो दीप जलाओ
हृदय जलाना मत सीखो।
बढ़ा सको तो ज्योति बढ़ाओ
तिमिर बढ़ाना मत सीखो।

लगा सको तो बाग लगाओ
आग लगाना मत सीखो।
खिला सको तो पुष्प खिलाओ
उन्हें कुचलना मत सीखो।

सिखा सको तो प्रेम सिखाओ
द्वेष बढ़ाना मत सीखो।
मिटा सको दूरियां मिटाओ
उन्हें बढ़ाना मत सीखो।

भला किसी का कर न सको तो
बुरा किसी का मत करना ।
खुशी किसी को दे न सको तो
गम भी देना मत सीखो।

कर पाओ तो सेवा कर लो
फल की इच्छा मत सीखो।
कर्म करो कर्मवीर बनो तुम
अकर्मण्य बनना मत सीखो।

जागो, उठो व बढ़ो लक्ष्य तक
आलस करना मत सीखो।
जीवन है अनमोल तुम्हारा
जीवन जीना तुम सीखो।

सरिता मिगलानी
केंटरबरी पब्लिक स्कूल,
बी– ब्लॉक, यमुना विहार, दिल्ली

स्वर्ग धरा पर लाना है

पर्यावरण प्रदूषण है जहाँ,
नर नहीं नरक बसता है वहाँ।

जहाँ–जहाँ है गंदी बस्ती,
वहाँ–वहाँ बीमारी बस्ती।

कान फाड़ती आवाजें होतीं,
पर्यावरण को प्रदूषित करतीं।

गाड़ी–मिलों ने धुआं फैलाया,
इन्होंने प्रदूषण का जाल रचाया।

नदी जल में मिलाया गंदा जल,
प्रदूषित सारा किया गंगाजल।

परमाणु–परीक्षणों का बढ़ा प्रचार,
यों हुआ भूमि प्रदूषण का प्रसार।

पर्यावरण को शुद्ध बनाना है,
स्वर्ग धरा पर लाना है।

हर एक को एक पेड़ लगाना है,
अपना जीवन धन्य बनाना है।

डॉ. महावीर प्रसाद जैन
रा. फतह उच्च मा. विद्यालय,
उदयपुर, राजस्थान

मौत के मत सामान चुनो

हमें दिया है धरती ने
जीवन का ये वरदान सुनो,
उसके अहसानों को मानो,
मौत के मत सामान चुनो।

सुनो धरा पर अगर एक भी
वृक्ष नहीं रह जाएगा,
न तो वर्षा होगी,
प्राणी प्यासा ही मर जाएगा।

हरियाली, खुशहाली चुन लो,
मत लोगों शमशान चुनो।
उसके अहसानों को मानो,
मौत के मत सामान चुनों।

जिस धरती ने तेरे भीतर
प्राणों का संचार किया,
उस धरती के सीने में,
तूने खंजर से वार किया।
अब तो तौबा कर लो तुम,
हैवान नहीं, इंसान बनो।
उसके अहसानो को मानो,
मौत के मत सामान चुनो।

•सुरेन्द्र कुमार,
वेकेंटेश्वर इंटरनेशनल स्कूल,
द्वारका, नई दिल्ली

गुरूमंत्र

ज्ञानार्थ आना सेवार्थ जाना, अपने सारे वचन निभाना।
काम सभी तुम अच्छे करना, शिक्षालय का मान बढ़ाना।।

दीन–हीन का दर्द समझना, गांधी जी का जंतर जपना।
सबसे पीछे खड़े जनों की, सेवा करने का व्रत रखना।।

सही–गलत में अंतर करना, न्याय धर्म समता अपनाना।
कष्ट उठाकर सही मार्ग पर, बढ़ते जाना मत घबराना।।

भारत माता के चरणों में, श्रद्धा से तुम शीश झुकाना।
देश–विदेश कहीं भी रहना, राष्ट्रभक्ति के गीत सुनाना।।

संवेदन से रहना झंकृत, नहीं कभी पत्थर दिल बनना।
दया क्षमा वात्सल्य प्रेम से, अंतर हो परिपूरित अपना।।

सीमा पर हिम में जो अपनी, धरती की है रक्षा करते।
सघन वनों में मरू में गिरि में, लाख दिक्कतें सहते रहते।

ऐसे वीर जवानों के बलिदानों को तुम नहीं भूलना।
भारत की सेना में जाने का मौका तुम नहीं चूकना।।

दुनिया के कवियों भक्तों की, वाणी को तुम पढ़ते रहना।
महाजनों के पद्चिन्हों पर, संभल–संभलकर चलते रहना।

सुंदर भूषा, सुंदर भाषा, सहज सौम्य तुम बनकर रहना।
निर्मल चित्त शांत मस्तक हो, दोषों से नित बचकर रहना।

कपट जाल में कभी न फँसना, बुरे काम से रहना दूर।
धन को सब कुछ नहीं मानना, बनना मत ऐसा मजबूर।।

धर्म जाति भाषा के कारण, कोई छोटा–बड़ा नहीं है।
लिंग भेद औ रूप–रंग का, पैमाना भी सही नहीं है।।

सतत कर्मरत रहकर अपने, सभी लक्ष्य पा जाना तुम।
मातृ–पितृ–गुरु एवं धरती के ऋण सभी चुकाना तुम।।

प्यारे बच्चों! अपने गुरु के दिए मंत्र अपनाना तुम।
सबको तुम पर गौरव होगा, जीवन सफल बनाना तुम।।

डॉ. रमेश प्रसाद द्विवेदी
दिल्ली पब्लिक स्कूल, रिसाली सेक्टर,
भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़

संघर्ष व मुक्ति

नशा विकराल रूप लिए
छा गया मेरे जीवन में,
कैसे कहूँ, जीवन मृत हो गया।

आया था फलदार वृक्ष बनने मैं
लेकिन पौध से पहले ही कीट जड़ गया।
चीत्कार उठा है मन,

नन्हीं कोपलों को जीवंतता से पहले ही
यम की गोद में सुलाने से।

सालता है यह रोग
नासूर जो बन गया
लगता है यों
मानो एक अश्वत्थामा
अभिशाप से ग्रसित
मैं भी हूँ।
चाहता तो हूँ
मद्य से विमुख हो जाऊँ
पर कैसे ?
न मिलने पर रोगग्रस्त हो जाता हूँ।

समझता हूँ, समझता तो हूँ
कि ये नशा सिर्फ़ और सिर्फ़
मुझे ही नहीं निगल रहा,
निगल रहा है मेरे जीवन
से जुड़े सारे तत्व
धीरे–धीरे
ले रहा है अपनी आगोश में।

जी तो चाहता है
छीन लूँ खुद से पिता होने का गौरव,
सम्मान–अभिमान,
लेकिन क्या यह भी
अपने को एक और नशे की

ओर धकेलना न होगा ?
क्या यह अपनी संतान के साथ
एक और अन्याय न होगा ?
जीवन की इस सच्चाई को
स्वीकार चुका हूँ मैं।

उठाऊँगा दंड, करूँगा न्याय
दिलाऊँगा मुक्ति इस पीड़ा से सभी को,
स्वयं को करूँगा मुक्त
इस अभिशाप से
बनाऊँगा इनका भविष्य मैं
नशामुक्त जीवन से
आधार नहीं नींव हूँ मैं
इस समाज की,
हौंसले बुलंद हैं मेरे
नशे पर विजय पाकर रहूँगा।

मंजू गुप्ता,
एन. के. बागडोदिया पब्लिक स्कूल,
द्वारका, सैक्टर–4, दिल्ली

क्योंकर नहीं समझता

जो तोड़ता किसी को, क्योंकर नहीं समझता,
कि तोड़कर किसी को, खुद भी तो टूटता है।

दुख देके दूसरों को, खुद भी कहां वो बचता,
खुद को भी तो वो अक्सर पीड़ा से जोड़ता है।

बनकर हथौड़ा अक्सर लोहा ये सोचता है,
पत्थर से है बड़ा वो पत्थर को तोड़ता है।

पर क्या कभी ये सोचा लोहे ने हथौड़े के
पत्थर नहीं वो खुद को भीतर से तोड़ता है।

विजया बख्शी
स्वामी प्रीतमदास गोविन्द राम अकादमी
खण्डवा रोड़, इंदौर, मध्य प्रदेश

चाह यही ...

भारत वर्ष की संस्कृति पर
हमको नाज हुआ करता था
श्रेष्ठ परम्पराओं को निरख
ये जग हैरान हुआ करता था
राष्ट्राभूषण उन मूल्यों को
जीवन का आधार बनाएँ
चाह यही भारत फिर से
विश्वगुरु कहलाए।

जिन उच्चादर्शों पर गौरव था
संस्कार जो खूँ सा रग में बहता था
हुआ पश्चिम का प्रभाव कुछ ऐसा
स्व–सभ्यता पर अब है शर्मिंदा
साख जो अति प्राचीन थी
उसको हम जीवन्त बनाएँ
चाह यही भारत फिर से
विश्वगुरु कहलाए।

स्वर्णिम युग कहलाता था वो
जब 'सत्यमेव जयते' का स्वर था
'अहिंसा परमोधर्म' नीति पर
भारत का जन–जन चलता था
महावीर–गौतम–गांधी के,
पद–चिह्नों पर फिर बढ़ जाएँ
चाह यही, भारत फिर से
विश्वगुरु कहलाए।

यह भारत की ही संस्कृति है
जो सब धर्मों का आदर करती
श्रेष्ठ भाव सबके ग्रहण कर
स्व–अस्तित्व को अक्षुण्ण रखती
ऐसे 'धर्म–सहिष्णु देश में
गोधरा कांड न पुदनः दोहराएँ
चाह यही, भारत फिर से
विश्वगुरू कहलाए।

पन्ना, भगत, आजाद के
त्याग–बलिदान को याद करें
माता–पिता के राम–श्रवण बन
स्वयं को हम उऋण करें
आज्ञाकारी, सेवाभावी बन
निज कर्त्तव्यों को पूर्ण निभाएँ
चाह यही, भारत फिर से
विश्वगुरु कहलाए।

सादा जीवन उच्च विचार
कायल था जिस पर संसार
न जीवन में अब रही सादगी
विचार उच्च हैं? ये उठ रहे सवाल
आचार–विचार के आडंबर तज,
शुद्धारचण व सादगी लाएँ।
चाह यही भारत फिर से
विश्वगुरु कहलाए।

जहाँ द्रोण और एकलव्य की
हो गुरु–शिष्य परम्परा
योग, आयुर्वेद, अध्यात्म
से हो जहां समृद्ध धरा
ऐसे अद्भुत राष्ट्र को
सोने की पुनः चिड़िया बनाएँ
चाह यही भारत फिर से
विश्वगुरु कहलाए।

'जन–गण–मन', तिरंगे और
राष्ट्रभाषा का मान करें
आह्वान करे जब भारत माँ
प्रागोत्सर्ग हेतु तत्पर रहें
प्रेरक, माता–पिता,गुरू के
आदर्शों को सादर अपनाएँ
चाह यही, भारत फिर से
विश्वगुरू कहलाए।

'वसुधैव कुटंबम' का देश है यह
अलगाव की भाषा उचित नहीं
गीता के उपदेश जहाँ
अकर्मण्यता शोभा देती नही।
जन–कल्याण का भाव संजोए
विश्व–शांति अभियान चलाएं।
चाह यही, भारत फिर से
विश्व गुरू कहलाए।

कमला
राष्ट्रशक्ति, उत्तम नगर,
नई दिल्ली

दौर

जो है चतुर–चालाक अब जोड़–तोड़ में दक्ष,
कामयाब है अब वही, कुर्सी पर अध्यक्ष।

मंत्री मण्डल का हुआ ऐसा कुछ विस्तार,
मंत्री पद पर हो गया, अब सबका अधिकार।

पाँच साल के बाद फिर आया आज चुनाव,
फिर वादों की लहर पर है कुर्सी की नाव।

कुर्सी ले जिसने किया, भारत को बरबाद,
संसद में वो कह रहे 'कुर्सी जिन्दाबाद'।

हाथ भले लम्बे सही पर छोटा कानून,
क्योंकि इससे हैं बड़े कुर्सी के नाखून।

हाथ पसारे माँगता, वोटर का मोहताज।
इक राजा भी हो गया एक भिखारी आज।

अर्पणा वोहरा
अमरावती विद्यालय,पंचकुला,
हरियाणा

रोको उन्हें जो.....

कहते हैं लोग पीते हैं गम भुलाने के लिए,
सोचती हूं वे पीते हैं गम में डूब जाने के लिए।

उन्मादों के उत्पात ने, चरित्र विकृत कर दिया,
तन नुमा इस मन्दिर में नशे ने घर किया,
युवा पीढ़ी नशे में धुत उत्कर्षता को पा रही।

क्यों नहीं समझते लोग कि जीवन है अनमोल,
नशे में जानवर बन जाते हैं क्या यही है जीवन का मोल,
जिंदगी की हकीकत को छोड़, पतन की ओर बढ़ चला,
सुख की तलाश में, मानव जिंदगी से दूर निकल चला।

पत्नी पल–पल खुशी के लिए तरसती रही,
हर रात मयखाने में, महफिलें उनकी सजती रहीं,
छोड़कर उन्हें जिंदगी, मौत की तरफ बढ़ती रही,
पल–पल छीन खुशियां, दुःखों को निमंत्रण देती रही।

रोको उसे जो किसी के बुढ़ापे का सहारा है,
मां के आंचल का फूल, पत्नी की मांग का सितारा है
बच्चों के सिर का साया है वह किसी बहन का दुलारा है,
बुझी है हर आस आंखों में अश्रुओं की धारा है।

मीना वर्मा
बाल भवन पब्लिक स्कूल,
ए–ब्लॉक,स्वास्थ्य विहार,
दिल्ली

अस्तित्व

माँ तुम कितनी खुश थी
जब सुनी थी मेरे आने की खबर
और होती भी क्यों न
तुम्हारे पवित्र प्रेम का एक
अंश थी मैं।

तुम्हें माँ बनने का
गौरव प्रदान कर रही थी मैं,
सृष्टि में यही तो एक
देवत्व व्यक्तित्व है।
वर्तमान में सब कुछ
बदल गया है
लेकिन नहीं बदली
तुम व तुम्हारा स्नेह।

मैं उस सूरत को
देखने के लिए व्याकुल थी,
इंतजार कर रही थी
तुम्हारी जिंदगी में आने का

घड़िया कोटें नहीं कट रहीं थीं।
सोचती थी मैं

जो मेरे एक–एक पल का
इतना ख्याल रखती है
जो रात–दिन मेरे बारे में
ही सोचती है।
जब मुझे अपनी बाँहों में
ले सीने से लगायेगी
वे पल मेरे और
तुम्हारे लिए कितने अविस्मरणीय होंगे।

आज तुम मेरे उस
धुंधले रूप को
देखने–महसूस करने जा रही हो
तुम्हारी वह खुशी
मैं देख तो नहीं सकती

लेकिन महसूस जरूर कर सकती हूँ।
काश! विज्ञान मेरे लिए भी
कुछ ऐसा चमत्कार कर सकता
ताकि मैं भी कर सकती
तुम्हारा दीदार

लेकिन ये क्या माँ
तुम मुझे अपनी दुनिया
में आने से पहले ही
खत्म क्यूँ कर देना चाहती हो
क्यूँ करती हो अपने से जुदा।

इस समाज ने ही मुझे
लक्ष्मी का रूप मान पूजा है
आज तुम इस लक्ष्मी को
क्यूँ पाना नहीं चाहती
क्यूँ कर रही हो
अपनी कोख में ही
मुझे खत्म।

इस पुरूष प्रधान देश में
स्त्री का इतना निरादर
कैसे, कर सकती हो माँ ?
गर रहा ऐसा ही रुख
हर माँ का
तो खतरे में पड़ जाएगा
इस सृष्टि से मानव का अस्तित्व।

प्रतिभा शर्मा
स्वामी प्रतिमदास गोविन्दराम एकेडमी,
खण्डवा रोड, इंदौर, मध्यप्रदेश

अगर चाहते हो...

अगर चाहते हो तुम आगे बढ़ना,
तो पूजा समझकर हर एक कर्म करना।

राहों में कितनी ही बाधाएं होंगी
आलोचना की भी बौछारें होंगी
विचलित न होना, संयम में रहना
तभी तो मिलेगा सफलता का गहना।

यह तुम न सोचो सराहे जाओगे
यह तुम न सोचो तारीफें पाओगे
सदा ध्यान अपना लक्ष्य पे रखना।
तभी पूरा होगा, तुम्हारा हर सपना

मेहनत से अपना मन न चुराना
आलोचना में समय न गंवाना
रह जाओ चाहे बिल्कुल अकेले
कभी झूठ का तुम न दामन पकड़ना।

सफलता के मद में न तुम चूर होना
मानव मूल्यों को कभी तुम न खोना
कभी भी किसी को कटु वचन न कहना
विनम्रता के साथ, मिलजुल कर रहना।

इंसान हो इंसानियत को अपनाना
अणुव्रत की गरिमा को सदा तुम बनाना
शालीनता से तुम बात करना
सफलता के सोपान प्रतिदिन चढ़ना।
अगर चाहते हो तुम आगे बढ़ना
तो पूजा समझकर हर एक कर्म करना।

अपर्णा कश्यप
केन्टरबरी पब्लिक सै. स्कूल,
बी–ब्लॉक यमुना विहार, दिल्ली

दहेज एक श्राप

भारतीय संस्कृति देश की अमूल्य धरोहर,
संस्कारों की खान भारत, रमणीय मनोहर,
समस्त भुवन में इसका है मान,
कुछ अलग है मेरी धरती की शान।

सुनते हैं नारी पूजी जाती है यहीं,
मां देवी मानी जाती है यहीं,
बहन धागा रक्षा का बांधती जहां,
भाई प्राण न्यौछावर कर देता जहां।

पिता का वरद हस्त जहां बेटी पर,
उसी घर में उड़ती, फैलाए अपने पर,
मां जहां लोरी गा गा सुलाती जिसको,
दादी हर खुशी में गले लगाती जिसको।

वो सखियों का छेड़छाड़, वो पिया मिलन की आस,
जयमाल के समय तेज चलती उसकी सांस,
वो मौसी की बलैया, भाभी का आशीष,
दादा जी दे रहे मन से शुभाशीष।

वही अबोध उम्र में ब्याह दी जाती है,
कभी बलि बेदी पर दुलारी चढ़ा दी जाती है,
सौंप दी जाती है दहेज के भूखे भूड़ियों को,
अन्जान अज्ञान कैसे काटेगी इन बेड़ियों को।

मेहंदी रचे हाथ राख में रंग जाते हैं,
हल्दी, महावर धूल से सन जाते हैं,
बालियाँ, झुमके, चूड़ी, पायल लुट जाते हैं,
मुस्कुराहट के दिन छिन जाते हैं।

सारा अस्तित्व खो देती है बेटी,
मायके में जो थी खुशियों की पेटी,
दहेज के लोभी निगल लेते हैं बचपन,
भावनाओं से क्या, उन्हें चाहिये केवल धन।

बहुत हुआ अब इस व्यापार को रोको,
समाज की सड़ी गली कुरीति को तोड़ो,
लाडली अब किसी की ना जलायी जाएगी,
इज्जत उसकी ना अब मिट्टी में मिलायी जायेगी,
फिर कर दो उस पर प्रेम की वृष्टि,
इसी में हो हम सबकी संतुष्टि।

समाज को इस शाप से मुक्त करायें,
जो आज तक न हुआ वह कर दिखाएं,
आओ बन जाएं इस मुहिम का हिस्सा,
समाप्त कर दें ये क्रूर दहेज का किस्सा।

राधा रानी राव
ओ.पी. जिंदल स्कूल,
रायगढ़, छत्तीसगढ़

मानवता अपना लो

विश्व युद्ध की प्रथम विभिषिका को बंदी कर डालो,
तुम मानव हो मानवता को जग में भर डालो।

शांति का विहान हो, प्रेम का प्रचार हो,
मित्रवत रहे सभी सौहार्द से भरे सभी।
विश्व–शांति के लिए, मतभेदों को मन से तुम टालो,
तुम मानव हो मानवता को जग में भर डालो।

शस्त्रों का विरोध हो,शीत–युद्ध निषेध हो,
घृणा को मिटाओ तुम, जरा कदम बढाओ तुम।
मानव हो, मानव कल्याण के आविष्कार ही कर डालो,
तुम मानव हो मानवता को जग में भर डालो।

मन्जु गुप्ता
वर्धमान शिक्षा मन्दिर,
सी.सै. स्कूल, दरियागंज
दिल्ली

अणुव्रत अपनाइये

निस्सार जगत का सत्य और सार जो चाहिए,
जीवन में हर पग पर हो दृढ़ अणुव्रत अपनाइए।
आपाधापी और तृष्णा हैं सब पापों के मूल
ईर्ष्या बैर या नफरत, सब में हिंसा के शूल।

झूठ, फरेब व जालसाजी, खूब रही है फल–फूल
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, क्यूँ गया मानव भूल
जीवन–मृत्यु से तुझको अगर चिर विश्रांति चाहिए,
जीवन में हर पग पर हो दृढ़, अणुव्रत अपनाइये।

मानवता की राह पर तू दीपक जो इक बन जाएगा,
अंधकार हृदय का मिटा, जग रोशन कर पाएगा।
आत्म–विकृति व आतप हर, कण–कण को महकाएगा,
पल–पल का सद्भाव ही, मन–प्रसून खिलाएगा।
धरणी पर रामराज्य–सा, मृदुल स्वर्ग साकार चाहिए,
जीवन में हर पग पर हो दृढ़ अणुव्रत अपनाइए।

यम–नियम–प्राणायाम से, हो जीवन पूर्ण संयमित
रोग–शोक से मुक्त रहे, तन भी न होगा कलंकित।
विषमता की छटपटाहट से, मन–मयूरा न हो आतंकित
प्रेम–भक्ति से वसुधा का, कण–कण हो जाए सिंचित।
तन–मन–आत्मा को, जो शक्ति, शांति, भंडार चाहिए
जीवन में हर पग पर हो दृढ़, अणुव्रत अपनाइए।

डा. भामा अग्रवाल
भिवानी पब्लिक स्कूल,
सेक्टर–14, भिवानी, हरियाणा

गुलाब बनकर महकेगा तू

जब भले–बुरे का होगा तुझे ज्ञान
हिंसा व्याभिचार के परिणाम को जाएगा जान
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब लक्ष्य होगा तेरा सुखमय संसार,
ईर्ष्या को छोड़ करेगा सब पर उपकार
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब द्वेष छोड़ तेरे हृदय में बहेगी रसधार,
सबको गले लगा, छोड़ेगा अपना अहंकार
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब किसी व्यसन को फटकने देगा पास
सामाजिक कुरीतियों के भी तोड़ेगा तू पाश
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब किसी दीन की न तू आह लेगा
हर गिरते को सहारा तू देगा
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब प्राणीमात्र के दुःख–दर्द से न रहेगा अंजान
जुटती भीड़ में बनायेगा अपनी अलग पहचान
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब छल–कपट का न होगा तेरे मन में डेरा
सूर्य बन करेगा किसी के जीवन में सवेरा
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब न करेगा तू कलुषित पवित्र नदियां
न काटेगा जंगल न उजाड़ेगा बगियां
गुलाब बनकर महकेगा तू।

जब अणुव्रत के नियमों का करेगा तू पालन
शुभ संकल्पों से लाएगा देश में सुशासन
गुलाब बनकर महकेगा तू।

सरोज कश्यप
केन्टरबरी मॉडल पब्लिक स्कूल,
विजय पार्क, दिल्ली

'एक रुप सब माँही'
पात्र–परिचय

बालिकाएंः , तुलसी,
गीता, कुशन,
गुरूग्रंथ, बाइबल,
पांचाली, बालक (बालक 1,2,3,4) कृष्ण, गुरूनानक, ईसा मसीह (क्रौस के साथ)
कौरव सेना : (दुर्योधन, मामा शकूनी, कर्ण, दुशासन और एक दो बच्चे इच्छानुसार जोड़े जा सकते हैं),
पाण्डव : (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव)
पांच प्यारे : (पांच हष्टपुष्ट बालक सरदार की भूमिका में, कबीर , अल्लाह (अल्लाह की भूमिका करने वाला बालक मंच के पीछे से ही अपने संवाद बोलेगा, मंच पर नहीं आयेगा)

मंच पर प्रकाश उभरता है। मंच को मध्य में तुलसी का पौधा है (जो कि एक बालिका बनी है उसकी पीठ पर गमले की आकृति बना कर लगा दी गई है और उस पर तुलसी के पौधे को सुव्यवस्थित किया गया है। दर्शकों को बालिका नहीं दिखाती। शुरूआती में केवल वो गमला ही दिखता है) जो कि मंच के मध्य में रखा है। मंच के दांयी तरफ दो टेबल हैं और वांयी तरफ भी दो टेबल है। दांयी तरफ वाली प्रथम टेबल पर एक बालिका बैठी है। जिसके हाथों में (हस्तनिर्मित) गीता है। जो खुली हुई है। बालिका के वस्त्रों का रंग एवं गीता का रंग दोनों एक समान हैं बालिका उसे इस प्रकार खोल कर हाथों में लिए बैठी है ताकि दर्शकों को किताब पर लिखा गीता पूर्ण रूप से दिखाई दे। टेबल के पीछे भगवान कृष्ण खड़े हैं ताकि इर्शक पूर्ण रूप से उन्हें देख सकें। टेबल पूर्णरूप से फूलों से सुसज्जित है। दूसरी टेबल पर एक दूसरी बालिका कुरान लेकर बैठी है। उसके वस्त्रों का रंग एवं कुरान का रंग एक समान है। तीसरी टेबल पर तीसरी बालिका गुरूग्रंथ साहिब लेकर बैठी है। गुरूग्रंथ साहिब और बालिका के वस्त्रों का रंग एक समान है। चौथी टेबल पर चौथी बालिका बाइबल लेकर बैठी है, बाइबल और चौथी बालिका के वस्त्रों का रंग एक समान है कुरान, गुरूग्रंथ बाइबल भी गीता के समान ही बालिकाएं इस प्रकार लेकर बैठी हैं कि दर्शकों को चारों ग्रंथों के नाम आसानी से दिखाई दें। कुरान की टेबल के पीछे बड़े–बड़े अक्षरों में 786 लिखा है उर्दू में गुरूग्रंथ साहिब की टेबल के पीछे गुरूनानक जी खड़े हैं और बाइबल की टेबल के पीछे क्रॉस के निशान के साथ ईसा मसीह खड़े हैं। सभी टेबल फूलों से सुसज्जित है। पार्श्व से प्रातः काल का संगीत से ओत–प्रोत हो रहा है। मंच पर प्रकाश तेज होता है, कुछ क्षण पश्चात तुलसी अपने स्थान से उठती है और दर्शकों से सीधे वार्तालाप करती है)

तुलसी : मैं स्वागत करती,
अणुव्रत में सबका आज।
सब मिलकर बैठो देखो
इस नाटक को आज।।
अणुव्रत की आचाय संहिता से,
छंटे अंधेरा आज।
ध्यान लगाकर देखेगा जो,
वो सीखेगा आज।।
दूर करें हिंसात्मकता को,

करें धार्मिक काज।
विश्व शान्ति लक्ष्य हो सबका,
संकल्प उठायें आज।।
निर्मल मन और उज्जवल तन हो,
ब्रह्मचर्य अपनायें आज।
व्यसनमुक्त जीवन को कर दें,
सफल बनायें जीवन आज।।
मैत्रियता का खेल–खेलकर,
सभी जड़ों को काटे आज।।
ऊंच नीच और भेद भाव की,
सभी जड़ों को काटें आज।।
मानवता है लक्ष्य हमारा,
मिलजुल कर सब रहना आज।
अणुव्रत के प्रांगण में सब,
खूब बजाना ताली आज।।
दिल खोल बजाना ताली आज।

मैं तुलसी आप सभी प्रणाम करती हूं। वैसे तो मैं घर–घर में पाई जाती हूं पर आज आपको मंच पर दिखाई दूंगी। आपने कल्पना भी न की होगी। यहां लोग रोज आते हैं और चले जाते हैं गीता, कुरान, बाइबल और गुरूग्रंथ साहिब से सबको अवगत करना यही मेरा कार्य है ताकि धर्मों के प्रति मन निर्मल और पवित्र बन सके। धर्म की मधुर डोर लोगों को मैत्रियता के बंधन में बांध सके। लगता है कोई आ रहा है। अरे ये नन्हें–नन्हें बच्चे हैं

आओ प्यारे बच्चों, आगे आओ।
(बच्चों का मंच पर प्रवेश, आपस में बातें करना)

बालक : वाह! यहां कितनी शान्ति है।
बालक : यहां मन को कितना सुकून मिल रहा है।
बालक : यहां आकर मन खुद ब खुद प्रफुल्लित हो रहा है।
बालक : (तुलसी से) आप कौन हैं ?
तुलसी : मैं हूं आप सबकी तुलसी दीदी। देखो प्यारे बच्चों तुम्हारे लिए यहां क्या है।
बालक : वाह गीता, कुरान, गुरूग्रंथ, बाइबल। यहां तो सभी महान् ग्रंथ हैं।
बालक : चलो देखते हैं गीता में क्या है ?
(सभी बच्चे गीता के आस–पास हाथ जोड़ कर बैठ जाते हैं उनके मुंह दर्शकों की तरफ हैं। विंग के एक तरफ से कौरवों का प्रवेश (दुर्योधन, शकुनी, दुशासन, कर्ण, तथा एक दो कौरव और) सभी मंच पर हंसते हुए
प्रवेश करते हैं।
दुर्योधन : मामाश्री चौसर में पाण्डवों को हराने की हमारी कूटनीति सफल हो गई। अब वो पाण्डव वन–वन भटक रहे होंगे। मामाश्री मैं उन पाण्डवों को एक सुईं की नोंक तक नहीं दूंगा।

शकूनी : भान्जे, तुम देखते जाओ, मेरे बताये मार्ग पर यदि तुम चलते रहे तो देखना मैं इन पाण्डवों का विनाश कर दूंगा।

दुर्योधन : (बौखलाते हुए) ये पूरा हरितनापुर सिर्फ मेरा है, मेरा हा हा हा हा.....।

(सभी क्रूर हंसी हंसते हैं और प्रस्थान कर जाते हैं। मंच के दूसरी तरफ से पाण्डवों का प्रवेश। टेबल के पीछे से श्री कृष्ण का निकलना और पाण्डवों के साथ मिल जाना)

भीम : भ्राताश्री दुर्योधन और शकुनी मामा ने चौसर नहीं खेला, बल्कि षड्यंत्र रचा था हमारे विरूद्ध।

अर्जुन : इससे पहले उन्होंने लाक्षागृह में हमें मारने का प्रयास किया, उसमें सफल न हुए, तब उन्होंने चौसर का षड्यंत्र रचा।

भीम : कौरवों ने जो पांचाली के साथ दुर्व्यवहार किया है, उसका दण्ड तो मैं उन्हें देकर रहूंगा।

अर्जुन : महादेव की सौगन्ध, यदि आपने न रोका होता भ्राताश्री तो मैं अपने इस गांडीव से उनकी जीवन लीला समाप्त कर चुका होता।

पांचाली : धर्मराज 12 वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास काटने के उपरान्त भी वो दुष्ट दुर्योधन तुम्हें तुम्हारे हिस्से का राज्य नहीं देगा। मैं उस दुष्ट को अच्छी तरह जानती हूं।

युधिष्ठिर: भ्राता भीम, हम दुर्योधन के कहने से धृतराष्ट की आज्ञा से वनवास आये हैं। हमारा धर्म है कि हम अपने बड़ों का सम्मान करें

भीम : महाराज धृतराष्ट, आचार्य द्रोण, पितामाह भीष्म, गुरूकृपाचार्य यदि ये सब बड़े है। तो इन्होंने अपना बड़प्पन उस समय क्यों नहीं दिखाया जब पांचाली के साथ दुर्व्यवहार हो रहा था।

कृष्ण : भ्राता भीम! इस प्रकार अपने भ्राता से बात करना आपको शोभा नहीं देता। अपने क्रोध को अपने वश में रखो, उचित समय पर इसका प्रयोग करना होगा। तुम सब ये जानते हो कि भ्राता युधिष्ठिर सदैव धर्म के मार्ग पर चलते आये हैं, इस समय तुम्हें उनका साथ देना चाहिए।

भीम : मुझे क्षमा करें भ्राता श्री। आपको कष्ट पहंचाने का मेरा उद्देश्य नहीं था, मैं तो उस दुष्ट दुर्योधन.....

कृष्ण : उसकी चिन्ता तुम न करो भ्राता भीम। कुछ कार्य तो मेरे लिए भी रहने दो। तुम केवल सत्य के मार्ग पर चलो, विजय केवल सत्य की होती है, क्योंकि सत्य ही धर्म है और धर्म अजेय है अजेय है, अजेय है

(सभी पाण्डव कृष्ण को प्रणाम करते हैं औश्र प्रस्थान कर जाते हैं। कृष्ण अपनी गीता की टेबल के पीछे यथास्थिति में खड़े हो जाते हैं।)

तुलसी : बच्चों अब देखो कुरान में क्या है ?

(सभी बच्चे कुरान के दोनों तरफ बैठ जाते हैं, तभी पार्श्व से एक बिजली कड़कती है और स्वर उभरता है)

अल्लाह : मैं हमेश उन्हीं की सहायता करता हूं जो सिर्फ मुझी से सहायता चाहते हैं। मेरे बताये हुए मार्ग पर चलते हैं। मैं चाहता हूं कि इंसान प्रकोपग्रस्त न हो, पथ ग्रष्ट न हों। हर इंसान सीधे मार्ग पर चले, भाईचारे के मार्ग पर चले, दान पुण्य के मार्ग पर चले । मानवता के मार्ग पर चले, बलिदान के मार्ग पर चले, मेरे बताये मार्ग पर चलने वालों की मैं सदा सहायता कता हूं और करता रहूंगा।

तुलसी : यह मानवता के लिए अल्लाह का संदेश है। आओ गुरूग्रंथ साहिब के पास जाकर बैठ जाते हैं। प्रणाम करने की मुद्रा में, पांच प्यारे विंग से निकलकर मंच पर आते हैं।

पांचों : सब सिक्खों को हुक्म है, गुरू मान्यों ग्रंथ। केश, कंघा, कड़ा, कृपाण, कच्छहरा, पांच कक्कारों का संग्रह सिक्ख की पहचान है। आओ अपने आपको गुरू साहिब के आगे समर्पित करें। अमृत प्राप्त करें।

(पांचों प्यारे दर्शक की तरफ मुंह करके बैठ जाते हैं उनके पीछे गुरूनानक देव आकर खड़े हो जाते हैं।)

गुरूनानकः रब हर जगह है, हर तरफ है। जो सिक्ख अपने आपको गुरू साहिब के आगे समर्पित कर देत है तो गुरू साहिब सिक्ख को अपना रूप बक्श देते हैं।

प्यारा 1 : हमें सदा मेहनत का शुद्ध काम ही करना चाहिए।

प्यारा 2 : किसी पर अत्याचार करके गलत तरीके से इकट्ठा किया धन पापों का भागीदार बनाता है।

प्यारा 3 : यदि तेरे पास बल है निर्धन की मदद कर, रसना से भी निर्धन को प्रेम से बोल, गुणों के कारण भी निर्धन को
गुण दे।

प्यारा 4 : धर्म के खातिर जुल्म को रोको।

प्यारा 5 : सच्चाई के रास्ते पर चलो।

पांचो : इस अमृत की दात से खालसा तैयार हुआ है। खालसा वाहिगुरू की फौज है। खालसा जुल्म का नाश करेगा।

(मंच पर से सभी खालसे चले जाते हैं, गुरूनानक जी अपने यथास्थान पर खड़े हो जाते हैं)

तुलसी : गुरू के बताये मार्ग पर चलकर लाभ ही लाभ होता है। आओ बच्चो बाइबल देखो।
(सभी बच्चे बाइबल के आसपास बैठ जाते हैं) बच्चों! मानव जब इतना पापी हो गया कि उसके मोक्ष के द्वार बंद हो गये। तब मानव को उनके गुनाहों से मुक्ति देने के लिये, मोक्ष के लिए मानव रूप में किसी, पवित्र और निस्कंलक शक्ति का बलिदान आवश्यक हो गया। तब परम पिता परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र का बलिदान दिया
(यीशू का बाइबल के पीछे से निकलकर मंच पर आना)

यीशु : आह.....आह.....
हे परमपिता परमेश्वर! ये लोग क्या कर रहे हैं। ये नहीं जानते तू इन्हें माफ कर देना। ये नहीं जानते कि मै ही व्यर्ग का द्वार, मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूं। जो मुझ पर विश्वास करेगा वही अनंत जीवन पायेगा।

बालक : वाह! मानव को पापों से मुक्ति दिलाने के लिऐ पवित्र, निस्पाप, निस्कलंक यीशु ने अपना बलिदान दे दिया।

तुलसी : बच्चो तुमने सभी ग्रंथों को देखा है.....

बालक : (बीच में बात काटकर) पर तुलसी दीदी आपने ये तो बताया ही नहीं कि इसमें से कौनसा ग्रंथ सर्वोत्तम है।

तुलसी : कौनसा ग्रंथ सर्वोत्तम है, इसका निर्णय तुम्हें खुद को लेना होगा।

बालक : (कुछ सोचकर) क्या हम इन ग्रंथों से कुछ सवाल कर सकते हैं।

तुलसी : हां–हां अवश्य। अपनी शंकाओं का निवारण करने के लिए तुम जो चाहो वो प्रश्न इन ग्रंथों से कर सकते हो।

बालक : तो ठीक है, गीता मुझे बताओ जीवन का सार क्या है।

गीता : मानव जीवन कर्म प्रधान है। भगवान कृष्ण ने कहा है ''कमण्येवाधिकारस्ते, मां फलेषु कदाचनः।'' हृदय की पवित्रता, उदारता और चरित्र की दृढ़ता से उत्पन्न, कर्तव्य परायणता ही मानव जीवनका मूल आधार है। लेकिन, इन्सानियत, धर्म सत्य की रक्षा एवं अत्याचार को रोकने के लिए शस्त्र उठाना भी आवश्यक है। शस्त्रों का प्रयोग केवल जन कल्याण के लिए हो, और वो ही शस्त्र उठायें, जिन्हें अधिकार है। कौरव अधर्म के मार्ग पर चले, इसलिए पांडवों ने उनका संहार किया।

बालक : कुरान आप बताइये।

कुरान : मैं गीता के विचारों से सहमत हूं

मुल्ला जानू ना मौलवील, मेरा कर्म ईमान, यही है जात कुरान।

बालक : गुरूग्रंथ साहिब अप किसका बखान कर रहे हैं ?

गुरूग्रंथ : हम मनुष्य को अज्ञान, कुसंस्कार और अविवक से दूर कर, शोषण व अत्याचार के विरूद्ध खड़ा करते हैं, स्वार्थ परत व हिंसा के दलदल से उबारकर सदाचारी बनाते हैं।

बालक : यही बात तो, गीता व कुरान ने भी समझाई है। अच्छा अब बताओ बाइबल तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?

बाइबल : मनुष्य पाप के कीचड़ से बाहर निकले। परमेश्वर के बताये मार्ग पर चले मर्यादा और अनुशासन का पालन करे। दुर्बल की मदद करे। सबसे प्रेम से बोले।

बालक : गीता तुम्हारा उद्देश्य क्या है ?

गीता : मैं भी वही कहूंगी, जो बाइबल ने कहा। गीता में श्री कृष्ण ने, कुरान में मो.साहिब ने, गुरूग्रंथ में 10 गुरूओ ने, बाइबल में ईसा मसीह ने, सबने एक ही बात कही है। सब एक साथ मिलकर रहें। मानव–मानव के बीच स्नेह और सौहार्द की पावन रश्मियां, मानव जीवन को प्रकाशित करती रहें।

बालक : ये बातें भी बाइबल और गीता में एक समान कही हैं।

तुलसी : हां तभी तो कहा है–

तेरी जात–पात कुरान में,
तेरा दर्श वेद पुराण में
गुरूग्रंथ जी के बखान में,
दिव्य प्रकाश अपना दिखा रहा।

बच्चों अब कहो किस, किस ग्रंथ को तुम सर्वश्रेष्ठ कहोगे।

बालक : (हाथ जोड़कर) तुलसी दीदी आपने ज्ञान के आलोक से हमारा पथ प्रदर्शित किया, गीता, कुरान, बाइबल, गुरूग्रंथ सब एक है।

गीता + कुरान + गुरूग्रथं + बाईबल : (सब एक साथ) हां हम सब एक है हमारा रूप भले ही अलग हो। भाषा भले ही अलग हो, लिपी भले ही अलग हो, पर वास्तव में हम सब एक हैं। मानव के लिए हमारा संदेश भी एक समान है।

गीता + कुरान + गुरूग्रथं + बाईबल : मानव कोप गस्त न हो, पथ भ्रष्ट न हो, हर जीव को जीने का समान अधिकार हो हर इंसान सत्य के मार्ग पर चले, बलिदान के मार्ग पर चले। इंसान, इंसान की कद्र करे।

बालक : जब सारे ग्रंथ एक समान हैं, कोई छोटा–बड़ा नहीं सबकी शिक्षाऐं एक समान हैं, सबकी शिक्षाएं एक समान है, सबका ईश्वर एक है तेा यह भेद–भाव, ऊंच–नीच, लड़ाई–दंगे क्यों होते हैं ?

गीता + कुरान + गुरूग्रथं + बाईबल : यही बात तो हमें भी बुरी लगती है। भेद–भाव,ऊंच–नीच, लड़ाई–दंगों से पहले मानव यह क्यों नहीं सोचता कि सबसे पहले वो इंसान है। जब परमेश्वर ने सबको एक समान बनाया है, सबके खून का रंग एक समान बनया है तो मानव खुद भेदभाव पैदा क्यों करता है। यदि मानव वास्तव में हमारा सम्मान करता है तो हमें मानव से एक ही उम्मीद है– सब सुख में दुख में मिलजुल कर रहें। सब प्यार से रहें, सब समानता से रहें।

(तभी पार्श्व से गीत उभरता है और मंच के एक तरफ से कबीर दास जी का प्रवेश, गाते–गाते वो दूसरे तरफ से प्रस्थान कर जाते हैं)

कबीर : साधो, एक रूप सब मांही।

अपने मनहि विचार के देखो और दूसरा माही एकै त्वचा, रूधिर पुन एकै, विप्र शूद्र के माहीं, साधो, एक रूप सब मांही।

(मंच पर से कबीर दास जी का गाते–गाते प्रस्थान)

बालक : कबीर दास जी ने भी वही बात कही है– **एक रूप सब मांही साधो...**

हमारे पास मार्गदर्शन के लिए चार ग्रंथ हैं, कितने, खुश किस्मत हैं हम, जो हमने इस धरती पर जन्म लिया।

तुलसी : हां वास्तव में तुम बहुत खुशकिस्मत हो जो तुमने इस धरती पर जन्म लिया। आज तुम चारों ग्रंथों का सार जान चुके हो जिस तरफ यहां आकर, मैंने तुम्हारी आंखें खोल दीं, उसी तरह मैं चाहती हूं तुम सभी बातें लोगों को बताओ– समझाओ कि सब मानव एक ही हैं। सब समानता से रहें, प्यार से रहें, मिलजुल कर रहे।

(तुलसी अपने यथास्थान पर खड़ी हो जाती है)

चारों बालक मन्च के मध्य में, अपना दांया हांथ निकालते है, एक दूसरे के हाथों को थामने हैं। (एक बालक हथेली पर सबकी हथेलियां) चारों धीरे–धीरे वृत्ताकार घूमते हैं। पार्श्व स्वर उभरता है।

पार्श्व स्वरः ना हिन्दु ना मुस्लिक हैं हम,
ना हैं सिक्ख ईसाई।
अणुव्रत कहता सबसे पहले,
इंसा हैं हम भाई।।
बनी रहे एका हम सबमें,
यही है सबसे उत्तम।।
यही है सबसे उत्तम।।
यही है सबसे उत्तम।।

राजेश शर्मा
सर पद्मपत सिंघानिया स्कूल, कोटा,
बांरा रोड़, नया नोहरा, राजस्थान

मत बांटो इन्सान को

(जैसा कि आप सभी जानते हैं कि हमारा देश भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। हमें सभी धर्मों के प्रति आदर–सत्कार करना सिखाता है। किसी भी धर्म के प्रति नफरत या ईर्ष्या की भावना नहीं रखनी चाहिए अपितु हमें सभी धर्मों को आदर व सम्मान भी देना चाहिए क्योंकि ''मजहब नहीं साखाता आपस में बैर रखना)

(पहला दृश्य)

सूत्रधार : बहुत पुरानी बात है। यमुना नदी के किनारे छः अन्धे व्यक्ति बहुत प्यार से एक साथ मिलकर रहते थे। एक बार उन छः अन्धे व्यक्तियों का आपस में इस बात को लेकर झगड़ा हो गया कि हाथी किस प्रकार दिखता होगा। हर व्यक्ति अपनी बात को सही साबित करने में इतना उलझ गया कि उनका झगड़ा बढ़ता और बढ़ता ही गया। जब उन्हें इस समस्या को सुलझाने का कोई भी उपाय नहीं सूझा, तब वे अपनी बात को सही साबित करने के लिए हाथी की तलाश में निकल पड़े। चलते–चलते बहुत देर हो गई, तभी उन्हें एक व्यक्ति मिला जिसने उन्हें बताया कि तालाब के किनारे एक पालतू हाथी खड़ा है। वह उन्हें इस हाथी के पास ले गया।

(दूसरा दृश्य)

(पहले अन्धे व्यक्ति ने हाथी के पेट को छुआ)

पहला अन्धा व्यक्ति : (हाथी को पाकर) बोला अरे! हाथी मिल गया, अब मैं तुम सबको बताऊंगा कि हाथी कैसा दिखता होगा। हाथी तो बहुत सख्त व चौड़ा होता है। वह तो एक दीवार की तरह दिखता होगा।

(दूसरे अन्धे व्यक्ति ने हाथी के दांतों को छुआ)

दूसरा अन्धा व्यक्ति : अरे! तुम तो गलत कह रहे हो। हाथी एक चौड़ी दीवार की तरह नहीं होता। हाथी तो एक चाकू की तरह नुकीला होता है। तुम तो गलत कह रहे हो भाई।

(तीसरे अन्धे व्यक्ति ने हाथी की पूंछ को छुआ)

तीसरा अन्धा व्यक्ति : तुम दोनों चुप रहो। मैं बताता हूं हाथी कैसा दिखता होगा ? तुम्हें तो कुछ भी नहीं पता। हाथी तो एक रस्सी की तरह होता है–रस्सी की तरह।

(चौथे अन्धे व्यक्ति ने हाथी की सूंड को छुआ)

चौथा अन्धा व्यक्ति : तुम तीनों को कुछ भी नहीं पता, मैं ही सब जानता हूं, अब मैं तुम्हें बताता हूं कि हाथी कैसा दिखता है ? अरे, हाथी तो एक सांप की तरह फिसलने वाला होता है।

(पाँचवें अन्धे व्यक्ति ने हाथी के कान को छुआ)

पाँचवां अन्धा व्यक्ति : तुम सब यह क्या बोल रहे हो ? तुम्हें तो कुछ भी नहीं पता कि हाथी कैसा दिखता होगा। हाथी

न तो दीवार की तरह, न चाकू की तरह, न ही सांप की तरह दिखता है। वह तो एक पंखे की
तरह होता है।

(छठे अन्धे व्यक्ति ने हाथी की टांग को छुआ)

छठा अन्धा व्यक्ति : ओह हो, मेरी भी तो सुनो। हाथी तो एक खम्बे की तरह होता है। तुम सभी गलत हो, मैं ही सही हूं। हाथी तो एक खम्बे की तरह होता है।

सूत्रधार : और इस तरह वह अन्धे व्यक्ति हाथी के अलग–अलग अंगों को छूकर हाथी कैसा दिखता होगा, यही सोचकर अपनी बात को सही साबित करने की धुन में लड़ने लगे और उन लोगों का झगड़ा बढ़ता और
बढ़ ही गया।

(तीसरा दृश्य)

(सभी धर्मों के लोग आपस में लड़ते हुए)

सूत्रधार : जैसा कि अब हम लोगों का यह झगड़ा आपस में हो रहा है। हम सभी यह बात जानते हैं कि भगवान एक है ''गॉड ईज वन'' और हम उन्हें अलग–अलग नामों से पुकारते हैं और पूजा करते हैं। कोई उन्हें 'ईश्वर'
बुलाता है, कोई 'अल्लाह' कहता है कोई 'वाहे गुरु' और कोई 'ईसा मसीह' के नाम से उसकी पूजा करता है। पर फिर हम सब यह क्यूं भूल जाते हैं कि यह सब तो भगवान के अलग–अलग नाम ही हैं। असल में ईश्वर तो केवल एक ही है। रास्ते अलग हो सकते हैं जिसके द्वारा हम एक ही मंजिल पर पहुंचते हैं, जिसे
भगवान कहते हैं। जैसा वे छः अन्धे व्यक्ति एक ही की बात कर रहे थे परन्तु उसके अलग–अलग अंगों को छूने से उसे अलग समझ कर लड़ रहे थे, उसी तरह हम सभी जानते हैं पर हम उनके अलग–अलग अंग
या यूं कहें कि नामों को पुकारने या मानने से उसे अलग–अलग समझने लगे हैं।

रास्ते अलग हो सकते हैं पर मंजिल तो सभी की एक ही है। वो है ईश्वर तो फिर यह लड़ाई क्यों, ये झगड़ा क्यों ये दंगा– फसाद क्यों ?

क्यों हम ये भूल जाते हैं कि कोई मजहब हमें लड़ना नहीं सिखाता। किसी भी मजहब की तालीम आपस में ईष्या–बैर रखना नहीं है फिर कभी राम के नाम पर, कभी अल्लाह के नाम पर झगड़ा यह लड़ाई क्यूं ?

(चौथा दृश्य)

(सभी पात्र मिलकर यह कविता गाते हुए।)

मंदिर मस्जिद गिरजाघर ने बांट लिया भगवान को,

धरती बांटी सागर बांटा
मत बांटो इंसान को।

अभी राह तो शुरू हुई है
मंजिल बैठी दूर है,
उजियाला महलों में बंदी
हर दीपक मजबूर है।
मिले ना सूरज का संदेशा
हर घाटी मैदान को,
धरती बांटी सागर बांटा
मत बांटो इंसान को।

अब भी हरी–भरी धरती है
ऊपर नील–वितान है,
प्यार न हो तो जग सूना
एक जलता रेगिस्तान है
अभी प्यार का जल देना है
हर घाटी मैदान को,
धरती बांटी, सागर बांटा
मत बांटो इन्सान को।

(तभी एक बच्चा आता है)

एक छोटा बच्चा : बस अब और सहन नहीं होता। क्या हम भी इन अन्धे व्यक्तियों की तरह आपस में लड़ते रहेंगे या फिर अपनी इन बन्द आंखों को कभी खोलेगे और इस सच्चाई को समझेंगे कि "**मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना**"।

मन्जू बख्शी
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल,
अशोक विहार, फेज–4, दिल्ली

पथ अहिंसा का

पात्र–परिचय

मां, पिता, बेटी–पिंकी, बेटा–अक्षय

सूत्रधार : आज विश्व आंतकवाद की भीषण अग्नि में बुरी तरह झुलस रहा है। न केवल राष्ट्र बल्कि समस्त विश्व इसके क्रूर एवं निर्दयी बहुपाश में छटपटा रहा है। आतंकवाद प्रतिदिन प्रातः बम के धमाके से प्रारंभ होता है, भयानक एवं हृदय विदारक नरसंहार को देख हंसता है और उत्सव मनाता है। आतंक का यह अंतहीन सिलसिला कभी भी थमता नजर नहीं आता है। समाधान के स्वर विकट आतंक के इस दौर में उभरते भी हैं, तो भी आशा की कोई किरण नजर नहीं आती है।

आज इस आतंकवाद ने स्वयं को अत्यंत आधुनिकतम विनाशकारी अस्त्र–शस्त्रों से अलंकृत कर लिया है और अपना देश भारत भी पिछले कई वर्षों से गंभीर आतंकवाद की चपेट में है। आज हम जो नाटक प्रस्तुत करने जा रहे हैं, वह यही दर्शाता है कि जब कोई परिवार आंतकी हमले से प्रभावित होता है तब उसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है। आइए सबसे पहले हम नाटक के मुख्य पात्र 'अक्षय' से मिलते हैं जो आप सबसे कुछ कहना चाह रहा है।

(अक्षय स्टेज पर आता है)

अक्षय : मैं अक्षय इस नाटक का मुख्य पात्र हूं। मैंने हमेशा अपने माता–पिता से यही सीखा है कि हमेशा देश की तरक्की में काम आओ। कभी भी हमें हिंसा तथा तोड़फोड़ की प्रवृत्तियों में भाग नहीं लेना चाहिए चाहे परिस्थितियां कैसी भी हों। हमें हमेशा मानवीय एकता में विश्वास करना चाहिए तथा उसे बनाए देखने की हरसंभव कोशिश करनी चाहिए। परन्तु मेरे साथ एक ऐसी घटना घटी कि मैं वो सब कुछ भूल गया, जो मेरे माता–पिता ने मुझे सिखाई थी। आइए, आप खुद देखिए कि मेरे साथ ऐसा क्या हुआ कि मैं हिंसात्मक राह अपनाने जा रहा था।

(प्रथम दृश्य)

(मां, पिता, बेटीपिंकी (6 साल), बेटा अक्षय (12 साल) बैठक में पिता अखबार पढ़ रहे हैं। मां घर के काम कर रही है। पिंकी गुड़िया से खल रही है। अक्षय गाने सुन रहा है तथा उस पर थिरक रहा है।)

पिता : (अखबार पढ़ते हुए) सोच रहा हूं आज मैं सबको घुमाने ले चलूं, क्यों कैसा रहेगा ?
मां : हां–हां, मेरा भी मन हो रहा है बाहर घूमने का।
पिंकी : मैं भी चलूंगी, मैं भी चलूंगी साथ में। (अक्षय को हल्के से मार के भाग जाती है।)
अक्षय : ठहर–ठहर अभी बताता हूं। (पिंकी के पीछे जाता है उसे मारने)
मां : इन दोनों की तो कभी लड़ाई खत्म ही नहीं होती।
पिता : कोई नहीं। बच्चे नहीं लड़ेंगे तो क्या हम बड़े लड़ेंगे।
मां : चलो चलो अब तैयार हो जाओ।
अक्षय : आप लोग चलिए, मैं थोड़ी देर में आता हूं।

(सब चले जाते हैं अक्षय देर से जाता है गुनगुनाता हुआ)

(दूसरा दृश्य)

(सड़क का दृश्य : दो आतंकवादी आते हैं और इधर–उधर देख कर कुछ योजना बनाते हैं और कोने में एक खिलौना रख देते हैं जिसमें बम लगा था। फिर चले जाते हैं। मां–पिता के साथ पिंकी सड़क पर आती है। सड़क पर बहुत भीड़ है। लोग आ–जा रहे हैं। तभी आतंकवादी आते हैं और गोलियां बरसानी शुरू कर देते हैं फिर चले जाते हैं आतंकवादी। अक्षय यह सब दूर से देखता है, फिर मदद के लिए पुकारता है। बदहवास सा अपने मां–पिता तथा पिंकी को ढूंढता है। तभी पुलिस तथा सामाजिक कार्यकर्ता मदद के लिए आते हैं। सबको अस्पताल ले जाते हैं। तभी अक्षय अपने पिता को देखता है जो अब जिन्दा नहीं थे। बहन पिंकी भी मृत मिलती है। फिर रोते–चिल्लाते मां को ढूंढता है, मां उसे कराहते हुए मिलती है। पुलिस की मदद से उसे अस्पताल पहुंचाया जाता है।)

(तीसरा दृश्य)

सूत्रधार : '' धरती पर आतंकवाद ने, खुलकर शीश उठाया है, रक्त सने मुख पर, मजहब का चेहरा खूब लगाया है, किंतु किसी आतंकी का तो, धर्म न कोई होता है, छल–बल से मानव मूल्यों की, मर्यादा वह खोता है''। इस आतंकी हमले के कारण अक्षय की मां ने अपना एक पैर गंवा दिया और अक्षय के दिल में बदले की भावना जागृत हो रही है। एक बुरे मित्र सचिन के बहकावे में आकर वह आतंकी संगठन से जुड़ना चाह रहा है। देखें कि आगे क्या होता है ?

(चौथा दृश्य)

(अक्षय उदास तथा परेशान होकर इधर–उधर सामन फेंक रहा है। तभी उसका मित्र सचिन आता है जो उसकी परिस्थितियों का फायदा उठाकर उसे बहकाता है)

सचिन : अक्षय क्यों उदास हो ?

अक्षय : मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा है कि मैं क्या करूं। मैंने अपना परिवार खो दिया। मां मेरी अपाहिज हो गई है, पिंकी हमेशा मेरी आंखों के सामने ही रहती है। प्यार करने वाले पिता नहीं रहे। मेरी तो जीने की इच्छा ही खत्म हो गई। मन करता है सब कुछ खत्म कर दूं। मैं मर जाना चाहता हैं, मैं टूट चुका हूं। ऐसा लगता है पूरी दुनिया में आग लगा दूं।

सचिन : अक्षय, तुम्हारी इच्छा एक जगह पूरी हो सकती है।

अक्षय : कहां ?

सचिन : यहां से थोड़ी ही दूर पर एक जगह है वहां पर आतंकवादियों ने शिविर लगा रखा है।

अक्षय : आतंकवादी शिविर! नहीं–नहीं।

सचिन : तुम्हें बदला लेना है या नहीं ? यही सही जगह है, जहां तुम जुड़कर अपने मन को शान्त कर सकते हो। वहां और भी बच्चे हैं जिन्होंने आतंकी हमले में अपने सगे–सम्बन्धियों को खो दिया है। कहो तो कल तुम्हें

उनसे मिलवाता हूं ?

अक्षय : ठीक है, मैं कल उनसे मिलना चाहता हूं।

(इस बीच अक्षय का एक घनिष्ठ मित्र राज उनकी बातें सुन लेता है और तुरन्त अक्षय की मां के पास जाता है, मां बैसाखी के सहारे काम कर रही है, तभी राज आ जाता है)

राज : आन्टी–आन्टी!

मां : क्या बात है राज ? तुम इतना घबराए हुए क्यों हो ?

राज : आन्टी, अक्षय गलत संगति में पड़ गया है।

मां : क्यों क्या हुआ बेटा ?

राज : आन्टी, उसका मित्र सचिन है न, वह उसे ''आतंकवादी शिविर'' में आने को कह रहा था। कह रहा कल वह उन बच्चों से मिलवायेगा जो वहां शिविर में प्रशिक्षण ले रहें हैं और वे सभी आतंकी हमले से पीड़ित हैं।

मां : बहुत अच्छा किया राज बेटा, जो तुमने मुझे असलियत बता दी। अक्षय आता ही होगा, मैं उसे समझाऊंगी।

(राज चला जाता है, अक्षय आता है। राज को अपने घर से जाता हुआ देख चिढ जाता है)

मां : क्या हुआ बेटा ?

अक्षय : राज ने आपको सब बता ही दिया, तो फिर आप पूछ क्या रही है ?

मां : क्या यह सही है कि तुम कल आतंकवादी शिविर में वहां के बच्चों से मिलने जा रहे हो ?

अक्षय : (चिढ़कर) हां, जिसने भी बताया है सही बताया है।

मां : जो मित्र तुम्हें वहां ले जा रहा है, वह तुम्हारा मित्र नहीं, तुम्हारा दुश्मन है। वह तुम्हें गुनाह के रास्ते पर ले जा रहा है। क्या तुम गुनाहगारों की तरह जीवन जीना चाहते हो ?

अक्षय : (गुस्से में) हां, कम से कम मेरे मन को शांति तो मिलेगी।

मां : कैसी शांति ? सबको मार तुम्हें कैसी शांति मिलेगी ? पिता की तरह आदर्श जीवन जीओ बेटा।

अक्षय : क्या मिला पिताजी को आदर्श जीवन जी के, जिन्दगी छिन गई उनकी। सब कुछ खत्म हो गया मां, सब कुछ। कुछ भी जीवन में नहीं बचा। मां, मुझे मत रोको, मुझे जाने दो।

मां : तुम भी सबके साथ वही करोगे, जो तुम्हारे साथ हुआ। तुम भी किसी बहन का भाई छीनोगे, किसी पत्नी की मांग सूनी करोगे, किसी मां से बेटे को दूर करोगे। क्या तुम ये सब कर पाओगे ?

अक्षय : हां कर लूंगा मां।

मां : देखो बेटा, अभी तुम्हारी उम्र कम है। सही–गलत का फर्क नहीं मालूम। फिर भी बेटा मेरा फर्ज है तुम्हें समझाना। सही–गलत का फर्क समझाना मेरा काम है। बेटा, हमें अपने देश के लिए अपने स्वार्थों को त्याग देना चाहिए। हमें व्यक्तिगत लाभ–हानि की ओर ध्यान न देते हुए देश–हित के लिए अपनी पूर्ण शक्ति लगा देनी चाहिए।

बेटा, आतंवादी किसी के नहीं होते, कल तुमसे मतलब खत्म हो जायेगा तो वे तुम्हें भी नहीं छोड़ेंगे, तुम्हें भी मार डालेंगे। और बेटे मैंने तो सबको खो दिया परन्तु बेटे मैं तुम्हें नहीं खोना चाहती हूं। तुम्हारे सिवाय मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है।

(मां रोने लगती है। अक्षय को अपनी गलती का अहसास होता है)

अक्षय : (मां के पैर छूते हुए) मां मुझे माफ कर दो। मैं भटक गया था। मां मैं प्रण लेता हूं कि मैं कभी भी हिंसात्मक एवं तोड़फोड़ की प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूंगा।

मां : बेटा, सुबह का भूला अगर शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नहीं कहते। मैं भगवान का शुक्रिया अदा करती हूं कि तुझे उन्होंने बहुत बड़ा गुनाह करने से बचा लिया।

(छठा दृश्य)

(इस नाटक के सारे पात्र हाथ में जलती मोमबत्ती लेकर मंच पर क्रमानुसार खड़े हो जाते हैं)

सूत्रधार : आतंकवाद किसी भी तरह का हो, आतंकवादी कोई भी हो, पर वे इन्सान और इंसानियत के दुश्मन हैं। क्योंकि बेगुनाहों के खून से यदि कुछ मिल भी जाये तो वह सुखद नहीं होगा ।

'' आइए, हम भी चलें, राह पर आदर्शों की,
ताकि जीवन न जिएं, हम गुनाहगारों की तरह''।
राष्ट्र हमारा आजाद रहे, वीर सदा हम बने रहें,
सच्चे दिल से काम करें, जय हिंद, जय हिंद, गाते चलें।
हिंसा को हम दूर भगाएं, अहिंसा का पथ अपनाएं,
मुश्किल कोई आ जाए तो, हंसते–हंसते उसे सहें।
देश–प्रेम की खातिर हम सब, आगे–आगे बढ़ते जाएं,
जयहिंद का नारा लगाकर, देश–हित पर बलि–बलि जाएं''

(सारे नाटक के पात्र एक साथ ''जयहिंद'' बोलते हैं)

(पर्दा गिरता है)

रीता सिंह
एल.पी.सवाणी एकेडमी
वेसु, सूरत, गुजरात

गोरैया

मास्टर बनवारी लाल	:	दादा जी
रचित, रचिता	:	पोता, पोती
रमन	:	बच्चों का फूफा, दामाद
कमला	:	दादी जी

(प्रथम दृश्य)

(सामान्य साज–सज्जा वाली बैठक, दीवार पर राम दरबार, महात्मा गांधी व पारिवारिक चित्र, कोने में रखी अलमारी में चंद किताबें, लकड़ी की कुर्सियों के पास रखी मेज पर अखबार, सुबह का समय दादा जी (मास्टर बनवारी लाल) कुर्सी पर बैठकर अखबार खोलने लगते हैं तथा दामाद रमन का रचित व रचिता के साथ प्रवेश)

रमन : (पांव स्पर्श करते हुए) पिता जी! नमस्ते।
रचित : (चरण स्पर्श करते हुए) दादा जी! नमस्ते।
रचिता : नमस्ते, दादा जी!
मास्टर बनवारी लाल : जुग–जुग जियो। सदा सुखी रहो। दामाद जी, आप कैसे हैं ? घर–काम सब ठीक है ?
रमन : जी, पिता जी, ईश्वर की कृपा है।
मास्टर जीः सुबह से बड़ी बेचैनी से इंतजार कर रहे थे। आपको आने में कोई परेशानी तो नहीं हुई ? इस बार देर कर
दी बेटा! हमारा मन नहीं लगता। छुट्टी होते ही बच्चों की राह देखने लगते हैं।
रमन : आप ठीक कह रहे हैं, पिता जी! जिस दिन इन बच्चों की छुट्टियां शुरू हुईं, उसी दिन हम लोग होटल में
खाना खाने चले गये। उसी रात रचिता बड़ी बीमार हो गई। उसे दो दिन अस्पताल में रहना पड़ा। फिर
कमजोरी के कारण आने में देरी हुई।
बनवारी लाल : (रचिता को पुचकारते हुए) क्या हुआ था, मेरी लाडो को।
रमन : इसे पेट दर्द होकर उल्टियां शुरू हो गईं। शायद फूड पाईजनिंग (हैजा) हो गया था।
बनवारी लाल : तभी तो कहता हूं ना,बेटा। हमेशा घर का बना ही सादा भोजन, फल, कच्ची सब्जियां ही खानी चाहिए। गर्मी में तो वैसे भी खाना जल्दी खराब हो जाता है। दामाद जी! आपको ही ध्यान रखना चाहिए।
रमन : पिता जी। बच्चों का ही मन रखने के लिए ले जाना पड़ा।
बनवारी लाल : (बच्चों से) बेटा! हमें ही अपना ध्यान रखना होगा। जंक फूड, बाहर का खाना जहर के समान ही होता है। चलो, अब हमारी बिटिया यहां आ गई है। चुटकी में ठीक कर देंगे। अब तुम कभी बाहर का खाना मत खाना।
रचित व रचिता : दादा जी, दादी कहां हैं ? अब घर का ही खाना खाएंगे।

बनवारी लाल : तुम्हारी ही राह देख रही थी, अभी मंदिर गई है। जब तक तुम्हारी दादी आती हैं, तुम सब नहा लो। फिर मिलकर नाश्ता करेंगे।

(तीनों नहाने चले जाते हैं, तभी कमला का प्रवेश)

कमला : सुनते हो जी! क्या बच्चे अभी तक नहीं आए ?

बनवारी लाल : हां, हां, आ गए, बच्चे ! सुनो, बच्चों को छोड़ने दामाद बाबू आए हैं। जल्दी तुम नाश्ता बना दो।

(तीनों का प्रवेश)

रमन : (चरण स्पर्श करते हुए) मां! नमस्ते!

बच्चे : (दादी से लिपटते हुए) दादी जी, दादी जी! आप कहां थी ?

कमला : (प्यार करते हुए) तुम दोनों की राह देख रही थी। ये तुम्हारी छुट्टियां भी बड़े–बड़े दिनों में होती हैं। अब तो मेरे बच्चे मेरे साथ ही रहेंगे। मेरे बच्चों को भूख लगी है न। चलो नाश्ता–कलेवा करेंगे। अभी तैयार करती हूं।

(द्वितीय दृश्य)

(सभी रसोई घर में बैठे हैं, दादी नाश्ता परोसने की तैयारी कर रही है)

रचिता : दादी, दादी! क्या बनाया है, बड़ी खुशबू आ रही है।

दादी : गर्मागर्म हलवा और बादाम वाला दूध बना रही हूं। खाओगे न।

रचित : वाह! दादी, मजा आएगा। आपके हाथ का हलवा बड़ा ही मजेदार होता है।

(सब मिलकर खाने लगते हैं)

दादा जी : दखो बच्चों! आगे से इसी तरह जब अलग खाने का मन हो तो बुआ जी से हलवा, खीर, पकौड़े आदि ही बनवा कर खाया करो। जंक फूड व होटल का खाना ताकतवर नहीं होता। यह भोजन हमें कमजोर व बीमार कर देते हैं। मेरी गुड़िया को बहुत तंग होना पड़ा था, न।

रचिता : हां दादा जी, बड़ा पेट दर्द हुआ था। आगे से हम कभी भी बाहर खाने की जिद नहीं करेंगे।

दादा जीः शाबाश! मेरे बच्चों । चलो, अब आराम करते हैं।

रमन : पिता जी! अब मैं चलता हूं। शाम को दिल्ली में कोलकाता की गाड़ी पकड़नी है। भैया–भाभी को भी रात ही हवाई जहाज से लंदन जाना था। उनका यहां आने का बड़ा मन था मगर छुट्टी नहीं मिली। इसलिए बच्चों के साथ मुझे आना पड़ा।

बनवारी लालः बड़ा अच्छा किया, दामाद जी! आपने सचमुच बड़ी लगन से, प्यार से इन बच्चों को संभाला है। मन था कि आप कुछ समय रुकते मगर अब रोक भी नहीं सकता। सब विवशता है।

रमन : (पांव स्पर्श करते हुए) अच्छा! पिता जी, मैं चलता हूं।

बनवारी लालः ठीक है बेटा! पहुंच कर फोन करना।

(विदा करते हैं)

(तीसरा दृश्य)

(शाम का समय। दादा जी के साथ रचित व रचिता उनका हाथ थामे देहरादून घूम रहे हैं। पार्क में ठहरते हैं)

रचित : दादा जी! यहां देखो ये हरे–हरे पेड़ कितने ताजा लग रहे हैं। इन पर ये रंग–बिरंगे फूल कितने प्यारे हैं दादा जी, यहां पेडों की छाया में कैसी प्यारी–प्यारी ठण्डक है और खुशबू भी आ रही है।

रचिता : दादा जी, कोलकाता के पेड़ तो इतने सुंदर चमकते हुए नहीं होते। क्या, ये दूसरी तरह के पेड़ हैं ?

दादा जीः नहीं बेटा! पेड़ तो एक जैसे ही होते हैं मगर कोलकाता में बहुत भीड़ होती है। गाड़ियां चलती हैं तो उनके धुएं से पर्यावरण गंदा और गर्म हो जाता है। इसी कारण वहां पेड़ों में चमक, खुशबू और ठण्डक होने पर भी महसूस नहीं होती।

दोनों : (एक साथ) हां हां दादा जी! हमारी टीचर भी बता रही थी कि प्रदूषण के कारण हमारा पर्यावरण गंदा हो जाता है और हमें अनेक बीमारियों का सामना करना पड़ता है। ऐसा क्यों कहा, दादा जी।

दादा जीः देखो, बच्चों! तुम्हें मालूम है न, पेड़ हमें ऑक्सीजन देते हैं और गाड़ियों के धुएं में कार्बन–मोनो ऑक्साइड निकलती है जो बड़ी हानिकारक होती है। केवल वृक्ष ही हमें इससे बचा सकते हैं।

रचिता : सच, दादा जी।

दादा जीः हां, बेटा! पेड़ भोजन बनाते हुए कार्बन सोखते हैं और हमें ऑक्सीजन देते हैं। जितने ज्यादा वृक्ष होंगे, उतनी ही ज्यादा ऑक्सीजन मिलेगी। जब हमें ज्यादा ऑक्सीजन मिलेगी। तो हम स्वस्थ रहेंगे।

रचित : फिर तो, दादा जी हमें बहुत सारे पेड़ लगाने चाहिए और गाड़ियों का चलना सरकार को बंद करवाना चाहिए।

रचिता : भैया! नहीं, मुझे तो गाड़ी में घूमना बड़ा अच्छा लगता है। हम फिर स्कूल कैसे जाएंगे ?

दादा जीः देखो, रचित! गाड़ियां रोककर काम नहीं चलेगा मगर हम अधिक से अधिक वृक्ष तो लगा ही सकते हैं। ये पेड़–पौधे हरियाली के कारण सुंदरता बढ़ाते हैं। हमें ऑक्सीजन, फल–फूल, सब्जी, अन्न आदि देते हैं। इनसे हमें पेपर, गोंद, ईंधन, उधोग चलाने के लिए सामान आदि मिलता है। इनमें ही पक्षी अपने घोंसले बनाते हैं। पशु इनकी ठण्डी छाया में बैठते हैं। ये पेड़ ही वर्षा लाते हैं। इन पेड़ों की शाखाओं पर देखो कितने पक्षी मधुर आवाज में गाते हैं! ये पेड़ ही जीवन है।

रचित व रचिताः (हैरान होकर) सचमुच, दादाजी! पेड़ इतने उपयोगी ! हम भी पेड़ लगायेंगे।

दादा जीः हां बेटा! पर्यावरण, ओजोन लेयर का छेद बढ़ने से बचाने के लिए हमें पेड़ लगाने ही पड़ेंगे। नहीं तो सारी धरती नष्ट हो जाएगी। जीव–जन्तु मर जाएंगे।

रचित : हां, दादा जी! हमारी टीचर कह रही थी कि अनेक पक्षी व पशु धीरे–धीरे खत्म हो रहे हैं। इन्हें बचाने के लिए सरकार बढ़ावा दे रही है। दादा जी, गोरैया को तो दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीली दीक्षित ने दिल्ली का राज्य पक्षी बनाकर उसकी संख्या बढ़ाने की बात कही थी। क्या पेड़ लगाने से ये चिड़िया (गोरैया) भी अधिक हो जायेंगी ?

दादा जीः हां, बेटा! पेड़ों के अधिक होने से हम सब व धरती की रक्षा अपने–आप हो जायेगी।

रचिता : दादा जी, फिर तो हम कोलकाता जाकर अपने मित्रों के साथ मिलकर स्कूल में, घर के पास, पार्क में बहुत सारे पेड़ लगाएंगे।

रचित : शायद, दादा जी! इसलिए ही तो बड़े–बडे लोग पौधारोपण करते हैं।
दादा जीः हां, बच्चों! धरती की रक्षा के लिए पौधारोपण किया जाता है।
रचित व रचिता
गाते हैं– *(एक साथ) अब हम खूब पेड़ लगाएंगे और लगवाएंगे।*
आओ मिलकर पेड़ लगाएं, एक नहीं अनेक लगाएं।
धरती को खुशहाल बनाएं, स्वयं बचें सबको बचाएं।।

(सब घर आते हैं)

डॉ. भामा अग्रवाल
भिवानी पब्लिक स्कूल,
भिवानी, हरियाणा

सजग पहरेदार

पात्र परिचय

नारद जी	वृक्षराज
मानव	वनराज
हिरण	छात्र

(पहला दृश्य)

(ब्रह्मा जी के आदेश पर नारदजी पृथ्वी लोक की जानकारी लेने के लिए पृथ्वी पर आते हैं। पृथ्वी की हालत देखकर बड़े दुखी होते हैं)

नारद जी : पृथ्वी लोक पर विचरण करना कितना दुलर्भ हो गया, परमपिता ब्रह्माजी का आदेश न होता तो मैं कदापि यहां नहीं आता,.....घोर कलयुग है, भाई.....घोर कलयुग.....नारायण.....नारायण..... ।(फिर चौंक कर)

अरे वृक्षराज यहां ओंधे क्यों पड़े हो और तुम्हारी यह दुर्दशा.....!

वृक्षराज : क्या बताऊँ मुनिवर!

नारदजी : तुम्हारा काम पृथ्वी पर शाकाहारी जीवों का भरण–पोषण करना है तुम तो उत्पादक हो.....क्या तुम्हें सूर्य देव ने ऊर्जा देने से मना कर दिया ?

वृक्षराज : नहीं...नहीं मुनिवर।

नारदजी : फिर तुम अपना कर्तव्य कैसे भूल गये। सबसे पहले बह्माजी ने तुम्हारे छोटे–छोटे एक कोशकीय जीव को समुद्र से तैयार किया और फिर तुम्हें जड़ें प्रदान कर जमीन पर रहने लायक बनाया।

वृक्षराज : मैं सब जानता हूँ मुनिवर। मैंने भी वर्षों से भोजन निर्माण के साथ वातावरण को शुद्ध किया है। मैं अपने छिद्रों से ऑक्सीजन निकालता हूँ, जो प्राणियों के लिए प्राणवायु है।

नारद जी: छी, छी, छी वृक्षराज! तुम प्राणवायु देते हो, वातावरण भी शुद्ध करते हो तब यह दुर्गन्ध कैसी.....मेरा तो यहाँ दम घुट रहा है।

वृक्षराज : मुनिवर, हमारा समुदाय अरबों की संख्या में था, वर्षों से शाक, झाड़ी, लता, अधिपादव ये सब मेरे परिवार के सदस्य मिलकर पृथ्वी पर भरण–पोषण का काम करते थे। हम पक्षियों को आश्रय, तो पथिको को छाया प्रदान करते हैं। मेरे नन्हें–नन्हें बच्चे जड़ी–बूटी कई असाध्य रोगों से मनुष्य को छुटकारा देते

थे। हमारे फल–फूल, शाक, सब्जी खाकर मनुष्य अपने शरीर का विकास करता है।

नारदजी : यह तो सब मैं भी जानता हूँ ! वृक्षराज ! किंतु यहाँ न तो मुझे तुम्हारा परिवार दिख रहा है, न ही तुम्हारी
प्राणवायु का प्रभाव (नाक बंद करते हुए)।

वृक्षराज : मुझे क्षमा करें मुनिवर! मेरी स्वयं की सांस रुक रही है, मेरी जड़ें तोड़ दी गयी हैं, मैं मिट्टी से अलग हो रहा हूँ। मेरे परिवार की भी यही दशा हो गयी। अब तो केवल।

नारदजी : (वृक्षराज को संभालते हुए) अरे! तुम्हारी यह दशा किसने की.....?

वृक्षराज : वह मनुष्य जो मेरे मरने की प्रतीक्षा कर रहा है।
(वृक्षराज जमीन पर गिर जाता है)

(दूसरा दृश्य)

नारदजी : नारायण.....नारायण.....उत्पादक–पोषणहार की दुर्दशा!

मानव : (नारदजी को देखकर) यह सजीव प्राणी कौन है ?

नारदजी : (मानव हाथ में कुल्हाड़ी लिए देखकर)
तुम्हीं ने वृक्षराज के प्राण हरे हैं।

मानव : हाँ.....पर तुम फेंसी ड्रेस में यहाँ क्या कर रहे हो। नाटक नाटक में ही शोभा देते हैं।
जाओ यहाँ से, मुझे अपना काम करने दो। वृक्ष के टुकड़े–टुकड़े करके बाजार ले जाना है। .....
.....हाँ मदद करोगे तो तुम्हें भी कुछ दे दूंगा.....रखो अपना बाजा एक तरफ.....(नारदजी डर कर पीछे
हटते हैं फिर संभल कर)

नारदजी : मूर्ख.....हमें नहीं जानता तो कोई बात नहीं लेकिन इस वृक्षराज को तुमने उगाया था क्या.....?

मानव : नहीं, मेरे परदादा ने लेकिन तुम्हें क्या करना है ? जाओ अपना नाटक करो।

नारदजी : जिसके मीठे फल खाकर, शीतल छाया में खेलकर तुम बड़े हुए हो, उसने जीवन भर तुम्हारे परिवार को प्राणवायु दी और लालच में आकर तुमने उसी के प्राण हर लिए। तुम्हें तनिक लज्जा नहीं आयी।

मानव : क्यों परेशान कर रहे हो, यहाँ से जाते हो.....मेरे आंगन का वृक्ष था मैंने काटा , तुम्हें क्या हर्ज हो रहा है।

नारदजी : आज मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया, जिसके पूर्वज वृक्षों की विभिन्न त्यौहारों में पूजा करते थे। वृक्ष लगाकर पुण्य करते थे। तुलसी, पीपल, बरगद हर आंगन में पूजे जाते थे। वह मनुष्य इतना स्वार्थी।.....नारायण..... नारायण.....

(तीसरा दृश्य)

नारदजी : मन तो नहीं है, किंतु परमपिता का आदेश था, सो भ्रमण तो करना ही पड़ेगा। नारायण.....नारायण

(तभी दो हिरण आपस में झगड़ा करते हैं)

हिरण 1 : मैं खाऊँगा ये घास, मैंने पहले देखी।

हिरण 2 : नहीं मैं पहले दोड़कर आया, पहले मैं खाऊँगा।

नारदजी : नारायण....नारायण..... आपस में क्यों लड़ते हो ?

हिरण 1 : ये ताकतवर है। मुझे खाने नहीं देता।

हिरण 2 : जंगल का नियम है। जो ताकतवर, वही खाता है।

नारदजी : परन्तु तुम इस घास के लिए क्यो लड़ रहे हो ?

हिरण 1 : किसान चतुर हो गये, खेतों में करेन्ट लगा देते हैं। मेरा भाई खेतों में गेहूँ की बालियाँ देखकर घुसा..... लेकिन करंट लगने से वहीं बिना खाये मर गया.....।

नारदजी : खेतों में क्या है जंगल में जाओ।

हिरण 2 : इन्हें तो ये भी नहीं पता जंगल है कहाँ, सब मनुष्य ने काट डाले.....हम भी फसलों को नुकसान पहुचाएंगे। इतने शाकाहारी जीव और खाने को भोजन नहीं।

हिरण 1 : हम नये नये खेत ढूंढेते हैं। लेकिन वहां से भी बारहसिंगा हमें वहां से मारकर भगा देते हैं मैं कई दिनों से भूखा हूँ।

(रोने लगता है)

नारदजी : नारायण.....नारायण।

हिरण 1 : (पहले ठोकर मारकर) चल भाग यहाँ से (खुद घास खाने लगता है)

हिरण 2 : (पहला थोडा चलकर गिर जाता है) गया काम से।

नारदजी : उत्पादन कम और उपभोक्ता इतने जीव नहीं आपस में संघर्ष तो नहीं अन्य जातियों से संघर्ष..... परिणाम स्वरूप मृत्यु, हाहाकार, असंतुलन.....नारायण.....नारायण.....

(दृश्य चार)

(पिंजरे में भूखे शेर को देखकर)

नारदजी : अरे वनराज यह सब क्या है ? असंभव यह कैसे हो सकता हैं, मां दुर्गा का वाहन सब प्राणियों में शक्तिशाली, ताकतवर, चपल वन का राजा आज इतना लाचार, असहाय, पिंजरे में बंद कर दिया है।

वनराज : मुझसे भी ताकतवर प्राणी है जिसने मुझे पिंजरे में बंद कर दिया है।

वनराज : मेरा या तो सर्कस में तमाशा बनाते हैं, या तो किसी उद्यान में झांकी बच्चे मुझे देखकर तालियां बजाते हैं।

नारदजी : महिसासुर को मारने में मां दुर्गा के सहयोगी बने जिसकी गर्जना से धरती पाताल हिलने लगे थे।

वनराज : वह गर्जना तो मैं भूल गया। राक्षसों का वध करने वाला मैं जंगली जानवरों का शिकार करना भी भूल गया।

नारदजी : तुम्हारी यह दशा करने का साहस किसमें है ?

वनराज : मनुष्य, वह बहुत ताकतवर तो नहीं, लेकिन वह अपनी बुद्धि से नये हथियार बनाता है और पूरी पृथ्वी पर अपना राज कर रहा है। पैसो के लालच में उसी ने मेरे पूरे कुटुम्ब का वध किया है।

नारदजी : नारायण .....नारायण..... मैं अब समझा वनराज को पिंजरे में बंद कर देने से जंगली जानवरों की संख्या बड़ गयी, जंगल मनुष्य ने काट डाले, जंगली जानवर खेतों को बरबाद करने लगे। कभी आपस में तो कभी अन्य जीवों से भोजन के लिए संघर्ष कर मरने लगे। प्रकृति का संतुलन बिगड़ा तो क्या इससे मनुष्य प्रभावित न होगा। बिना पानी, बिना शुद्ध हवा, बिना भोजन के क्या मनुष्य जीने की कल्पना करेगा। नारायण.....नारायण....।

(दृश्य पांच)

लड़का : आज की ताजा खबर सिक्किम में धरती हिली सैंकड़ों मरे, उत्तरी क्षेत्र में बाढ़ से करोड़ों में जान माल का नुकसान पश्चिमी क्षेत्र में सूखा, दिल्ली के अस्पताल में सुपर बग वाइरस की पुष्टि मध्य क्षेत्र में अज्ञात बीमारी से सैकड़ों मरे। वायु प्रदूषण से श्वसन रोग जहरीला पानी पीने से मौत, सतपुड़ा के जंगल में शेर बना आदमखोर.....।

आज की ताजा खबर।

नारदजी : नारायण.....नारायण घोर कलयुग है, प्रभु घोर कलयुग.....मनुष्य ने अपने ही हाथों अपनी बरबादी कर दी।

(तीन छात्र प्रवेश करते हैं)

छात्र : शिक्षा से हमने जाना, हमने माना प्राकृति का क्या है उपकार हमने पाया आने वाली पीढ़ियां पाप प्रकृति का यह उपहार बची रही पृथ्वी तो बचा रहेगा यह संसार।

तीनों : हाँ, हाँ, बचा रहेगा यह संसार।
हम हैं सजग पहरेदार।

छात्र : वर्षा के जल को रोकेंगे हम, नदी नालों को बांधेगे हम, अवशिष्ट विसर्जन रोकेंगे हम, नदियों को पूजेंगे। तब अपार अपार जलराशी होगी, न कोई प्यासा होगा।

तीनों : हां, हां, न कोई प्यासा होगा।
हम हैं सजग पहरेदार....।

छात्र 3 : वृक्ष नहीं कटने देंगे हम, नये वृक्ष लगायेंगे हम, शिकार को रोकेंगे हम, जीवों को बचायेंगे हम, जैव विविधता का महत्व दुनिया को समझायेंगे हम।

तीनों : हां, हां, दुनिया को समझायेंगे।
हम है सजग पहरेदार।

नारदजी : नारायण.....नारायण.....ये नन्हें पहरेदार की करूणा भरी आवाज सुनकर मन प्रसन्न हुआ, अन्यथा मनुष्य ने पृथ्वी के विनाश की पूरी तैयारी कर ली थी। मैं तो स्वर्ग लोक कर ओर प्रस्थान करता हूं, किंतु बताइये कब बनेंगे सजग पहरेदार।

मंजुला पाटीदार
सरस्वती शिशु मन्दिर
बुरहानपुर, म.प्र

मार्गदर्शन

पात्र – परिचय

भगवान महावीर	–	स्वयं भगवान महावीर
मनु	–	संसार का प्रथम व्यक्ति
आम व्यक्ति पहला	–	निर्दोष व्यक्ति
आक्रमणकारी 1	–	हिंसक व्यक्ति
आक्रमणकारी 2	–	हिंसक व्यक्ति
आक्रमणकारी 3	–	हिंसक व्यक्ति
हत्यारा	–	लूटमार करने वाला

(पहला दृश्य)

(मनु वन में एकान्त ध्यान योग में बैठे हैं और भगवान महावीर का प्रवेश)

मनु : ओ.....उ....उ....म। ओ .....उ.....उ....म।

भगवान महावीर : हे मनु! उठो, जागो। अपना ध्यान तोड़ो.....। देखो कौन आया तुम से मिलने ?

मनु : (मनु आँखें खोलते हैं और भगवान महावीर की ओर बढ़ते हैं। प्रभु, प्रणाम, आप यहाँ। अहो भाग्य मेरे प्रभु स्वयं मेरे पास आये।

भगवान महावीर : हे मनु! मैं आज बड़ा दुःखी और उदास हूं और इसी दुःख और उदासी के कारण यहां आया हूं।

मनु : प्रभु....आप दुखी और उदास हैं, क्यों ? मेरे इस परिवार में, मेरे संसार में तो सभी आनन्दित और खुश हैं और आप ही एक हैं जो कहते हैं कि मैं दुखी और उदासी के कारण यहां आया हूं।

भगवान महावीर : हे मनु! तुमने अपने परिवार को दुबारा से सही तरह से देखा नहीं। तुम यहां एकान्त में बैठे हो कभी परिवार को देखो.....मनु.....कभी परिवार को देखो।

मनु : प्रभु मेरा परिवार मेरे जैसा ही है। उस में कोई कमी नहीं है, और मेरे परिवार से बना संसार सबसे अच्छा है।

भगवान महावीर : हे मनु! तुम गलत फहमी में जी रहे हो।

मनु : प्रभु! मैंने कोई कमी नहीं रखी इस परिवार में। मैंने सारे संस्कार दिये इस परिवार को, मुझे कोई कमी नजर नहीं आती है।

भगवान महावीर : हे मनु! मैं जानता हूं। परन्तु तुझे भगवान ने धरती पर इसलिये भेजा था कि तेरे परिवार से बनने वाला यह परिवार खूबसूरत और अहिंसक होगा, (जोर से) ऐसा नहीं है मनु.....ऐसा नहीं है।

मनु : प्रभु! मेरा परिवार एकदम निर्मल जल की तरह है। उसकी शुद्धता पर मुझे कोई सन्देह नहीं। क्योंकि मेरे परिवार में मेरे ही गुण हैं और मुझ में कोई अवगुण नहीं, इस बात का मुझे शत–प्रतिशत विश्वास है।,

भगवान महावीर : हे मनु! तुम अभी घोर अन्धेरे में जी रहे हो। हमें भी विश्वास है कि तुम में कोई अवगुण नहीं है पर अपने परिवार

की जानकारी लो, देखो इस संसार को, देखो अपने परिवार की दशा....देखो इस संसार की दशा.. .....

क्या मनु हैं और उसका परिवार है।

मनु : मुझे पूर्ण विश्वास है कि सब सही है। मैं यहा ध्यान में लगा हूं और यहां ही रहना चाहता हूं।

भगवान महावीर : हे मनु! एक बार अपने परिवार के सदस्यों से मिलकर आओ और देखो वो कैसे हैं। क्या वे तुम्हारे

परिवार के सदस्य हैं ?

मनु :ठीक है मैं अपने परिवार से मिलता हूं। (मनु जाता है।)

(दूसरा दृश्य)

(मनु नगर भर में घूमता है। चारों और हिंसा, लूटमार, हत्या, आक्रमण आदि को देख घबरा जाता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की हत्या करने के इरादे से उसे पकड़ता है)

मनु : नहीं.....नहीं..... (हत्या करने वाले से)। मत मारों इसे, तुम्हारा ही भाई है, रुको.....रुको।

आम व्यक्ति : बचाओ.....मुझे बचाओ.....।

हत्यारा : अरे यह तो मेरा दुश्मन है, तो फिर भाई कैसे हो गया, इसे मैं जिन्दा नहीं छोड़ सकता। ये ले, अब बोलना मेरे खिलाफ। (हत्यारा हत्या करता है)

मनु : नहीं पुत्र .....नहीं, ये क्या कर डाला तूने, (घायल से) पुत्र.....पुत्र यह क्या हो गया। (चारों तरफ आक्रमण व लूटमार करने वालों से) अरे पुत्रों ..... मत करो ये हिंसा..... तुम सभी भाई–भाई हो।

(एक व्यक्ति के पीछे तलवार लेकर बहुत सारे लोग भागते हुए मनु की तरफ आते हैं)

मनु : नहीं.....नहीं.....रुको पुत्रों रुको ..... क्या हुआ है, यह तो बताओ.....।

आक्रमणकारी 1 : (मनु से) छोड़ो उसे यह हमारी जाति का नहीं है, इसे हम मारेंगे। मारो.....इसको जिन्दा मत छोड़ना.....।

मनु : नहीं.....नहीं .....ये जाति क्या है, पुत्रों.....तुम लोग एक ही परिवार के सदस्य हो और यह तो तुम्हारा ही भाई है.....भाई।

आक्रमणकारी : अरे यह हमारा भाई कैसा ? यह तो हमारी जाति का ही नहीं है। तुम (मनु से) हट जाओ हमारे बीच में से नहीं तो....।

मनु : अरे तुम.....मुझे.....(आक्रमणकारी उस व्यक्ति के पीछे भागते हैं।) अरे.....रुको..... रोको।

आक्रमणकारी : (भागते हुए) यह क्या हो गया मेरे संसार को, मैंने अपने परिवार को ये गुण तो नहीं दिये, इन लोगों

ने यह क्या दशा बना रखी है। इन्होंने ये अवगुण कहां से सीखे। इनको शुद्ध बुद्धि दो प्रभु..... ... इन को शुद्ध बुद्धि दो।

(हताश मनु वहां से लौट कर वापस अपने ध्यान स्थल की ओर जाते हैं)

(तीसरा दृश्य)

(मनु नगर भर में घूमकर हताश होकर वापस अपने ध्यान स्थल पर आते हैं। वहां उनका भगवान महावीर इन्तजार कर रहे हैं।)

मनु : प्रभु.....प्रभु.....रक्षा करो, रक्षा करो। मेरे परिवार को बचाओ प्रभु। (मनु भगवान महावीर के चरणों गिरता है)

भगवान महावीर : हे मनु। उठो, (मनु को खड़ा करते हुए) देख लिया अपना परिवार, मिल आये परिवार के सदस्यों से।

मनु : (मनु उदास मन से) प्रभु! ये क्या, ये दुर्गुण कहां से आये, क्या हो गया इन लोगों को।

भगवान महावीर : हे मनु! तुमने इनका मार्गदर्शन नहीं किया। जब इनको हम समय–समय पर सही रास्ता नहीं दिखायेंगे तो ये अपने रास्ते से भटक जायेंगे और भटके हुए इन्सान ऐसे ही होते हैं।

मनु : प्रभु ये लोग तो हिंसा कर रहे हैं, यहां भाई–भाई का दुश्मन हो गया, एक परिवार के लोग हैं फिर भी एक–दूसरे पर आक्रमण कर रहे हैं। आपस में झगड़ रहे हैं। यह क्या हो गया..... प्रभु ये क्या हो गया.....प्रभु ..... (रोते हुए)

भगवान महावीर : हे मनु! ये अवगुण तुम में नहीं थे फिर भी इस संसार रूपी तेरे परिवार में आ गये, तुम्हें ही इन अवगुणों से अपने परिवार को मुक्त करना होगा, जाओ और सब को अहिंसा का रास्ता दिखाओ।

मनु : प्रभु, इनको अहिंसा का रास्ता कैसे दिखाऊं।

भगवान महावीर : हे मनु! तुम एक साधु का रूप धारण करके इस संसार रूपी परिवार में जाओ और शिवरों, धर्म सभाओं के माध्यम से उनको अहिंसा का पाठ पढ़ाओ, सद्‌गुणों के बीज लगाओ, भक्ति का मार्ग बताओ, धैर्य करना सिखाओ, सुसंस्कारों से सिंचित करो, अज्ञान दूर करो, आचरणवान बनाओ।

मनु : प्रभु, आपने मेरी आंखें खोल दी हैं। मैं आज ही अपने परिवार के बीच जाता हूं और मैं उनका सही मार्गदर्शन करूंगा।

भगवान महावीर : हे मनु! तुम्हारा कल्याण हो। (दोनों चले जाते हैं)

(चतुर्थ दृश्य)

मनु : (मनु साधु के रूप में एक शिविर में सैंकड़ों लोगों को ज्ञान बांट रहे हैं।)
अहिंसा परमो धर्मः, गुस्सा सदा मानव का नाश करता है, इसलिए हमें गुस्सा नहीं करना चाहिए।
शीतल मन हमारा होगा तो ही हमारे अन्दर सद्‌गुण आ पायेंगे। क्रोध करना ही हमारा पतन है। अगर क्रोध किया तो वह नर हिंसक बन जाता है, हमेशा क्रोध को मन से त्याग करना चाहिए। (मनु का प्रवचन चल रहा था तभी भगवान महावीर दूर से देखते हैं)

भगवान महावीर : अहिंसा परमो धर्मः .....(भगवान महावीर मुस्करा कर चले जाते हैं)

(चतुर्थ दृश्य समाप्त होता है, इसके साथ पर्दा गिरता है और नाटक समाप्त हो जाता है। दर्शकों की ओर से तालियों की गड़गड़ाहट भरी आवाज सुनाई देती है।)

रामेश्वर सिंह राजपुरोहित 'सेवड़'
आदर्श विद्या मंदिर हायर सेकेंडरी स्कूल, बाड़मेर, राजस्थान

आओ हाथ बढ़ाए

(पहला दृश्य)

(माहिन, अरसलान, स्कूल का पहला दिन)

माहिन : भाई जल्दी चलो स्कूल, नहीं तो मैडम लेट होने की सजा देंगी।
अरसलान : अरे! रुको, बैग में कॉपी तो रख लूँ।
अम्मी : अरे! जल्दी करो दोनों।
दोनों : अल्लाह हाफिज अम्मी।
अम्मी : अल्लाह हाफिज बेटा।
अरसलान : (रास्ते में) माहिन, चलो देखें वहां जाकर जादू का खेल।
माहिन : नहीं, भाई देर हो रही है।
माहिन : भाई देखो। यहां कितनी गंदगी है। कितना कचरा पड़ा है, क्या यहां कोई सफाई नहीं करता ?
अरसलान : कोई सफाई क्यों करे ? यह तो बाहर है। घर में तो नहीं जो वो साफ करें।
माहिन : नहीं भाई, सफाई घर व बाहर दोनों की जरूरी है।
(दोनों स्कूल पहुंचकर अपनी–अपनी क्लास में चले जाते हैं। छुट्टी के बाद घर जाते समय दोनों रास्ते में)
माहिन : भाई क्या हुआ ?
अरसलान : अरे ये गाड़ियों से निकलने वाला धुंआ मुझे बेचैन कर रहा है।
माहिन : अरे संभलो भाई।
(अरसलान कचरे में गिर जाता है)
अरसलान : माहिन, उठाओ मुझे। *(गुस्से में चिल्लाते हुए)*
माहिन : भाई मेरा हाथ पकड़ो, हां, और जोर से कोशिश करो हां, थोड़ा और .....बस।
अरसलान : (चिढ़ते हुए) अरे ! यहां रहने वाले भी बेकार हैं। घर के बाहर कचरा फेंक देते हैं, बीच रास्ते में। सोचते भी नहीं हैं कि इससे राहगीरों को कितनी परेशानी होगी या आयेगी।
माहिन : (हैरानी से) अरे भाई! यह आप कह रहे हैं ?
अरसलान : (नाराज होते हुए) चलो घर जल्दी चलें।
अम्मी : (अरसलान की ड्रेस पर धब्बा लगा देखकर बोली) अरे! यह क्या हो गया ? (दोनों सारी बातें बताते हुए घर में चले जाते हैं।)

दूसरा दृश्य

(माहिन और अरसलान स्कूल के लिए घर से निकल पड़ते हैं। रास्ते में कचरा जलाया जाता है जिससे धुआं उड़ता है। दोनों खांसने लगते हैं।)

अरसलान : यह क्या ?
माहिन : भाई धुआं (खांसते हुए) !
अरसलान : (आंखें मलते हुए।) अरे हां, इन्हें समझ नहीं आता है। यहीं पर कचरा जला दिया जबकि यह आम रास्ता है।
माहिम : हां भाई।
(स्कूल में अपनी–अपनी क्लास में पहुंचकर)

दोस्त (अरसलान से): अरे अरसलान क्या हुआ ? क्यों आंखें मल रहे हो ?

अरसलान : अरे यार! लोगों को कुछ समझ में नहीं आता। रास्ते में ही कचरा फेंक देते हैं और वहीं पर उसे जला भी देते हैं। कितना प्रदूषण हो रहा है। इसका कुछ न कुछ करना चाहिए।

दोस्त : हां–हां सही है। हम भी परेशान हैं। हम भी तुम्हारे साथ हैं।

(छुट्टी के बाद सभी बच्चे एक साथ। चलो हम सभी चलते हैं। आज कचरा हम ही हटाते हैं। हां–हां चलो।)

अरसलान : ये जो कचरा है यहीं पर आपके फेंकने से देखो कितनी परेशानी होती है। धुएं से आंखों पर असर होता है। गंदगी में मच्छर बढ़ते हैं जो हमारे घरों में आते हैं। साथ ही पूरा समय बदबू आती है। इसी गंदगी में से होकर आप सभी अपने अपने घरों में जाते हैं। आप लोगों को इसका कोई एहसास नहीं ? आपने सोचा है आपके परिवार में हमेशा कोई न कोई बीमार क्यों रहता है। हमें

हमारे घर के ही नहीं बल्कि हमारे आस–पास के वातावरण को भी साफ रखना चाहिए। इससे

हमारा पर्यावरण दूषित होता है। हवा भी शुद्ध नहीं रहती, इसलिए हम आपके लिए यह कचरा

पेटी रख रहे हैं। आज से आप सभी इसमें कचरा डालें।

माहिन : कम से कम आप को अपने बच्चों का ख्याल रखना चाहिए और आप सभी वादा करें कि आज से गन्दगी नहीं करेंगे।

कॉलोनीवाले : हाँ...हाँ...हम सफाई का पूरा ध्यान रखेंगे।

चाचा : बेटा, आप बच्चों ने हमें सही रास्ता दिखा दिया है। अब हम कभी भी नहीं भटकेंगे और आज से ही हम हर तरह के जो भी पर्यावरण को दूषित करने वाले कारण है उन्हें दूर करने की कोशिश करेंगे।

बच्चे : हाँ...हाँ तब ही हमारा देश खुशहाल देश रहेगा। हम स्वस्थ तो हमारा देश स्वस्थ।

शाहेदा खान
अल–हिरा पब्लिक स्कूल
इंदौर, मध्य प्रदेश

मौत का बुलावा

पात्र परिचय

कोमलचन्द	:	जिसका बेटा कमल मर गया है (एकांकी का नायक)
सुनील	:	कमल का प्रिय मित्र, कुरीतियों का विरोधी
प्रेमचन्द	:	सुनील के पिता
खूबचन्द	:	कोमलचन्द के बड़े भाई
विमल	:	कमल व सुनील का मित्र

स्थान : कोमलचन्द का घर **समय** सांयकाल

(कोमलचन्द के इकलौते पुत्र कमल का स्वर्गवास केन्सर के कारण छब्बीस वर्ष की अल्पायु में आज प्रातः हो गया है। जिसकी शादी हुए केवल एक वर्ष ही हुआ है। कोमलचन्द अपने आंगन पर अपने भाई खूबचन्द के साथ बैठा है। कोमलचन्द के घर सुनील, सुनील के पिता श्री प्रेमचन्द एवं उसका मित्र विमल बैठने के लिए आते हैं। तब कोमलचन्द रुदन करता है।)

कोमलचन्द : (रुदन करते हुए हाथ माथे पर रखकर) हे बेटे, तूने यह क्या किया ? मुझे छोड़ कर क्यों मर गया ? अब मैं क्या करूँ ?

प्रेमचन्द : (कोमलचन्द के हाथ को छूते हुए) भाई कोमलचन्द! तुम चुप हो जाओ। भगवान ने जो चाहा वह हुआ।

कोमलचन्द : (रुदन करते हुए) हे भगवान! आपने मेरे साथ क्यों अन्याय किया ? यदि आपको उठाना ही था तो मुझे उठाते, मेरे बेटे को क्यों उठाया ?

खूबचन्द : भाई कोमलचन्द। भवागान अन्याय क्या करे ? उसकी आयु पूरी जो गयी थी, तो भगवान क्या करे

मृत्यु शाश्वत सत्य है।

कोमलचन्द : अरे भाई! आप ठीक कहते हो, पर मैं क्या करूँ मुझे कुछ समझ नहीं आता, मेरा एक सहारा वही था।

सुशील : अंकल जी! आप ऐसे ही रोते रहोगे, चिन्ता करते रहोगे तो कुछ होना नहीं है। अब आप धैर्य धारण करें, मैं आपकी जो सेवा बनेगी, वह हमेशा ही करूँगा।

कोमलचन्द : (चुप होकर).....बेटे सुनील! तुम सेवा करोगे वह तो ठीक, पर कमल ने यह क्या किया ?

सुनील : अंकलजी! कमल को मैंने बहुत समझाया था कि तू इतनी सिगरेट मत पीया कर, पर वह मानता ही नहीं। उसी का यह परिणाम है।

प्रेमचन्द : अच्छा! वह सिगरेट पीता था, इसीलिए कैन्सर हो गया।

सुनील : हाँ पिताजी! वह सिगरेट तो पीता ही था, साथ ही गुटखा, जर्दा, पान–पराग, विमल, तम्बाकू, तथा यदा–कदा शराब का सेवन करता था, उसी का यह प्रतिफल है।

प्रेमचन्द : क्या तू भी सिगरेट पीता है ?

सुनील : पिताजी! मैं आपसे झूठ नहीं बोल सकता। मैं भी कभी–कभी अवश्य कमल के साथ सिगरेट पीता था, पर शराब, गुटखा आदि नहीं।

कोमलचन्द : क्या तूने उसको शराब पीने के लिए मना नहीं किया ?

सुनील : एक बार कमल मुझे बिना बताये गाड़ी पर बैठा कर शराब के अड्डे पर ले गया था। तब मुझको एकदम झटका लगा। मैंने कमल से कहा कि तू शराब पीता है तो तेरी दोस्ती आज से खत्म, या तू आज से शराब पीना छोड़ दे। तब उसने शराब पीना छोड़ दिया, पर सिगरेट नहीं।

प्रेमचन्द : (प्रेम से समझाते हुए) देखो, तुम्हारे मित्र कमल ने सिगरेट पी तो उसकी ऐसी दशा हुई। तुम आज मेरे सामने प्रतिज्ञा लो कि मैं सिगरेट नहीं पीऊँगा।

कोमलचन्द : सुनील! आपके पिताजी ठीक ही कर रहे हैं, तुम सिगरेट छोड़ दो।

सुनील : पिताजी, मैं आज से कभी भी बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, पान–पराग, जर्दा आदि का सेवन नहीं करूँगा।

विमल : सुनील! तुमने यह प्रतिज्ञा ली, मैं भी यह प्रतिज्ञा लेता हूँ कि मैं भी इनका सेवन नहीं करूँगा।

कोमलचन्द : बेटे! तुम दोनों ने आज अपने मित्र को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की है।

प्रेमचन्द : भाई आज के नवयुवक सिगरेट, शराब पीना, गुटखा खाना, गाड़ी पर घूमना, सूटेड–बूटेड में रहना आदि कार्य कर अपने को आधुनिक समझते हैं, पर यह आधुनिकता कितनी मँहगी पड़ी, देखा ? कमल 26 वर्ष की अल्पायु में ही चल बसा। एक सिगरेट पीने से हमारी पाँच मिनट की आयु कम होती है। यह तो हमारी मौत का ही बुलावा है।

खूबचन्द : हम अपने बच्चों पर ध्यान नहीं रखते, हम कमाते हैं और वे पैसे उड़ाते हैं। उनको विवेक नहीं है कि हम पैसा भी खराब कर रहे हैं और शरीर भी। आज सब आधुनिकता के चक्कर में अपनी सत्विक वृत्ति को छोड़ते जा रहे हैं। जिसका दुष्परिणाम हम उठा रहे हैं।

प्रेमचन्द : कोमलचन्द! अब हम चलते हैं, हमारे लायक काम हो तो कहना। सुनील तो तुम्हारी सेवा के लिए हर समय तैयार है।

(प्रेमचन्द, सुनील वहाँ से चले जाते हैं)

डॉ. महावीरप्रसाद जैन
रा. फतह उच्च मा. विद्यालय
राजस्थान

लाचार बुढ़ापा

वृद्धा : बूढ़ी काकी
विमला : छोटी बहू
सुधा : बड़ी बहू
रमेश : छोटा बेटा
मुन्ना : पोता
अन्य वृद्ध–वृद्धा : पति–पत्नी
तीन अन्य वृद्ध रिपोर्टर

(पहला दृश्य)

(एक वृद्ध मंच पर आता है और गाता है।)

आवहू रोवहू हे वृद्ध भाई
हाँ!हाँ! वृद्धों की दशा न देखी जाई।
न देखी जाई, न देखी जाई
हाँ!हाँ! वृद्धों की दशा देखी न जाई।
(वृद्ध गाते हुए चला गया, मंच पर वृद्धाश्रम का दृश्य है। दो वृद्ध व एक वृद्ध महिला खड़ी है)

सुनो, सुनो हमारी कहानी
लाचार हम वृद्धों की जुबानी।

(दूसरा दृश्य)

बूढ़ी काकी : आ! हा! कितनी अच्छी महक आ रही है ? कचौड़ी की ! न, न, सामोसे की!
ओ हो! मुन्ने का जन्मदिन है, आज तो घर में जश्न होगा। मुझे कम से कम आज तो मिल ही जाएगा अच्छा भोजन।

(बुढ़िया स्वयं से बोलती हुई पीछे हटती है तथा उसकी दो बहुओं का आगमन होता है।)

विमला (छोटी बहू) : अरे! सुधा जीजी, अम्मा सुबह से नहीं दिखाई दे रहीं। कहां रह गईं ? सारा काम बिखरा पड़ा है।

सुधा (बड़ी बहू) : काम ही क्या है उनका ? अंदर जाकर देखो, खटिया पर होंगी।
जल्दी जाकर देखो, मेहमान आते ही होंगे।

विमला : अच्छा जीजी ! अभी आई।

(विमला का काकी के कमरे में प्रवेश)

विमला : लो, कर लो बात। जो सोचा था, वही हुआ। सूरज सिर चढ़ आया अम्मा! तुम अभी तक सुस्ता रही हो ? सपनों में न खोई रहो। आकर, कुछ काम करवा दो।

काकी : (सहमते हुए) हाँ ! हाँ ! छोटी बहू मैं आ ही रही थी।

(तीसरा दृश्य)

(घर में जश्न का माहौल है, सभी आनंद में हैं व मुन्ने को उपहार दे रहे हैं। गीत–संगीत, खानपान आदि की व्यवस्था है पार्टी के बाद का दृश्य)

सुधा : वाह! मजा आ गया। आज का दिन तो खूब रहा।

मुन्ना : खूब मजा आया। खूब मजा आया। पापा, जल्दी मेरे साथ आओ न। उपहार खोलूँगा, देखूँ तो क्या मिला है ?

काकी का बड़ा बेटा(मुन्ना का पिता) : हाँ! हाँ! बिल्कुल बेटा। बस थोड़ा सा काम निपटा कर आता हूँ।

विमला : अरे काम से याद आया! अम्मा कहां हैं ?

सुधा : छोड़ो न जीजी, यहीं कहीं होंगी सपनों में मग्न।

(इतने में काकी का दूसरा बेटा रमेश काकी को लिए आता है।)

रमेश : यह रहीं अम्मा। आज तो इन्होंने नाक ही कटवा दी। क्या बताऊँ, पंडाल में पड़े जूठे पत्तल चाट रही थी।

विमला : ओ! हो! बहुत हुआ, इन्हें सुबह ही वृद्ध आश्रम छोड़ आओ।

(सभी एक स्वर में बोले– हाँ.....हाँ! ठीक कहा, खूब कहा।)

गीत : वृद्धा होकर हो गई लाचार,
पति गए मेरे स्वर्ग सिधार
बच्चों ने दिया दुत्कार,
मुझे बचाने का करो उपचार।

(चौथा दृश्य)

(एक वृद्ध पति–पत्नी का संवाद। दृश्य से पूर्व वृद्ध गाते हुए।)

पति–पत्नी : देखो, समझो अब यह भी कहानी लाचार इन वृद्धों की जुवानी।

वृद्ध पति : भाग्यवान! तुम अब तो खुश हो न! हमारा छोटा भी अमेरिका में पांव जमा चुका है।
पत्नी : कह तो आप ठीक रहे हो पर इस उम्र में हमें अकेले रहने का बोझ भी तो सहना पड़ेगा।
पति : अकेली कहाँ हो ? मैं हूँ न तुम्हारे साथ!
पत्नी : आप तो हो पर क्या आप पिछले साल घटी एन.आर.आई. राजू के मां–बाप की हत्या की घटना को भूल गये ? सोच–सोच कर तो कलेजा बैठा जाता है।

(इतना कहते ही दोनों पर कुछ अज्ञात हमलावरों द्वारा हमला होता है व दोनों पति–पत्नी मारे जाते हैं।

(मंच पर रिपोर्टर का आना)

रिपोर्टर : ब्रेकिंग न्यूज गोधूलि अपार्टमेन्ट में रहने वाले वृद्ध दम्पत्ति की दिनदहाड़े हत्या कर दी गई। पुलिस ने लूटपाट व हत्या का मामला दर्ज किया है। सवाल उठता है – अकेले रह रहे वृद्धों की सुरक्षा की जिम्मेदारी किसकी है ? इनके अपनों की या प्रसाशन की ? घटना स्थल से मैं सुनीता अवस्थी, दिल्ली आज तक।

(लाठी लेकर वृद्ध का पुनः मंच पर आना और गीत गाना)

हाय!ये कैसी अनहोनी,
वृद्धों का जीवन दुखभरी कहानी।

(पांचवा दृश्य)

(तीन वृद्धों का बाग में आपसी संवाद)

पहला वृद्ध : अमा! आज आने में इतनी देर क्यों कर दी ?
दूसरा वृद्ध : पूछ मत यार। मेरी तो रातों की नींद ही उड़ गयी है।
तीसरा वृद्ध : क्यों ? क्या हुआ ?
दूसरा वृद्ध : क्या बताऊँ शर्मा जी। दो दिन बाद मेरी रिटायरमेंट है। लग रहा है मानो अपाहिज होने जा रहा हूँ। सरकारी नौकरी होती तो तुम्हारी तरह पेंशन का सहारा मिलता।
शर्मा जी (पहला वृद्ध) : पेंशन का सहारा। अ ह! सब कहने की बात है। जमापूंजी तो बच्चों के भविष्य को संवारने में खर्च होती गई। बची पेंशन, तो उस पर भी बच्चे अपना अधिकार समझते हैं।
तीसरा वृद्ध : सही बात है। आज भी एक एक पैसे के लिए बच्चों के आगे हाथ फैलाना पड़ता है।

(गीत)

चाहकर भी व्यूह रचना हम तोड़ नहीं पाते,
मर्यादाओं के कारण इसे ठुकरा नहीं पाते,

समय बीत जाता है कुछ ऐसे ,
मुट्ठी से रेत फिसलती हो जैसे,
लेकिन अंतिम संध्या तक
हम कुछ भी समझ नहीं पाते।

(छठा दृश्य)

(इस गीत के बाद सभी वृद्ध मंच पर एक साथ आते हैं)

बूढ़ी काकी : मैं पूछना चाहती हूँ कि अपना सारा जीवन अपने परिवार पर समर्पित कर देने वाले हम बुजुर्गों की दशा का जिम्मेदार कौन है ?

दूसरा वृद्ध : क्या हमारा समाज संवेदना रहित हो गया ?

तीसरा वृद्ध : क्या हमारे प्रति किसी का कोई कर्तव्य नहीं ? अपनी पहचान खो चुके हम बुजुर्गों को कैसे मिल पाएगा सम्मान ? कौन बनेगा हमारा भाग्य विधाता ?

(सातवाँ दृश्य)

मुन्ना (पोता) : मैं, आप, हम सब हैं इनके भाग्य विधाता। अपने बुजुर्गों के रक्षक। इनके सहारे! प्रेम और अपनेपन से हम संवारेंगे इनका जीवन। तो आओ मिलकर एक साथ कहें (आत्म निर्भर का बैनर लिए हुए)

आओ मिलकर करे जतन
हमारे बुजुर्ग रहे आत्मनिर्भर।

(सम्मान का बैनर लिए हुए)
सम्मान प्रेम की धारा से
मिलकर करें हम इनका सिंचन।

(पहचान का बैनर लिए)
पहचान न इनकी खोने दें हम
वृद्धा अस्तित्व के रक्षक हम।

(सुरक्षा का बैनर लिए)
जगाए मन में यह विश्वास
सुरक्षित रहे बुजुर्ग समाज।

(पर्दा गिरता है)

सरोजिनी नेगी
केन्टरबरी पब्लिक स्कूल,
बी–ब्लाक यमुना विहार, दिल्ली

कसम

पात्र परिचय

गोपाल, सागर, अमर, मोहन
गोपाल की माँ, गोपाल के पिता

कॉलेज की जिंदगी को मौज–मस्ती की जिंदगी कहा जाता है। न कोई रोकने–टोकने वाला और न कोई डाँटने वाला, लेकिन ऐसे में चार दोस्त–अमर, गोपाल, सागर व मोहन तेजी से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहे थे। वह चारों दोस्त पढ़ाई में काफी तेज थे। पढ़ाई के साथ–साथ चारों अन्य कार्यों में भी रूचि रखते थे। वे ज्यादातर समय पढ़ाई में बिताते थे। उनकी अपनी ही एक दुनिया थी, सबसे अलग, सबसे अनोखी।

(पहला दृश्य)

(गोपाल, सागर, मोहन व अमर तीनों एक पार्टी में शामिल होने के लिए आपस में बतिया रहे हैं)

गोपाल : यार पता है, मेरे चाचा की कंपनी में कल बहुत बड़ी पार्टी है, उसमें काफी बड़े–बड़े कलाकार आने वाले हैं। तुम भी चलो, काफी मजा आयेगा।

सागर : नहीं यार, हम नहीं आ सकते। ऐसे अच्छा थोड़े लगता है कि किसी और की पार्टी में बिनबुलाए जाएं।

मोहन : अरे! क्या बच्चों वाली बातें कर रहा है, इसके चाचा की कंपनी में ही तो पार्टी है। चलो न सारे चलते हैं।

अमर : हाँ यार, चलो चलते हैं।

सागर : ठीक है! अगर तुम्हें जाना है तो जाओ, मैं तो नहीं जा रहा।

(दूसरा दृश्य)

गोपाल, मोहन और अमर तीनों पार्टी में चले जाते हैं। पार्टी सचमुच काफी बड़ी थी। पार्टी में ज्यादा प्रबंध नशेवाली चीजों का किया गया था।

गोपाल : यार, सुना है शराब पीकर आदमी घूमने लगता है। चलो पीकर देखते हैं।

मोहन : शराब! नहीं यार नहीं, मैं नहीं पिऊंगा। तू भी मत पी। यह अच्छी चीज नहीं होती।

अमर : मेरे पिताजी का फोन आया है, मैं तो जा रहा हूँ। कल मिलते हैं।

(इतने में अमर वहां से चला जाता है।)

गोपाल : देख, तुझे पीनी है पी, नहीं पीनी ना पी, पर मुझे तो एक बार इसका स्वाद चखना है।

मोहन : देख यार, एक दोस्त होने के नाते मेरा फर्ज बनता है। कि मैं तुझे गलत काम करने से रोकूँ।

(और गोपाल शराब पीने लगता है। नशे में पूरा धुत हो जाता है। नशे में गोपाल एक घूट मोहन को भी पिला देता है। नया–सा स्वाद होने के कारण शराब अच्छी सी लगी और वह भी शराब पीना शुरू कर देता है। नशे में होने के कारण वह दोनों वहीं पर गिर जाते है। उनके एक जानकार की नजर उन पर पड़ती है और वह उन्हें घर छोड़ देता है।

(तीसरा दृश्य)

(अगले दिन चारों दोस्त कॉलेज में मिलते हैं)

सागर : कैसी रही तुम्हारी पार्टी ?
अमर : यार! क्या बताऊँ, मेरे पिता जी का फोन आ गया था, मैं तो जल्दी आ गया।
गोपाल : मुझे तो बहुत मजा आया।
मोहन : मुझे भी।
गोपाल : पता है, हमने कल शराब पी। बहुत मजेदार थी, मजा आ गया।

सागर व अमर : क्या! तुमने शराब पी। बहुत मजेदार थी, मजा आ गया।
गोपाल : दिमाग तो ठीक ही था यार। हम हवा में उड़ रहे थे। हैं न मोहन ?
मोहन : हाँ, सच में।
सागर : शराब ज़हर होती है। यह तुम्हारी जिंदगी को तबाह कर देगी। मेरी बात मानो, कल जो हुआ सो हुआ, अब से तुम शराब को हाथ तक मत लगाना।
गोपाल : शराब पीने से पहले मोहन भी ऐसी ही बातें कर रहा था लेकिन शराब पीने के बाद इसकी सोच भी बदल गई, तुम भी पीना, तुम भी शराब के गुणगान करने लगोगे।
सागर : मेरे पास तुम्हारी इस बेवकूफी के लिए वक्त नहीं है। अगर तुमने शराब न छोड़ी तो हमारी दोस्ती खत्म।

(सागर वहां से चला जाता है। अमर भी गोपाल और मोहन को समझाने की कोशिश करता है लेकिन वह भी हारकर वहां से चला जाता है।)

गोपाल : बड़े आए समझाने वाले.....ह.....। चल हम चलते हैं, थोड़ी–सी शराब पीकर आते हैं। हां, यार चल। बड़ा मन कर रहा है।

(चौथा दृश्य)

(वे दोनों पूरी तरह से नशे में खो चुके थे। उनका रोज का काम हो चुका था– शराब पीना। सागर अपने सारे दोस्तों से अलग हो चुका था। वह अपने लक्ष्य को पाने के लिए और कड़ी मेहनत करने लगा। दूसरी ओर अमर सदैव गोपाल और मोहन को समझाता रहता। एक दिन मोहन और गोपाल सड़क के किनारे बैठकर शराब पी रहे थे; तभी मोहन अमर को फोन लगाता है।)

मोहन : यार, हमारा यहां एक्सीडेंट हो गया है। तुम जल्दी आ जाओ।
अमर : मैं बस अभी आता हूं, तुम चिंता मत करो।

(अमर हड़बड़ाहट में वहां पहुंचता है और वहां का दृश्य उसे चौंका देता है। मोहन और गोपाल वहां बैठकर शराब पी रहे होते हैं और जोर–जोर से हंस रहे होते हैं। यह देखकर उसका खून खोल उठता ह'ै वह भी वहां से चला जाता है। इस तरह वहां दोनों शराबी दोस्त अपने बाकी दोस्तों से अलग हो जाते हैं। वह रोज शराब पीते और रोज एक नया ड्रामा किया करते थे और एक दिन गोपाल अपने घरवालों से कहता है।)

गोपाल : अरे, ओ वेद प्रकाश, चल पैसे निकाल।
गोपाल की माँ : बेशर्म, अब ऐसे बात करेगा अपने पिता जी से ।
गोपाल के पिता जी : यह सब हमारे लाड़–प्यार का ही नतीजा है जो आज हमारा बेटा कुसंगत में पड़ गया है।

(गोपाल के माता व पिताजी दोनों रोने लगते हैं। उसकी शराब पीने की आदत और बढ़ती गई। इसका नतीजा यह हुआ कि कम आयु में ही दोनों की हालत बहुत खराब हो गई। उनके दोनों गुर्दे खराब हो गये। अस्पताल में उनकी मुलाकात सागर से होती है। सागर तब तक एक डॉक्टर बन जाता है।)

सागर : तुमने मेरी बात नहीं मानी, अब देख रहे हो अपनी हालत।
मोहन : हमें बचा लो, सागर।
सागर : मैं तुम्हें बचा तो नहीं सकता लेकिन तुम्हारी बची–खुची जिंदगी सुखी जरूर बना सकता हूं। अगर तुम तुम चाहो तो।
गोपाल : हम वही करेंगे जो तुम कहोगे।
सागर : तुम्हें अपने आप से वादा करना होगा कि तुम कभी शराब नहीं पीओगे।
गोपाल व मोहन : हम प्रण लेते हैं कि अब हम कभी शराब नहीं पीएंगे।
(दोनों दोस्त कसम उठाते हैं, सबके चेहरों पर मुस्कान तैर जाती है)

(पर्दा गिरता है)

गौरव कुमार
स्वामी विवेकानन्द पब्लिक स्कूल,
सैक्टर–17, हुड्डा, यमुना नगर,
हरियाणा